Sample

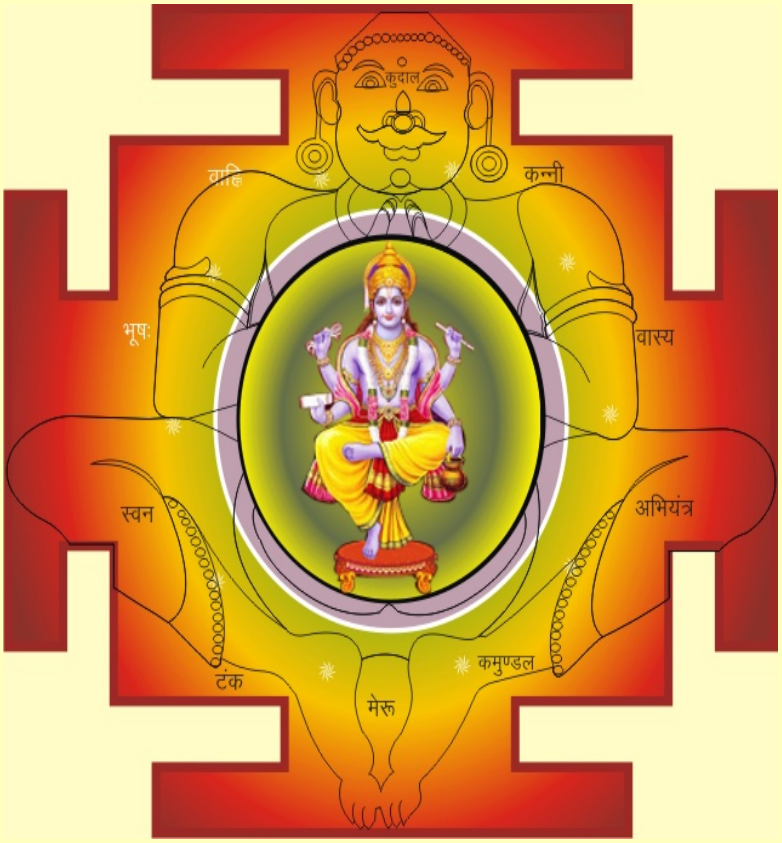

लाल–किताब वास्तु

Abhimanue Singh

Mindsutra Software Technologies

www.mindsutra.com

www.saarcastro.org

mindsutra@gmail.com

Contact - 09818193410, 09350247058

वास्तु देवता की स्तुति

ओम् वास्तोष्पते प्रतिजानीहि अस्मान्,
स्वावेशो अनमीवो भवा नः।
यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व,
शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।

ईशान कोण की स्तुति

ईशानं वृषभारूढं त्रिशूलं व्यालधारिणम्।
शरच्चन्द्रसमाकारं त्रिनेत्रं नील कण्ठकम्।।

पूर्व दिशा की स्तुति

एरावत गजारूढं स्वर्णवर्ण किरीटिनम्।
सहस्त्रनयनं शक्रं वज्रपाणिं विभावयेत्।।

आग्नेय कोण की स्तुति

सप्तार्चिषं च बिभ्राण – मक्षमाला कमण्डलुम्।
ज्वालामालाकुलं देवं शक्ति हस्त छगासनम्।।

दक्षिण दिशा की स्तुति

कृतान्त मषिसारूढं दण्डहस्तं भयानकम्।
कालपाश धरंकृष्णं ध्यायेत्दक्षिण दिक्पतिम्।।

नैऋत्य कोण की स्तुति

रक्तंनेत्र शवारूढं नीलोत्पलदल प्रभम्।
कृपाणपाणिमात्स्त्रौघं पिबन्तं राक्षसेश्वरम्।।

पश्चिम दिशा की स्तुति

नागपाशधरं हृष्टं रक्तौघ द्युति विग्रहम्।
शशांड़क घवलं ध्यायेत् वरूण मकरासनम्।।

वायव्य कोण की स्तुति

आपीपं हरि तच्छायं विलोलध्वजधारिणम्।
प्राणभूतं च भूतानां घृणिहस्तं समीरिणम्।।

उत्तर दिशा की स्तुति

कुबेरं मनुजासीनं सगर्वं गर्वविग्रहम्।
स्वर्णच्छायं गदाहस्तं उत्तराधिपतिं स्मेरत्।।

श्रीगणेशाय नमः

गणानां त्वां गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ।।

नवग्रहस्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महद्द्युतिम ।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽसिदिवाकरम्।। १ ।।
दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम ।
नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुटभूषणम।। 2 ।।
धरणीगर्भसंभूतं विधुत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारंशक्तिहस्तंचमगंलंण्णमाम्यहम्।। ३ ।।
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यंसौम्यगुणोपेतंतंवुधंप्रणमाम्यहम् ।। ४ ।।
देवानां च ऋषीणां च गुरूं काड़वनसंनिभम्।
बुद्धिभूतंत्रिलोकेशंतंनमामिबृहस्पतिम् ।। ५ ।।
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरूम्
सर्वशास्त्रप्रवक्तारंभार्गवंप्रणमाम्यहम् ।। ६ ।।
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्डसुभूतंतंनमामिशनैश्वरम् ।। ७ ।।
अर्धकायं महावीर्य चन्द्रादित्यविमदनम्।
सिंहिकागर्भसंभूतंतंराहुंप्रणमाम्यहम्।। ८ ।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ।। ६ ।।

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत्सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भयविष्यति ।। १ ।।
नरनारीनृपाणां च भवेहुः स्वप्रनाशनम
ऐश्वर्यमतुलंतेषामारोग्यंपुष्टिवर्धनम् ।। 2 ।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्निसमुद्भवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ।। ३ ।।

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

मकान सुख प्राप्ति के लिए भगवान विश्वकर्मा की उपासना

किसी भी व्यक्ति के लिए रोटी, कपड़ा एवं मकान की व्यवस्था करना सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है। इनमें मकान की आकांक्षा सबसे अधिक होती है और सभी इसके लिए अपने स्तर परहमेशा प्रयत्नशील रहते हैं। कुछ लोग इसे पाने में सफल रहते हैं तो कुछ को मकान की प्राप्ति अंत तक नहीं होती या बहुत बिलंब से होती है। कभी–कभी मकान बनते–बनते भी अधूरा रह जाता है। ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों में दैवी कृपा का सहारा बिगड़ते कार्यों को भी बना सकता है।

मकान निर्माण के लिए भगवान विश्वकर्मा की उपासना बहुत सहायक होती है। इनकी उपासनासे आपकी आर्थिक, सामाजिक एवं प्रशासनिक बाधायें दूर होती हैं एवं आपका कार्य सुचारू रूप से होगा। माघ महीने की शुक्ला पंचमी (बसंत पंचमी), माघ शुक्ला त्रयोदशी (विश्वकर्मा जयंती), श्रावण शुक्ला पूर्णिमा एवं हर मास की अमावस्या के दिन विश्वकर्मा की पूजा करने से मकान सुख में बढ़ोतरी होती है।

मकान या भूमि की प्राप्ति के लिए किसी शुभ दिन से विश्वकर्मा की पूजा शुरू करें एवं कार्य पूर्ण होने तक मंत्र जाप करते रहें। सबसे पहले विश्वकर्मा की फोटो को चौकी पर आसन बिछाकर या अपने पूजा स्थल में रखें, फिर निम्न मंत्र से जाप करें –

चिंतये विश्वकर्माणं शिवं वटतरोरधः।
दिव्य सिंहासनासीनं मुनिवृंद निसेवितम्।।
उपास्यमान ममौःस्त्रयमानं महर्षिभिः।
पंचवक्त्रं दशभुज ब्रह्मचारी ब्रतेस्थितम्।।
कुदालं करणी वास्यमि यंत्रं कमण्डलु।
विभ्राणं दक्षिणोर्हस्ते स्वरोह क्रमात्प्रभु।।
मेरूटंकं स्वनं भूषा वह्नि च दृधतं करै।
अवरोह क्रमणैव वमै शुभ विलोचनं।।

इसके तदुपरांत धूप, दीप, अगरबत्ती जलायें एवं गंध, कुमकुम, वस्त्र, माला एवं प्रसाद चढ़ायें तथा विश्वकर्मा के पांचों पुत्रों मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी एवं दैवज्ञ को ध्यान कर प्रणाम करें तथाअपने मकान सुख की प्राप्ति के लिए निवेदन करें।

इसके बाद निम्न मंत्र की 3 या 5 माला का जाप लगातार 6 महीने तक करें –

ओम् ऐं ह्रीं क्लीं क्रों भगवते विश्वकर्मणे मम मनोवांछित भूमि, आवास सुखं दापय दापय स्वाहा।।

या

ओम् नमः भगवते विश्वकर्मणे।।

मंत्र का 80000 जाप कर यथाशक्ति हवनादि करें।

ऐसा करने से भगवान विश्वकर्मा के आशीर्वाद से भूमि एवं मकान सुख प्राप्त होगा एवं आपके मकान में वास्तु दोष भी कम होंगे।

Sample DOB: 28:03:1978 ; TOB: 21:30:00 ; POB: Patna (INDIA)

ज़्योतिष सारिणी

जन्म दिन-	28 March 1978 (Tuesday)
जन्म समय-	21:30:00
जन्म स्थान-	Patna , INDIA
रेखांश-	082:42:00E
अक्षांश-	023:18:00N
समयक्षेत्र-	-05:30:00 hrs
समय संशोधन-	00:00:00 hrs
जीएमटी. समय-	16:00:00 hrs
स्थानीय समय संस्कार-	00:00:48 hrs
स्थानीय समय-	21:30:48 hrs

जन्म-दिन का ग्रह-	**मंगल**
जन्म-समय का ग्रह-	**शनि**
सांपातिक काल-	09:53:39 hrs
सूर्योदय-	05:57:36AM
सूर्यास्त-	06:10:37PM
अयनांश-	N.C.Lahiri (023:33:11)
विक्रम संवत्-	**2034**
शक संवत्-	**1899**
संवत्सर-	**पिंगल**
संवत्सर अधिपति-	**अश्विनी**

अवकहड़ा चक्र

लग्न :	तुला
लग्नाधिपति :	शुक्र
राशि (चन्द्रमा) :	वृश्चिक
राशिपति :	मंगल
नक्षत्र :	अनुराधा
नक्षत्रपति :	शनि
नक्षत्र चरण :	1
पाया :	रजत
ऋतु :	बसन्त
मास :	चैत्र
पक्ष :	कृष्ण
तिथि :	पंचमी
तिथि श्रेणी :	पूर्णा
तिथि पति :	गुरू
करण :	कौलव
करण श्रेणी :	चर
करणपति :	चन्द्र
गण :	देव
वर्ण :	विप्र
योनि :	शशक (स्त्री)
सूर्य सिद्धान्त योग :	वज्र
रज्जु :	कटि
वश्य :	कीट
तत्व :	अग्नि
तत्वाधिपति :	मंगल
विहग :	वायस
नाड़ी :	मध्य
नाड़ी पद :	मध्य
वेध :	भरणी
आद्याक्षर :	न

घात चक्र

राशि (सूर्य) :	वृष
मास :	अश्विन
तिथि :	1,6,11
वार :	शुक्रवार
नक्षत्र :	रेवति
प्रहर :	1
लग्न :	वृश्चिक
सूर्य सिद्धान्त योग :	व्रहमा
करण :	गरिजा

शासक ग्रह (कृ0 मू0 पद्धति के अनुसार)

वारेश :	मंगल
लग्नेश :	शुक्र
लग्न नक्षत्र स्वामी-	गुरू
लग्न उप स्वामी :	शुक्र
चन्द्र राशि स्वामी :	मंगल
चन्द्र नक्षत्र स्वामी न्न	शनि
चन्द्र उप स्वामी :	शुक्र
फॉरच्युना(कृ0 प0)	079:49:49
अयनाशं (कृ0 प0) :	023:27:24

पाश्चात्य ज्योतिषीय सारिणी

सूर्य राशि-	मेष
देकानेट-	1
फेस :	II
चन्द्र राशि (पाश्चात्य) :	वृश्चिक
लग्न (पाश्चात्य) :	वृश्चिक
सूर्य का अवधिपति :	शुक्र
चन्द्रमा का अवधिपति :	शनि
अवधि बदलाव :	(मंगल, शुक्र), (शुक्र, मंगल)

Sample DOB-28:03:1978 TOB-21:30:00 POB-Patna

ग्रह स्थिति

ग्रह		राशि	राशि	डिग्री	नक्षत्र – चरन	न0 पति	सप्तकारक	विशेष	विशेष
लग्न		तुला	शुक्र	29:01:22	विशाखा.3	गुरू	...	...	...
सूर्य		मीन	गुरू	14:03:35	उत्तरभाद्र.4	शनि	आत्म	मित्र के भाव में	ग्रस्ति
चन्द्रमा		वृश्चिक	मंगल	04:54:26	अनुराधा.1	शनि	अमात्य	मित्र के भाव में	––
मंगल		कर्क	चन्द्रमा	02:26:22	पुनर्वसु.4	गुरू	मात्रि	नीचस्थ	––
बुध		मेष	मंगल	01:35:28	अश्विनी.1	केतु	अपत्या	शत्रु के भाव में	शुभ ग्रह के साथ
गुरू		मिथुन	बुध	04:37:38	मृगशिर.4	मंगल	भ्रात्रि	तटस्थ भाव में	––
शुक्र		मेष	मंगल	00:00:04	अश्विनी.1	केतु	दारा	तटस्थ भाव में	शुभ ग्रह के साथ
शनि व		सिहं	सूर्य	00:46:27	मघा.1	केतु	ज्ञाति	शत्रु के भाव में	––
राहु व		कन्या	बुध	12:24:44	हस्ता.1	चन्द्रमा	...	तटस्थ भाव में	––
केतु व		मीन	गुरू	12:24:44	उत्तरभाद्र.3	शनि	...	तटस्थ भाव में	दुष्ट ग्रह के साथ
हर्षल व		तुला	शुक्र	22:16:01	विशाखा.1	गुरू	...	––	––
नेपच्यून व		वृश्चिक	मंगल	24:45:01	ज्येष्ठा.3	बुध	...	––	दुष्ट ग्रह के साथ
प्लूटो व		कन्या	बुध	21:59:18	हस्ता.4	चन्द्रमा	...	––	दुष्ट ग्रह के साथ

लग्न कुण्डली

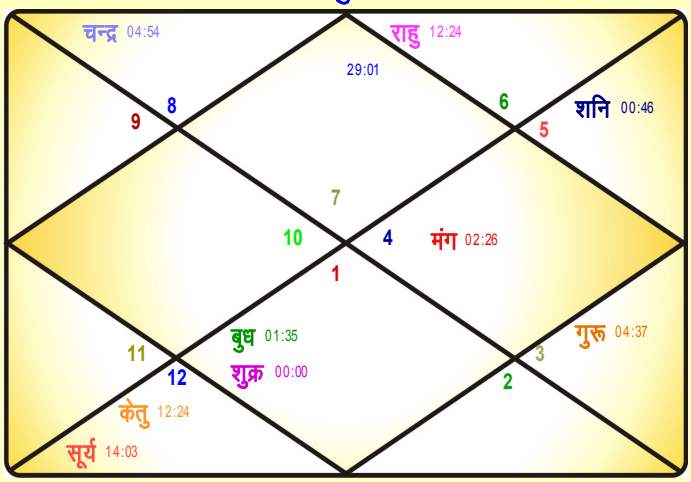

नवांश कुण्डली

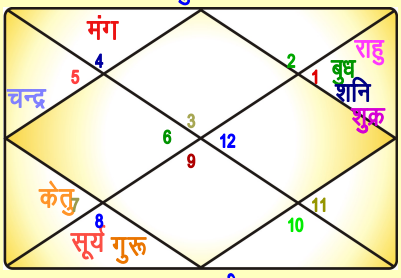

चन्द्र कुण्डली

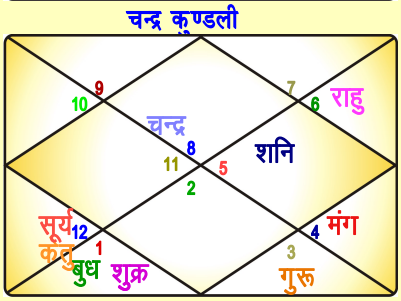

ग्रह से ग्रह और ग्रह से लग्न के बीच की दूरी

	लग्न	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्षल	नेपच्यून	प्लूटो
लग्न	---	135	6	243	153	216	151	272	313	133	353	26	323
सूर्य	225	---	231	108	18	81	16	137	178	358	218	251	188
चन्द्रमा	354	129	---	238	147	210	145	266	308	128	347	20	317
मंगल	117	252	122	---	269	332	268	28	70	250	110	142	80
बुध	207	342	213	91	---	63	358	119	161	341	201	233	170
गुरू	144	279	150	28	297	---	295	56	98	278	138	170	107
शुक्र	209	344	215	92	2	65	---	121	162	342	202	235	172
शनि	88	223	94	332	241	304	239	---	42	222	81	114	51
राहु	47	182	52	290	199	262	198	318	---	180	40	72	10
केतु	227	2	232	110	19	82	18	138	180	---	220	252	190
हर्षल	7	142	13	250	159	222	158	279	320	140	---	32	330
नेपच्यून	334	109	340	218	127	190	125	246	288	108	328	---	297
प्लूटो	37	172	43	280	190	253	188	309	350	170	30	63	---

0,1,359	कन्जक्शॅन	59,60,61,299,300,301	सेक्सटाइल	89,90,91,269,270,271	स्कवायर
119,120,121,239,240,241	ट्राइन	149,150,151,209,210,211	क्वीनकक्सं	179,180,181	अपोजीसन

लाल किताब लग्न कुण्डली

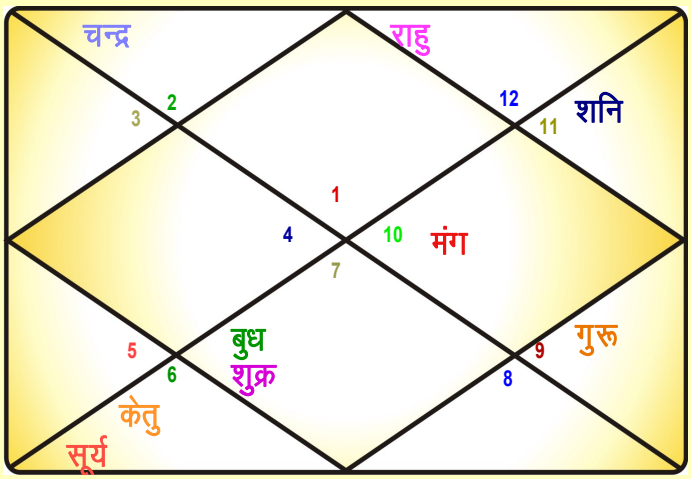

चन्द्र कुण्डली (लाल किताब)

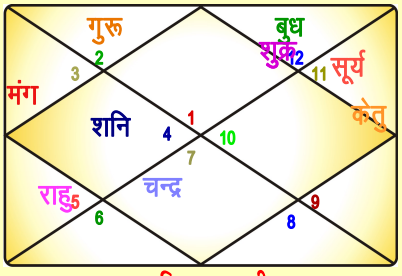

भाव चलित कुण्डली

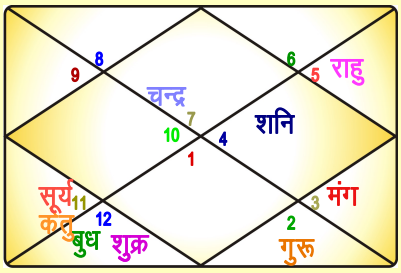

लाल किताब कुण्डली में ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भावस्थ	भावेश	प्रभाव	पक्का घर	भा0 का ग्रह	साथी ग्रह	कायम	धर्मी	सोया	विशेष
सूर्य	षष्टम्	5	राशि							अशुभ भाव में
चन्द्रमा	द्वितीय	4	ग्रह		हाँ		हाँ			शुभ भाव में
मंगल	दशम्	1] 8	ग्रह				हाँ		हाँ	शुभ भाव में
बुध	सप्तम्	3] 6	ग्रह	हाँ		शुक्र	हाँ			शुभ भाव में
गुरू	नवम्	9] 12	ग्रह	हाँ	हाँ		हाँ			शुभ भाव में
शुक्र	सप्तम्	2] 7	ग्रह	हाँ	हाँ	बुध	हाँ			शुभ भाव में
शनि	एकादश	10] 11	ग्रह				हाँ	हाँ	हाँ	शुभ भाव में
राहु	द्वादश		ग्रह	हाँ						अशुभ भाव में
केतु	षष्टम्		ग्रह	हाँ						अशुभ भाव में

लाल किताब कुण्डली में भावों (खानों) की स्थिति

खाना नं॰	खाना नं॰	मालिक	पक्का घर	सोया	उच्च	नीच	किस्मत को जगाने
१		मंगल	सूर्य	हाँ	सूर्य	शनि	मंगल
२	चन्द्रमा	शुक्र	गुरू		चन्द्रमा		चन्द्रमा
३		बुध	मंगल	हाँ	राहु	केतु	बुध
४		चन्द्रमा	चन्द्रमा	हाँ	गुरू	मंगल	चन्द्रमा
५		सूर्य	गुरू	हाँ			सूर्य
६	सूर्य, केतु	बुध	बुध केतु		बुध राहु	शुक्र केतु	केतु
७	बुध, शुक्र	शुक्र	शुक्र बुध		शनि		शुक्र
८		मंगल	मंगल शनि	हाँ		चन्द्रमा	चन्द्रमा
९	गुरू	गुरू	गुरू		केतु	राहु	शनि
१०	मंगल	शनि	शनि		मंगल	गुरू	शनि
११	शनि	शनि	शनि				गुरू
१२	राहु	गुरू	गुरू		शुक्र केतु	बुध राहु	राहु

लाल किताब लग्न कुण्डली में ग्रहों की दृष्टि

लाल किताब की सामान्य दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	गु0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य								चतुर्थ	
चन्द्रमा	चतुर्थ								चतुर्थ
मंगल									
बुध									
गुरू									
शुक्र									
शनि									
राहु									
केतु								चतुर्थ	

ग्रहों की दृष्टि

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य								0	
चन्द्रमा									
मंगल									
बुध									
गुरू									
शुक्र									
शनि									
राहु	0								0
केतु		0	0					0	

लाल किताब में टक्कर की दृष्टि

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य									
चन्द्रमा					0				
मंगल									
बुध		0							
गुरू									
शुक्र		0							
शनि	0								0
राहु				0		0			
केतु									

लाल किताब में पाये की दृष्टि

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य		0							
चन्द्रमा			0						
मंगल	0								0
बुध									
गुरू									
शुक्र									
शनि				0		0			
राहु									
केतु		0							

लाल किताब में विश्वासघात की दृष्टि

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य									
चन्द्रमा							0		
मंगल				0		0			
बुध									
गुरू	0								0
शुक्र									
शनि									
राहु					0				
केतु									

लाल किताब में सहचरी दिवार दृष्टि

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य				0		0			
चन्द्रमा									
मंगल					0		0		
बुध			0						
गुरू									
शुक्र			0						
शनि								0	
राहु									
केतु				0		0			

लाल किताब में अचानक प्रहार दृष्टि

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य									
चन्द्रमा									
मंगल								0	
बुध					0				
गुरू				0		0			
शुक्र					0				
शनि									
राहु			0						
केतु									

लाल किताब में परस्पर सहयोग दृष्टि

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य			0						
चन्द्रमा	0								0
मंगल		0							
बुध							0		
गुरू									
शुक्र							0		
शनि									
राहु									
केतु			0						

लाल किताब वर्षफल

वर्षफल कुण्डली –36

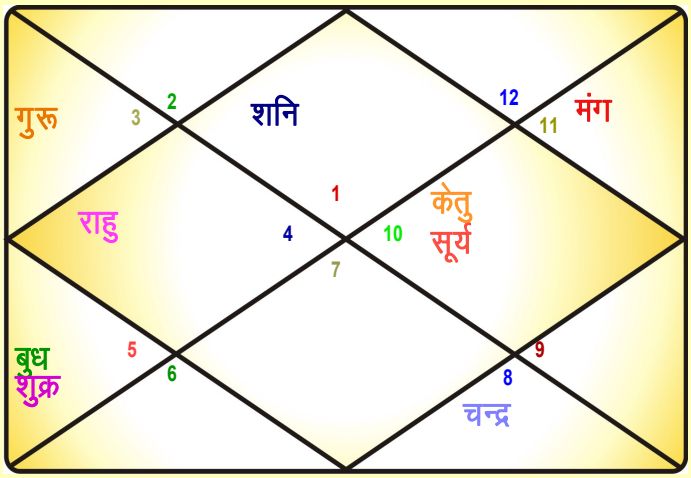

28:03:2013 -- 27:03:2014

लग्न कुण्डली (टेवा)

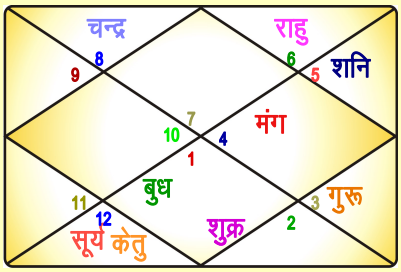

लाल किताब चंद्र कुण्डली

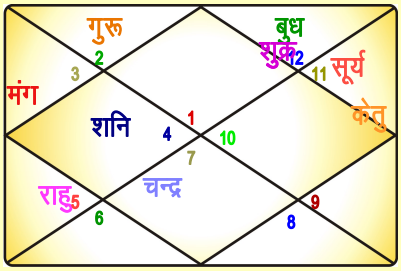

लाल किताब से वर्षफल में ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भावस्थ	प्रभाव	पक्का घर	भाग्योदय का ग्रह	साथी ग्रह	कायम ग्रह	धर्मी	सोया	विशेष
सूर्य (बद)	दशम्	ग्रह						हाँ	अशुभ भाव में
चन्द्रमा (बद)	अष्टम्	ग्रह		हाँ				हाँ	अशुभ भाव में
मंगल	एकादश	राशि				हाँ		हाँ	शुभ भाव में
बुध	पंचम्	राशि				हाँ		हाँ	शुभ भाव में
गुरू (बद)	तृतीय	राशि				हाँ			शुभ भाव में
शुक्र (बद)	पंचम्	राशि				हाँ		हाँ	
शनि (बद)	लग्न	ग्रह						हाँ	अशुभ भाव में
राहु (बद)	चतुर्थ	राशि				हाँ	हाँ		शुभ भाव में
केतु (बद)	दशम्	राशि				हाँ		हाँ	शुभ भाव में

लाल किताब से वर्षफल में भावों (खानों) की स्थिति

खाना नं॰	खाना नं॰	मालिक	पक्का घर	सोया	उच्च	नीच	किस्मत को जगाने
१	शनि	मंगल	सूर्य		सूर्य	शनि	मंगल
२		शुक्र	गुरू		चन्द्रमा		चन्द्रमा
३	गुरू	बुध	मंगल		राहु	केतु	बुध
४	राहु	चन्द्रमा	चन्द्रमा		गुरू	मंगल	चन्द्रमा
५	बुध, शुक्र	सूर्य	गुरू				सूर्य
६		बुध	बुध केतु	हाँ	बुध राहु	शुक्र केतु	केतु
७		शुक्र	शुक्र बुध		शनि		शुक्र
८	चन्द्रमा	मंगल	मंगल शनि			चन्द्रमा	चन्द्रमा
९		गुरू	गुरू		केतु	राहु	शनि
१०	सूर्य, केतु	शनि	शनि		मंगल	गुरू	शनि
११	मंगल	शनि	शनि				गुरू
१२		गुरू	गुरू		शुक्र केतु	बुध राहु	राहु

मकान कुण्डली (लग्न कुण्डली पर आधारित)

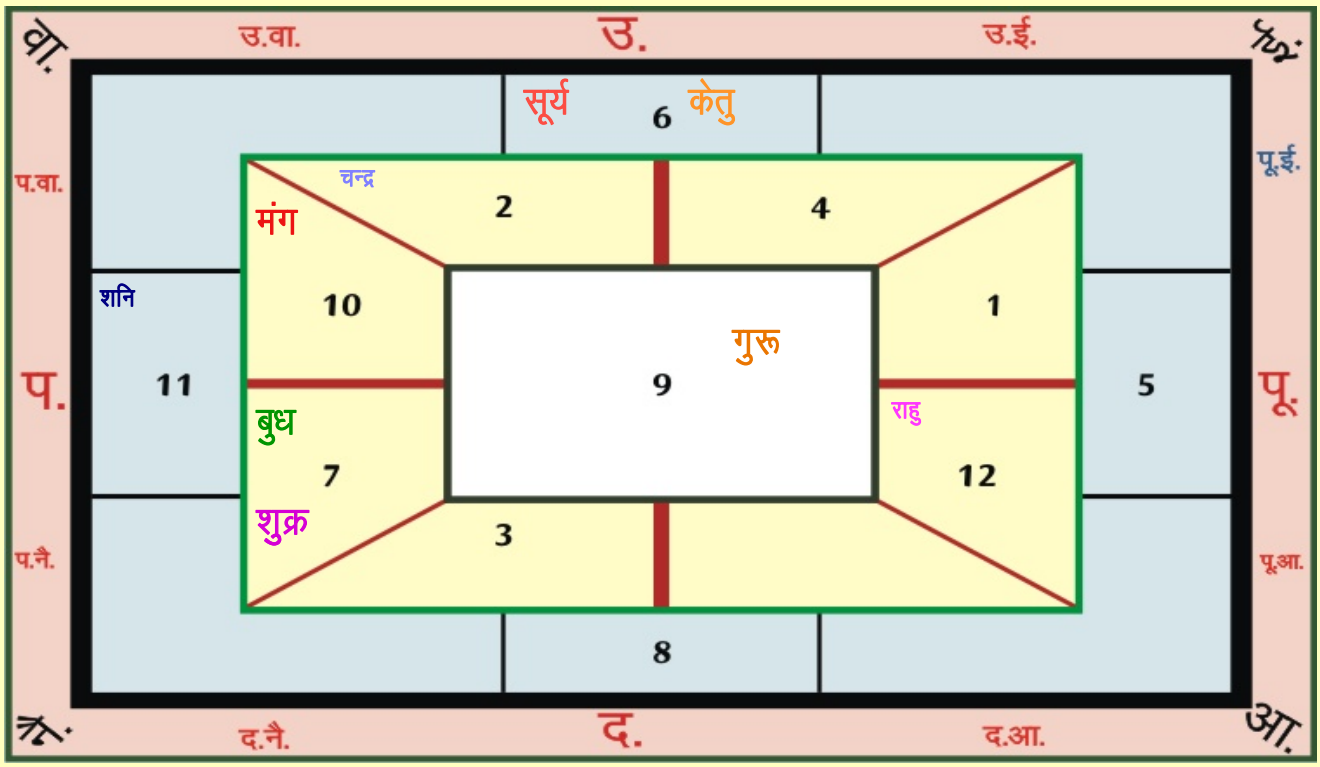

लग्न कुण्डली

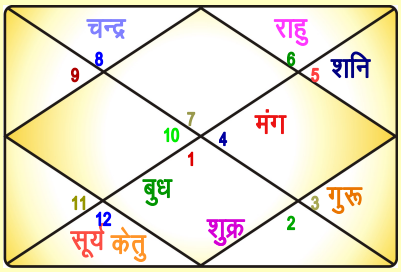

भाव चलित कुण्डली

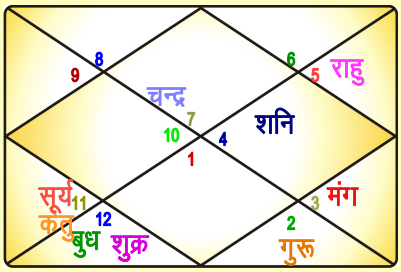

लाल किताब चन्द्र कुण्डली

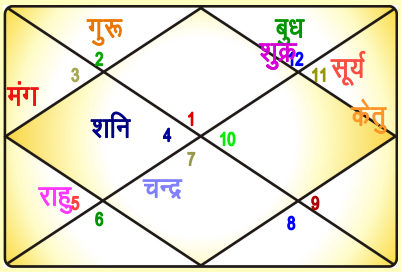

लाल किताब कुण्डली में ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भावस्थ	भावेश	प्रभाव	पक्का घर	भा0 का ग्रह	साथी ग्रह	कायम	धर्मी	सोया	विशेष
सूर्य	षष्टम्	5	राशि							अशुभ भाव में
चन्द्रमा	द्वितीय	4	ग्रह		हाँ		हाँ			शुभ भाव में
मंगल	दशम्	1, 8	ग्रह				हाँ		हाँ	शुभ भाव में
बुध	सप्तम्	3, 6	ग्रह	हाँ		शुक्र	हाँ			शुभ भाव में
गुरू	नवम्	9, 12	ग्रह	हाँ	हाँ		हाँ			शुभ भाव में
शुक्र	सप्तम्	2, 7	ग्रह	हाँ	हाँ	बुध	हाँ			शुभ भाव में
शनि	एकादश	10, 11	ग्रह				हाँ	हाँ	हाँ	शुभ भाव में
राहु	द्वादश		ग्रह	हाँ						अशुभ भाव में
केतु	षष्टम्		ग्रह	हाँ						अशुभ भाव में

ग्रहों की मकान कुण्डली में स्थिति के अनुसार मकान सुख

(लग्न कुण्डली पर आधारित)

लाल किताब के अनुसार, किसी भी कुण्डली में मकान से संबंधित कार्यों में शनि काबहुत बड़ा योगदान होता है। शनि की स्थिति से जातक के मकान के बारे में बहुत सारी जानकारियां प्राप्त होती हैं। मकान कब बनेगा एवं कैसा मकान शुभ फलदायक होगा, इसके लिए कुण्डली में शनि की स्थिति देखनी बहुत जरूरी हो जाती है। कुण्डली में उपस्थित शनि अपना शुभ–अशुभ प्रभाव मकान की नींव का प्रारंभ करने के 3 या 18 वर्ष बाद अवश्य देता है।

ग्यारहवें भाव (पश्चिम दिशा) में स्थित शनि का फल

सबसे पहले शनि के जो फल और उपाय दिए गये हैं उन्हे समझना है और करना है। अन्य ग्रहों के फल और उपाय पर शनि को वरीयता देना है।

आपकी कुण्डली में शनि ग्यारहवें भाव में स्थित है। आपके लिए मकान का निर्माण 48वें वर्ष से55वें वर्ष के बीच करना शुभ होगा। इससे मकान के निर्माण में कोई बाधा भी नहीं आएगी और आपको आर्थिक रूप से भी लाभ प्राप्त होगा।

यदि आप 48 वर्ष की आयु से पहले मकान का निर्माण करते हैं तो आप किसी दीर्घकालिक रोग से ग्रसित हो सकते हैं। आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। आपको बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

आपको कभी भी दक्षिण मुखी भूखंड या मकान नहीं लेना चाहिए, अन्यथा भाग्य आपका साथ नहीं देगा। आप किसी गंभीर बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं। आप पर किसी की हत्या का आरोप या उस षड्यंत्र में शामिल होने का आरोप लग सकता

है।

आपकी कुण्डली में शनि ग्यारहवें भाव में स्थित है। शुभ फलों में बढ़ोतरी एवं अशुभ फलों में कमी करने के लिए चांदी की ईंट अपने घर में रखें। तेल, शराब या स्पिरिट सूर्योदय के समयकच्ची जमीन पर गिरायें।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– आपको मकान निर्माण करने से पहले लगातार 43 दिन भूमि पर तेल या शराब प्रातः कालमें सूर्योदय के समय गिरानी चाहिए।
2– मकान के पश्चिम में नींबू का वृक्ष लगायें। कामुकता से बचें और यदि अधूरे मकान में भी रहना पड़े तो पत्नी के साथ तब तक संसर्ग न करें जब तक मकान का निर्माण पूर्ण न हो जाए।
3– मकान में पूर्व की ओर ऐसी व्यवस्था करें कि मकान से किसी भी कार्य से जाने से पहले या निकलने से पहले पानी से भरा घड़ा रखा हो। पानी का घड़ा दर्शन करके ही बाहर जायें।

छठवें भाव (उत्तर दिशा) में स्थित सूर्य का फल

सूर्य को लालकिताब और वैदिक ज्योतिष में पालक कहा गया है। इसी कारण सूर्य को भी भगवान विष्णु के बराबर मान–सम्मान दिया जाता है और केवल इन्ही दोनों को नारायण कहा जाता है।

आपकी कुण्डली में सूर्य छठे भाव में स्थित है। आपको मकान बनाने के लिए मछली के आकारका बीच में उठा हुआ भूखंड कभी नहीं लेना चाहिए। यदि आपने ऐसा भूखंड लिया तो आपको आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ सकता है। आपकी स्थिति बहुत खराब हो सकती

है। कुछ संभावना है कि आपका वंश आगे न बढ़े। आपके लिए उत्तर, पूर्व एवं पश्चिम मुख वाला भूखंड शुभ और उन्नतिकारक होगा। यह ध्यान रखें कि भूखंड का आकार कभी भी षटकोण न हो, अन्यथा आपको सरकार या सरकारी विभागों द्वारा दंडित किया जा सकता है या आप पर कोई जुर्माना लग सकता है।

आपको अपने भवन निर्माण के दिन से ही लगातार 43 दिनों तक अपने भूखंड पर अपनी पत्नीके साथ हरिवंश पुराण का पाठ करना चाहिए। यदि भवन निर्माण के दौरान पाठ करना संभव न हो तो निर्माण के बाद मकान में प्रवेश करते समय अवश्य की इस कार्य को संपादित करें। अपने मकान का नींव रखते समय किसी धर्म स्थान से दूसरों के द्वारा दान की हुई सूर्य की वस्तुयें लाकर नींव में स्थापित करें। इससे आपको सूर्य के उत्तम एवं शुभ फल प्राप्त होंगे।

आपकी कुण्डली में सूर्य छठे भाव में एवं चंद्रमा, मंगल या बृहस्पति दूसरे भाव में स्थित हैं। आपको प्राचीन रीतियों से मकान का निर्माण करना पसंद होगा। आप मकान के आंतरिक सजावट में भी प्राचीन कला का ही उपयोग करेंगे। आपको अपने मकान की पश्चिमी दीवार कोतोड़कर रोशनी की व्यवस्था नहीं करनी चाहिए, अन्यथा पैसे की बचत बिल्कुल नहीं होगी। भाग्य आपका साथ नहीं देगा तथा आपकी संतान को भी अशुभ फल प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में सूर्य छठे भाव में स्थित है। आपको कभी भी अपने मकान में जमीन के अंदर भट्टी का निर्माण नहीं करना चाहिए।

यदि आपके घर में पुत्र संतान जीवित नहीं बच रहा है तो अपने घर में आग की भट्टी स्थापित न करें। रात को सोते समय सफेद वस्तु, कपड़ा, दूध, शक्कर आदि सिरहाने रखकर सोयें और सुबह उसे दान कर दें। किसी धर्म स्थान के कुत्ते को रोटी दें।

आपकी कुण्डली में शनि, राहु या केतु की स्थिति या दृष्टि के कारण सूर्य अशुभ हो रहा है। अपने मकान का पूर्वी भाग खुला रखें, भाग्य आपका साथ देगा। घर में आटा पीसने की चक्कीरखें, रोजगार में बरकत होगी।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– घर में भूमिगत भट्टी का निर्माण कभी न करें, चाहे वो विवाह के समय ही क्यों न हो।
2– अपने घर में रात का भोजन बनने के बादआपको स्वयं या आपकी धर्मपत्नी को चूल्हा या गैस के चूल्हे को बंद करते समय दूध की छीटें मारने चाहिए।
3– आपको अपने मकान में चांदी के बर्तन में गंगाजल भरकर रखना चाहिए।

दूसरे भाव (उत्तरी वायव्य दिशा) में स्थित चन्द्रमा का फल

आपकी कुण्डली में चंद्रमा दूसरे भाव में स्थित है। आपको अपने मकान में भूल कर भी मध्य भाग में पानी का बोर–वेल, नल या जल का स्रोत नहीं बनवाना चाहिए, अन्यथा घर की स्त्रियों को विशेष कर आपकी पत्नी को स्त्री जनित रोग परेशान कर सकते हैं और साथ ही आपके कुटुम्ब में स्त्रियों के मध्य क्लेश के कारण घर की शांति भंग हो सकती है।

आपके मकान में प्राकृतिक जल के स्रोत के लिए उत्तर–पश्चिम की दिशा ऊपयुक्त नहीं है। इस कारण केवल पूर्व में ही अपनी माता या पत्नी के द्वारा उस भूमि का पूजन कर के जल स्रोत का प्रारंभ करना चाहिए।

आपको अपनी माता को सदा अपने मकान में आदर के साथ रखना चाहिए और अपनी पत्नी एवं कन्या सन्तान के लिए भी कभी अपशब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। उन्हें सदा सुख–सुविधायें देने से चन्द्रमा का शुभ प्रभाव मकान में स्थापित होगा और आपके कार्य क्षेत्र पर भी इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

आपको अपनी लंबी आयु के लिए अपने द्वारा निर्मित मकान की नींव में चांदी को अवश्य दबानाचाहिए और वो चांदी यदि आप अपनी माता से लेते हैं तो अति उत्तम एवं शुभ फल प्राप्तहोगा।

आपकी कुंडली में चंद्रमा दूसरे भाव में स्थित है। आपको अपने मकान में कच्चा स्थान अवश्य रखना चाहिए। आपको अपने मकान की नींव में चांदी अवश्य दबवानी चाहिए। यदि आपके पास कन्या सन्तान है तो उसके कर–कमलों द्वारा यह कार्य अत्यंत शुभ रहेगा। मकान बनवातेसमय यह ध्यान रखें कि रसोई का मुख्य द्वार कभी भी आपके शयन कक्ष के बायीं ओरन हो।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– आपको अपनी रसोई में हल्के रंग के पत्थर का प्रयोग करना चाहिए, भूल कर भी हरे एवं काले रंग के पत्थर का प्रयोग न करें।
2– आपको मकान के अंदर मंदिर के निर्माण करने से बचना चाहिए, दीवारों पर छोटी मूर्ति

या देवताओं के चित्र लगा सकते हैं।
3– आपको अपने मकान में ऐसी डोर–बेल का प्रयोग नहीं करना चाहिए जिसकी आवाज घंटे की तरह हो।

दसवें भाव (पश्चिमी वायव्य दिशा) में स्थित मंगल का फल

आपकी कुण्डली में मंगल दसवें भाव में स्थित है। आप बहुत भाग्यशाली होंगे। यदि आपका जन्म गरीबी में भी हुआ है तो भी आप धनी हो जायेंगे। यदि पहले से ही धनी हैं तो आपकी धन–संपदा में और अधिक बढ़ोतरी होगी।

आपके पास एक से अधिक मकान या भूखंड हो सकते हैं। आपके द्वारा निर्मित मकान बहुत हीसुन्दर एवं भव्य होगा। आपके मकान में रोशनी की भरपूर व्यवस्था होगी।

आपकी कुण्डली में मंगल दसवें भाव में स्थित है एवं पांचवां भाव खाली है। आपको मकान कापूर्ण सुख प्राप्त होगा। आपको अपने मकान में नए एवं आधुनिक वस्तुओं का प्रयोग करना पसंद होगा।

आपको अपने मकान में सुरक्षा का पुख्ता इंतजाम करना चाहिए। यदि सुरक्षा व्यवस्था में कमी के कारण घर से सोना चोरी होता है तो आपका मंगल अशुभ हो जाएगा, जिसकी वजह से आपके ऊपर मुसीबतों की शुरुआत शुरू हो जाएगी।

आपको अपनी रसोई में ऐसे बर्तनों का प्रयोग करना चाहिए जिनमें से दूध उबल कर आग पर न गिरे और न जले, अन्यथा आपके परिवार पर मंगल का अशुभ प्रभाव पड़ेगा।

आपकी कुण्डली में मंगल दसवें भाव में स्थित है। आपको पहले अपना रोजगार एवं समाज में प्रतिष्ठा बढ़ाना चाहिए, फिर मकान का निर्माण अपनी मेहनत से कराना चाहिए।

मंगल के कुछ सामान्य उपाय

–

रोज सफेद मंजन से दांत साफ करें। अपने मकान में दूध, शक्कर, चावल, शुद्ध चांदी स्थापित करें। जहां तक संभव हो सके, चांदी के बर्तनों का प्रयोग करें। बड़गद के पेड़ की जड़ में दूध में मीठा डालकर चढ़ायें और गीली मिट्टी का तिलक करें, इससे पेट की समस्याओं से मुक्ति मिलेगी। यदि आपके मकान में आग लगने की घटनायें अक्सर हो रही हैं तो मकान की छत पर चीनी की बोरियां रखें, घोड़े के मुंह में देशी खाण्ड दें। मिट्टी के बर्तन में शहद भरकर श्मशान में दबायें। मृगछाला एवं चांदी का चौकोर टुकड़ा अपने पास या घर में रखें। अपने मकान के दक्षिणी दरवाजे पर लोहे की कील ठोकें, काले घोड़े की नाल न ठोकें। काली वस्तुओं से परहेज करें। ढाक का वृक्ष न लगायें और न ही उसका प्रयोग करें। चिड़ियों के लिए मीठी चीजें डालें। हाथी दांत की वस्तुयें अपने पास या घर में रखें। तांबा, गुड़, गेहूं, घोड़ा, सोना, चांदी आदि का संग्रह करना शुभ फलदायक होगा।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– ध्यान रखें कि दूध उबल कर आग पर न गिरे और न जले।
2– घर का सोना कभी न बेचें।
3– पुश्तैनी सम्पत्ति कभी न बेचें।

सातवें भाव (पश्चिमी नैऋत्य दिशा) में स्थित बुध का फल

आपकी कुण्डली में बुध सातवें भाव में स्थित है। आप अपने कामों के प्रति बहुत क्रियाशील होंगे एवं आपका नजरिया भी सुलझा हुआ होगा। आप अपने मकान का मानचित्र अपने तरीके से बनवायेंगे या खुद ही बनायेंगे। आपके बनाए मकान में गलती की संभावना नहीं के बराबर होगी।

आपके मकान में निश्चित रूप से कोई आध्यात्मिक कक्ष या अध्ययन कक्ष होगा, जहां आप शांति से अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए अध्ययन करते

रहेंगे।

आपको अपनी साली से दूर रहना चाहिए। उनसे किसी तरह का कोई संबंध स्थापित नहीं करना चाहिए, अन्यथा आपको मंगल एवं शुक्र दोनों का अशुभ फल प्राप्त होगा।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– भूल कर भी अपने मकान में या उसकी छत पर जुआ, सट्टा आदि न खेलें।
2– अपनी साली के साथ अनैतिक सम्बन्ध न बनायें।
3– चांदी के 4 छल्ले बनाकर मकान की चारो दिशाओं में टांगने से धन में वृद्धि होगी।

नौवें भाव (ब्रह्म स्थल (आँगन) दिशा) में स्थित गुरू का फल

आपके मकान में निश्चित रूप से पीले या नारंगी रंग का प्रयोग अधिक मात्रा में होगा, इससे आपको शुभ फल प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति नौवें भाव में स्थित है। आप बहुत ही सुन्दर एवं वास्तुकला के अनुरूप मकान का निर्माण करायेंगे। आप पूरे विधि–विधान से मकान के हर कार्य का संयोजनकरेंगे।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति नौवें भाव में स्थित है। यदि आपने मकान के निर्माण के दौरान मध्य भाग को भारी या वजनी कर दिया तो आपको या आपके परिवार के किसी सदस्य को हृदय संबंधी समस्या का सामना करना पड़ सकता है।

आपको अपने मकान की नींव में सोने की महीन तार रखना चाहिए, इससे बृहस्पति का अशुभ प्रभाव खत्म होगा एवं आपको शुभ फल प्राप्त होंगे। आपको मकान का पूर्ण सुख प्राप्त होगा।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– आपको अपने मकान में अपने ईष्ट देव का मंदिर बनाना चाहिए तथा नित्य उनके दर्शन करने चाहिए।
2– अपने मकान से कोई भी धर्म विरोधी कार्य न करें और धर्म का पालन करें।
3– अपने मकान के किसी भी हिस्से में शराब पीने की जगह न बनायें।
4– बुध की वस्तुयें अपने मकान से ले जाकर बहते पानी में बहायें।

सातवें भाव (पश्चिमी नैऋत्य दिशा) में स्थित शुक्र का फल

आपकी कुण्डली में शुक्र सातवें भाव में स्थित है। आप समाज में विनम्र स्वभाव के लिए जाने जायेंगे। आपके मान–सम्मान में वृद्धि होगी। आपका मकान बहुत भव्य होगा। आपके मकान में सात्विकता बनी रहेगी। आप अपने मकान में हल्के रंगों का प्रयोग करेंगे।

आपके परिवार वालों के साथ आपकी पत्नी का स्वभाव मधुर बना रहेगा, जिसकी वजह से आपका गृहस्थ जीवन सुखमय होगा।

आपकी कुण्डली में शुक्र एवं बुध एक साथ सातवें भाव में स्थित हैं। आपको अपने मकान में किसी भी रूप में हरे रंग का प्रयोग करने से बचना चाहिए, अन्यथा आपकी उन्नति में रूकावटआएगी।

आपकी उम्र के 4थे, 15वें, 28वें, 40वें, 52वें, 60वें, 76वें एवं 88वें वर्ष में चोरी या किसी अन्य कारण से आपको धन हानि हो सकती है।

पराई औरतों के साथ अनैतिक संबंध न बनायें, अन्यथा आपकी बर्बादी शुरू हो जाएगी तथा मकान बिकने की कगार पर आ जाएगा।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– अपने मकान के बाहर गंदे नाले में लगातार 43 दिनों तक नीला फूल प्रवाहित

करें।
2– यदि संभव हो तो अपने मकान में लाल गाय पालें या उसकी सेवा करें।
3– मकान के निर्माण के बाद जो भी पहला शुक्रवार हो, उस दिन कांसे का बर्तन मंदिर में दान दें।
4– अपने माता–पिता को अपने स्वनिर्मित मकान में साथ रखें एवं उनका आशीर्वाद लेते रहें।
5– यदि आपकी पत्नी बीमार रहती हैं, तो उनके वजन के बराबर या वजन के दशांश के बराबर ज्वार मंदिर में दान दें।

बारहवें भाव (पूर्वी आग्नेय दिशा) में स्थित राहु का फल

आपकी कुण्डली में राहु बारहवें भाव में स्थित है। आपका मकान 48 वर्ष की आयु के बाद ही बनेगा। यदि मकान पहले बन जाता है तो निर्माण में कुछ–न–कुछ अधूरा रह सकता है, जिससे आपको राहु संबंधी अशुभ फल प्राप्त होंगे। आपको अपना मकान बेचना भी पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली में राहु बारहवें भाव में स्थित है। आपके पड़ोसी एवं समाज के लोग आप पर झूठे आरोप लगाकर आपको बदनाम करने की कोशिश करेंगे एवं आपका मकान बिकवाने का षडयंत्र रच सकते हैं।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– रात में सोते समय दक्षिण में सिर करके सोयें एवं अपने सिरहाने तकिये के नीचे मंगल कीवस्तुयें सौंफ या मूंगा रखें।
2– रसोई में बैठकर खाना खायें।
3– अपने अंदर जिद्दीपन पैदा न होने दें या किसी बात पर व्यर्थ का हठ न करें।

छठवें भाव (उत्तर दिशा) में स्थित केतु का फल

आपकी कुण्डली में केतु छठे भाव में स्थित है। आपको शनि का शुभ फल प्राप्त होगा। आपकोअपना मकान बनाने में किसी तरह की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा एवं शनि का शुभ प्रभाव आपके मकान पर बना रहेगा।

आपको अपना मकान निर्माण कराते समय अपने बड़ों एवं दूसरों की सलाह को ध्यान में रखनाचाहिए।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति शुभ भाव में है। आपको अपने मकान के पूजा कक्ष एवं अध्ययन कक्ष में पीले रंग का प्रयोग करना चाहिए, इससे आपको संतान का उत्तम सुख प्राप्त होगा तथा आपके मकान पर रोग एवं नकारात्मक प्रभाव में काफी कमी आएगी। अपने कर्मों से बृहस्पति को अशुभ न होने दें, अन्यथा आपके पड़ोसी आपके साथ शत्रुवत् व्यवहार करेंगे।

आपकी कुण्डली में बुध एवं केतु एक साथ छठे भाव में स्थित हैं। अधिक शुभ फल प्राप्त करनेके लिए अपने मकान में वनस्पति एवं दूब घास अवश्य लगायें।

आपकी कुण्डली में केतु छठे भाव में एवं चंद्रमा दूसरे भाव में स्थित है। आपकी माता को कुछ कष्ट हो सकता है, जिसकी वजह से आप भी परेशान रहेंगे। आपके परिवार वाले आपके मकाननिर्माण के दौरान बाधा उत्पन्न कर सकते हैं।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– आप जब भी मकान निर्माण का कार्य प्रारंभ करें, अपने मकान या भूखंड पर कुत्ता अवश्य पालें और उसका पूरा ख्याल भी स्वयं रखें।
2– अपने मकान में बायीं ओर धन एवं सोना रखने की व्यवस्था करें और मकान के निर्माण केदिन से ही अपनी बायें हाथ की अंगुली में सोने की अंगूठी धारण करें।
3– बृहस्पति के उपाय करते रहें।

मकान में चित्र, खिलौने, रंग, प्रतीक और शुभ चिन्हो की स्थापना

(लग्न कुण्डली पर आधारित)

वास्तु के अनुसार यदि भवन में कोई वास्तुदोष हो तो उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए शुभ चिन्हों, विभिन्न चित्रों, रंगो, खिलौनों व प्रतीकों आदि का प्रयोग भी किया जासकता है। इन चिन्हों इत्यादि का प्रयोग घर में करने से अनेक प्रकार की बाधाएं दूर होती हैं एवं सुख–समृद्धि में वृद्धि होती है।

आपकी कुण्डली में बुध शुभ स्थिति में है। आपके लिए अपने मकान में तोता–मैना के खिलौने,हरियाली के चित्र रखना शुभ होगा।

आपकी कुण्डली में मंगल दसवें भाव में है। आपके लिए अपने मकान में कुलाचे मारते हुए हिरण के चित्र एवं हिरण के खिलौने रखना शुभ होगा।

आपकी कुण्डली में शुक्र शुभ स्थिति में है। आपके लिए अपने मकान में गाय, बैल के मिट्टी के खिलौने रखना शुभ होगा। लकड़ी के खिलौने नहीं रखें।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा शुभ स्थिति में है। आपके लिए अपने मकान में दूध वाले वृक्षों के चित्र एवं खिलौने, जलाशय के चित्र रखना शुभ होगा।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति एवं शुक्र शुभ स्थिति में हैं। आपके लिए अपने मकान में गाय, बैलएवं घोड़े के चित्र एवं खिलौने रखना शुभ होगा।

मकान के मुख्य द्वार पर मांगलिक चिन्ह लगाना लाभदायक एवं उन्नतिकारक होता है। मकान के मुख्य द्वार पर स्वास्तिक, कलश, बेल–बूटें एवं हाथ का चिन्ह लगाना चाहिए। ध्यान रखें कि स्वास्तिक के चित्र में चार बिन्दु अवश्य हों, अन्यथा यह अधूरा माना जाता है। मछली का चित्र, दौड़ते हुए हिरण का चित्र, घुड़सवारी या हाथी पर सवारी का चित्र एवं कछुआ का चित्रशुभ रहता है।

मकान में दर्पण लगाने के लिए सबसे उपयुक्त दिशा उत्तर एवं पूर्व होता है। पश्चिम में दर्पण लगाने से सामान्य फल प्राप्त होता है। दक्षिण दिशा में दर्पण नहीं लगाना चाहिए। वॉश बेसिनके साथ भी दर्पण लगा सकते हैं। दर्पण को इस तरह रखें कि सूर्य की किरणें परावर्तित होकर आंखों पर न पड़े।

अपने मकान में घड़ी कभी भी ईशान, दक्षिण दिशा एवं अग्निकोण में नहीं लगायें, बाकी अन्य दिशायों में लगाना शुभ होता है। ध्यान रखें कि घड़ी कभी बंद न हो। यदि घड़ी खराब हो जाये, तो उसे तुरंत बनवायें या दूसरी घड़ी लगायें।

हल, घानी (कोल्हू) गाड़ी, अरहट (रेहट कुँयें से पानी निकालने का चरखा) काँटेवाले वृक्ष

तथा पाँच प्रकार के उदुंबर (गूलर, बड़, पीपल, पलाश और कढंबर) और क्षीरतरु (जिस वृक्ष को काटने से दूध निकले), वीजोरा, केला, अनार, नींबू , आक, इमली, बबूल, बेर व पीले फूलवाले तथा पक्षियों के घोंसले वाली लकड़ी घर बनाने के काम में नहीं लेनी चाहिए।

आपकी कुण्डली में शनि शुभ भाव में है एवं शुक्र सातवें भाव में स्थित है। अपने मकान के बाहर पंचकोण एवं षट्कोण का चिन्ह लगाना लाभदायक होगा।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति नौवें भाव में या बृहस्पति एवं चंद्रमा एक साथ स्थित हैं। आपके लिए अपने मकान में दूध वाले वृक्षों के चित्र, फल एवं दूध वाले पौधे एवं केला लगाना शुभ फलदायक होगा।

ओम्

ओम् शब्द ब्रह्मा का प्रतीक माना जाता है। वेदों का शुभारम्भ भी इसी शब्द से हुआ है। इस शुभ चिन्ह् को हिन्दु धर्म में शक्ति का मूल स्रोत माना गया है। इसका प्रयोग भवनों में मंगल चिन्ह के रूप में किया जाता है। यही ब्रह्मा है। इस चिन्ह् के स्वरूप में कुछ परिवर्तन के साथ लगभग सभी धर्मों में अपनाया गया है। यह शब्द संपूर्ण ब्रह्मा, ब्रह्मांड, अपरिमित बल तथा प्रणव का प्रतीक होता है। इस शब्द को देखने व उच्चारण करने मात्र से ही मन की एकाग्रता हो जाती है तथा शांति का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। इस चिन्ह् को घर में उचित स्थान पर स्थापित करना शुभ फलदायक होता है।

मंगल कलश

मंगल कलश वैदिककाल से ही जलपूरित एवं आम्रपत्र, पुष्प तथा नारियल से ढँका शुभ मंगल कलश शुभता, संपन्नता तथा समृद्धि का प्रतीक माना जाता रहा है, क्योंकि सृष्टि का उद्‌भव जल से हुआ है, इसीलिए ब्रह्मांड की उत्पत्ति का जल ही प्रतीक है। सभी धर्मशास्त्रों में जल से भरे हुए कुंभ को जीवन की पूर्णता का प्रतीक माना गया है। इसको भवन में स्थापित करने से सदैव घर की सुख–शांति बनी रहती है एवं धन–संपदा में वृद्धि होती है। इसी लिए नए घरमें प्रवेश करते समय सबसे पहले जल से भरे कुंभ को स्थापित किया जाता है।

स्वास्तिक

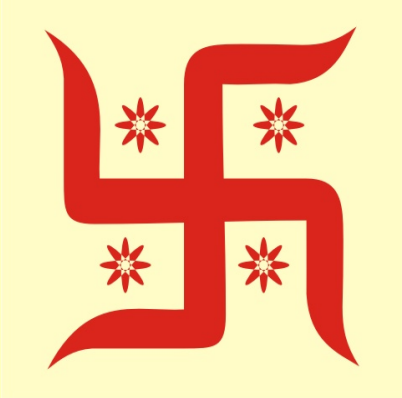

स्वास्तिक अति प्राचीन काल से ही स्वास्तिक को मांगलिक चिन्ह के रूप में प्रयोग किया जाताहै। धार्मिक मतानुसार इस चिन्ह को जीत का प्रतीक माना जाता है। इस चिन्ह को शुभ माना जाता है और भवन के मुख्य द्वार के दोनों ओर बनाया जाता है; ताकि अनिष्टकारी दृष्टिसे भवन की रक्षा होती रहे। घर में स्वास्तिक का चिन्ह स्थापित करने से पारिवारिक जनोंको उनके कार्यों में सफलता प्राप्त होती है।

पंचागुलक हाथ

पंचागुलक हाथ मांगलिक चिन्ह पंचागुलक हाथ गृह प्रवेश पुत्रजन्म तथा विवाह के शुभ अवसरपर हल्दी व चावल की पीठी से पींठ पर लगाने की काफी पुरानी परम्परा चली आ रही है। पाँच की संख्या पाँच तत्त्वों की निरंतरता, अनश्वरता का प्रतीक है। हाथ को कर्म का प्रतीकमाना गया है, यह देवताओं की अभय मुद्रा व आशीष मुद्रा का प्रतीक है। भवन में हाथ को मांगलिक चिन्ह के रूप में स्थापित करके, समृद्धि पंच महाभूतों एवं कर्म की महत्ता को प्रकट किया जाता है। बौद्ध धर्म में तो हाथ की मुद्राओं द्वारा ही विभिन्न मनोदिशाओं को संकेत रूप में बताया गया है।

मीन (मछली)

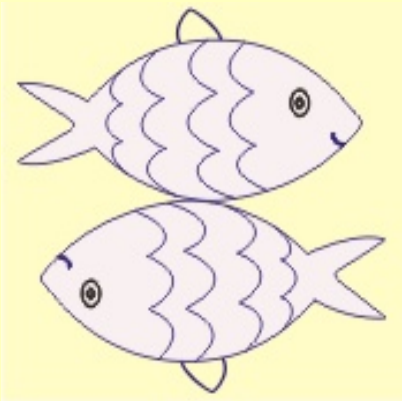

मीन (मछली) को सच्चे प्रेम की प्रतीक माना गया है। यात्रा शुरू करने से पहले मत्स्य दर्शन कार्य सफलता का सूचक व शुभ माना जाता है। दशहरा पर्व पर मत्स्य दर्शन की प्राचीन परम्परा हैं भवन के मुख्य द्वार पर जुड़वाँ मछलियों के चित्र को बनाने की परम्परा है। इसके पीछे यही भावना जुड़ी है कि यदि मत्स्य के साक्षात् दर्शन नहीं होते, तो उसके चित्र में ही दर्शन हो जायें। इसे मुख्य द्वार पर मांगलिक चिन्ह के रूप में अंकित करने का प्रचलन शुभता का द्योतक है।

धार्मिक शुभ प्रतीक

ईसाइयों का शुभ प्रतीक चिन्ह क्रॉस तथा मुस्लिमों का शुभ प्रतीक अंक 786 तथा अर्द्धचन्द्र व सिक्खों का एक ओंकार है। इन मांगलिक चिन्हों को भवनों के बाहर द्वार पर लगाना चाहिए। ये शुभ तथा समृद्धि के सूचक हैं।

त्रिशूल

भगवान शंकर के प्रतीक त्रिशूल का चिन्ह् सभी प्रकार की कठिनाईयों को दूर करता है एवं सभी प्रकार की सुख–समृद्धि, धन व यश में वृद्धि करता है।

लाल रंग

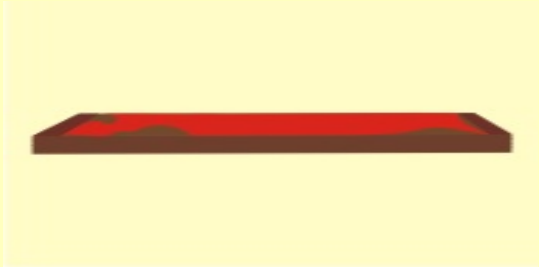

लाल रंग को मंगल का कारक माना जाता है। इस शुभ चिन्ह को लकड़ी के एक चौकोर टुकड़े को लाल रंग से रंगकर अथवा उसके उपर लाल रंग का कपड़ा चढ़ाकर बनाया जाता है। इस चिन्ह् को घर में रखने से किसी प्रकार बाहरी बाधा, बाहरी बीमारी, जादू, टोना आदि का प्रभाव घर के सदस्यों पर नहीं पड़ता है।

मकान कुण्डली (भाव चलित कुण्डली पर आधारित)

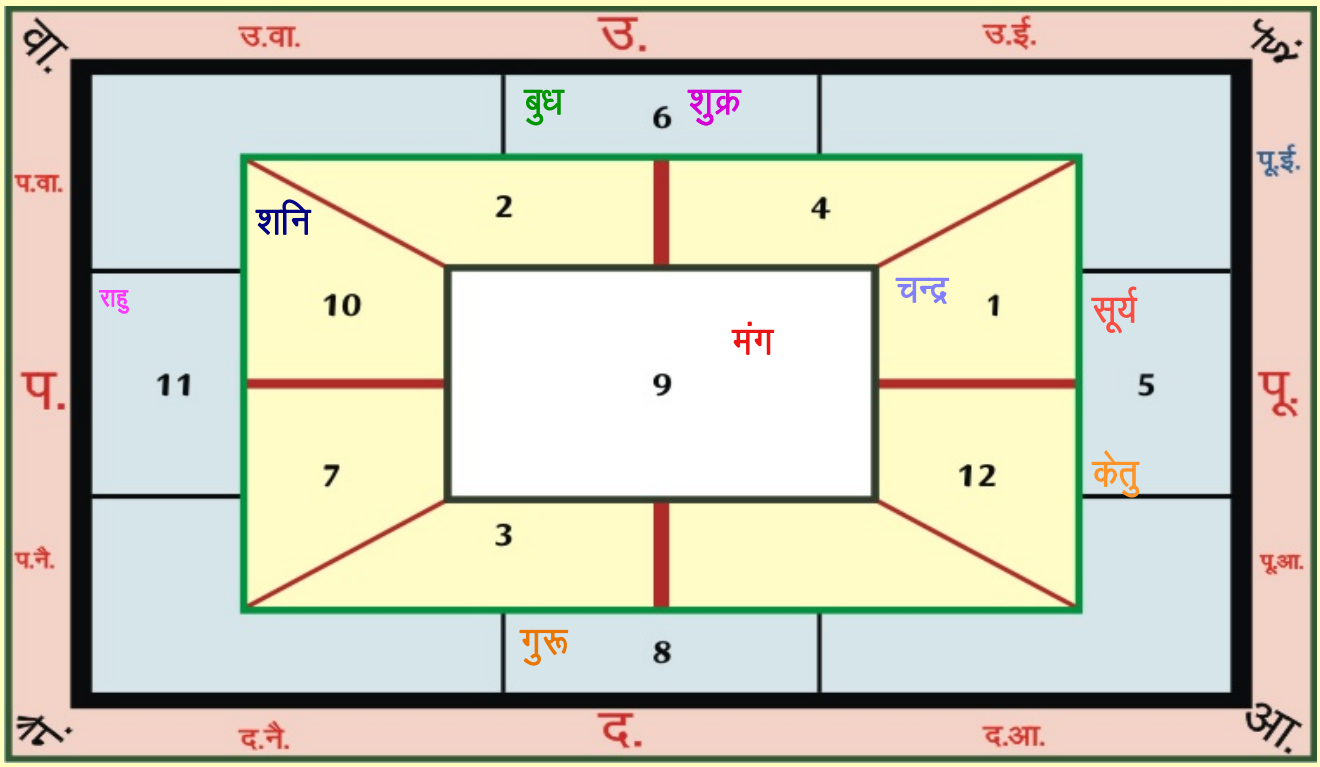

लग्न कुण्डली

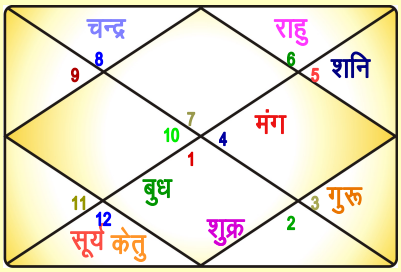

भाव चलित कुण्डली

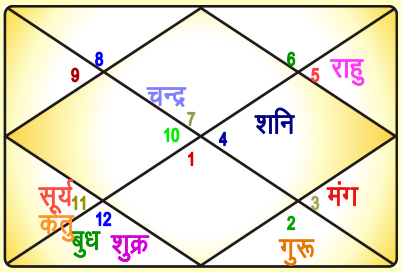

लाल किताब चन्द्र कुण्डली

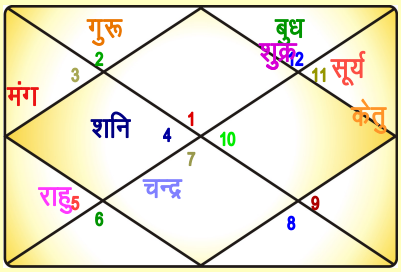

भाव चलित कुण्डली में ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भावस्थ	भावेश	प्रभाव	पक्का घर	भा0 का ग्रह	साथी ग्रह	कायम	धर्मी	सोया	विशेष
सूर्य	पंचम्	5	ग्रह		हाँ		हाँ			शुभ भाव में
चन्द्रमा	लग्न	4	राशि				हाँ		हाँ	शुभ भाव में
मंगल	नवम्	1, 8	राशि			गुरू			हाँ	शुभ भाव में
बुध	षष्टम्	3, 6	ग्रह				हाँ		हाँ	शुभ भाव में
गुरू	अष्टम्	9, 12	राशि			मंगल	हाँ		हाँ	शुभ भाव में
शुक्र	षष्टम्	2, 7	ग्रह						हाँ	अशुभ भाव में
शनि	दशम्	10, 11	ग्रह	हाँ	हाँ		हाँ			शुभ भाव में
राहु	एकादश		राशि						हाँ	अशुभ भाव में
केतु	पंचम्		राशि				हाँ			शुभ भाव में

ग्रहों की मकान कुण्डली में स्थिति के अनुसार मकान सुख

(भाव चलित कुण्डली पर आधारित)

लाल किताब के अनुसार, किसी भी कुण्डली में मकान से संबंधित कार्यों में शनि काबहुत बड़ा योगदान होता है। शनि की स्थिति से जातक के मकान के बारे में बहुत सारी जानकारियां प्राप्त होती हैं। मकान कब बनेगा एवं कैसा मकान शुभ फलदायक होगा, इसके लिए कुण्डली में शनि की स्थिति देखनी बहुत जरूरी हो जाती है। कुण्डली में उपस्थित शनि अपना शुभ–अशुभ प्रभाव मकान की नींव का प्रारंभ करने के 3 या 18 वर्ष बाद अवश्य देता है।

दसवें भाव (पश्चिमी वायव्य दिशा) में स्थित शनि का फल

सबसे पहले शनि के जो फल और उपाय दिए गये हैं उन्हे समझना है और करना है। अन्य ग्रहों के फल और उपाय पर शनि को वरीयता देना है।

आपकी कुण्डली में शनि दसवें भाव में स्थित है। आप जब तक मकान का निर्माण नहीं करते या बना–बनाया मकान नहीं खरीदते, तब तक आपको बहुत धन लाभ होगा। लेकिन जैसे ही आप मकान बनवाते हैं या खरीदते हैं, आपकी आमदनी रूक सकती है। आपकी आमदनी का स्रोत बाधित हो सकता है। 3 वर्षों के बाद फिर आपकी स्थिति ठीक होने लगेगी।

आपकी कुण्डली में शनि दसवें भाव में स्थित है। शुभ फलों में बढ़ोतरी एवं अशुभ फलों में कमी लाने के लिए तरस खाकर किसी की सहायता न करें। अपने मतलब के बगैर दूसरों की मदद करना आपके लिए नुकसानदायक हो सकता है।

आपकी कुण्डली में शनि दसवें भाव में स्थित है। आपके लिए स्वास्तिक का निशान एवं 111 नंबर शुभ

होंगे।

आपकी कुण्डली में शनि दसवें भाव में स्थित है। आपको अपने मकान निर्माण के लिए सरकारीविभागों से धन लाभ प्राप्त हो सकता है। आपको अपना मकान बनाने में आपके मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

यदि आपके मकान का निर्माण बीच में ही रूक गया है, तो आपकी कुण्डली में शनि अशुभ स्थिति में है। आपको शनि का उपाय करना चाहिए।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– अपने मकान का निर्माण कार्य 39वें वर्ष से प्रारंभ करें।
2– मकान निर्माण के समय से ही शनि को अशुभता से बचाने के लिए मांस, अंडे एवं शराब का सेवन न करें।
3– मकान का निर्माण कार्य कभी भी अधूरा न छोड़ें।
4– अपने मकान में गणपति की स्थापना करें एवं नित्य पूजा करें।
5– अपने मकान के आस–पास पीपल का वृक्ष लगायें एवं उसकी सेवा करें। वृक्ष इस प्रकार लगायें कि उसकी छाया मकान पर न पड़े या कम से कम पड़े।

पांचवें भाव (पूर्व दिशा) में स्थित सूर्य का फल

सूर्य को लालकिताब और वैदिक ज्योतिष में पालक कहा गया है। इसी कारण सूर्य को भी भगवान विष्णु के बराबर मान–सम्मान दिया जाता है और केवल इन्ही दोनों को नारायण कहा जाता है।

आपकी कुण्डली में सूर्य पांचवें भाव में स्थित है। मकान बनाने के लिए आपके लिए दो मार्ग

वाला वर्गाकार भूखंड, जिसका मुख्य द्वार पूर्व की ओर तथा दूसरा द्वार पश्चिम की ओर हो, बहुत बढ़िया होगा। यदि भूखंड में पश्चिम की ओर मार्ग न हो तो आपको चाहिए कि मकान का निर्माण करते समय पश्चिम की ओर कुछ स्थान छोड़ कर मकान के कमरों का निर्माण करें। आपको मकान का निर्माण प्रारंभ करते समय नींव का पूजन पूर्व दिशा में करना चाहिए।

अपने मकान में रसोई का निर्माण पूर्व दिशा में करवायें और उसका द्वार भी सीधा होकर पूर्व मेंही रखें, शुभ फल प्राप्त होगा। मकान निर्माण के दौरान जिस दिन से मकान की छत डालें, उसी दिन से लाल मुंह वाले बंदर को गुड़ एवं चना डालना शुरू करें। यदि आपका मकान आपके युवावस्था में ही बन गया है तो आपको संतान उत्पत्ति में देरी नहीं करनी चाहिए। यदिसन्तान सही समय पर पैदा हो गई तो आपकी रसोई में सदा अन्नपूर्णा की कृपा बनी रहेगी।

आपको अपने मकान की नींव में या बीम में सोने की बारीक तार डालनी चाहिए। इससे आपकोप्राप्त होने वाले कष्टों में बहुत कमी आएगी। आपको एवं आपके पारिवारिक सदस्यों को कभी दुर्भाग्य का सामना नहीं करना पड़ेगा। जब से आपका मकान बनना शुरू हो जाए, एस समय से मुर्गियों को भोजन के रूप में न लें। अपने मकान में या मकान की छत पर मुर्गियों एवं पक्षियों को पालें।

आपकी कुण्डली में गुरु शुभ अवस्था में है और सूर्य पांचवें भाव में स्थित है, अपने घर के पूर्व में मुख्य द्वार के पास ही नींबू का वृक्ष लगायें।

यदि आपके घर में पुत्र संतान जीवित नहीं बच रहा है तो अपने घर में आग की भट्टी स्थापित न करें। रात को सोते समय सफेद वस्तु, कपड़ा, दूध, शक्कर आदि सिरहाने रखकर सोयें और सुबह उसे दान कर दें। किसी धर्म स्थान के कुत्ते को रोटी दें।

आपकी कुण्डली में शनि, राहु या केतु की स्थिति या दृष्टि के कारण सूर्य अशुभ हो रहा है। अपने मकान का पूर्वी भाग खुला रखें, भाग्य आपका साथ देगा। घर में आटा पीसने की चक्कीरखें, रोजगार में बरकत होगी।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– आपको नित्य सूर्य देव की आराधना करनी चाहिए, क्योंकि शनि के अशुभ हो जाने के कारण आपके पुत्रो को कष्ट या रोग परेशान कर सकता है और किसी प्रकार का अनिष्ट भी हो सकता है।

पहले भाव (पूर्वी ईशान दिशा) में स्थित चन्द्रमा का फल

आपकी कुण्डली में चंद्रमा पहले भाव में स्थित है। अपने मकान में रसोई घर पूर्वी भाग में बनवायें। यदि आप अपना रसोई घर दक्षिणी भाग में बनवाते हैं, तो आपकी माता एवं परिवार की अन्य स्त्रियों के लिए यह कष्टकारी हो सकता है।

चंद्रमा माता का प्रतिनिधित्व करता है, चंद्रमा का पहले भाव में होना स्पष्ट संकेत करता है कि,आपके घर पर माता का प्रभाव एवं वर्चस्व अधिक होगा। आपको कभी भी अपने परिवार कीस्त्री या अन्य स्त्रियों का भी अपने मकान के अंदर या बाहर कहीं भी अपमान नहीं करना चाहिए। अपनी रसोई में कभी भी मांस, अंडा आदि नही बनवायें और नही बाहर से लाकर खायें। आपके लिए मकान में प्राकृतिक जल के स्रोत के लिए उत्तर का स्थान उपयुक्त एवं शुभहोगा।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा पहले भाव में स्थित है। आपको अपनी 24 वर्ष की आयु से पहले मकान नहीं बनवाना चाहिए, अन्यथा आपको धन हानि हो सकती है। आपकी माता एवं संतान के स्वास्थ्य पर भी इसका अशुभ प्रभाव पड़ सकता है। अशुभ फलों में कमी करने के लिए जमीन में सौंफ दबायें।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– रसोई में चन्द्रमा स्थापित करने के लिए कम से कम 20 किलो चावल रसोई में या अपने भण्डार गृह में रखें।
2– चावल को कभी भी काली दाल के साथ मिलाकर नहीं रखना चाहिए।
3– रसोई मे चांदी के बर्तनों का प्रयोग करें एवं खाने में भी चांदी के बर्तनों का प्रयोग शुभ फलदायक होगा।
4– यदि मकान के निर्माण का कार्य प्रारंभ करते समय माता या पत्नी का स्वास्थ्य खराब होता है, तो भूमि में मंगल की वस्तुओं को दबायें।
5– आपको अपने मकान में वर्षा का जल एकत्र करने का समुचित प्रबंध अवश्य करना चाहिए।

नौवें भाव (ब्रह्म स्थल (आँगन) दिशा) में स्थित मंगल का फल

आपकी कुण्डली में मंगल नौवें भाव में स्थित है। आपको अपने मकान की नींव अपनी भाभी केकर–कमलों से ही रखवानी चाहिए और मकान में गृह प्रवेश भी सबसे पहले भाभी का ही करायें। इससे आप पर एवं मकान में रहने वाले सभी सदस्यों पर भाग्य मेहरबान रहेगा।

यदि आपके बड़े भाई एवं भाभी दोनों आपके द्वारा निर्मित मकान में रहेंगे तो आपका कोई भी कार्य नहीं रूकेगा एवं जीवन में आपको कभी दुर्भाग्य का सामना नहीं करना पड़ेगा। यदि आपअपने पैतृक मकान में बड़े भाई एवं भाभी के साथ रहते हैं तो कभी उनके साथ बंटवारा न करें। यदि आपके बड़े भाई ही बंटवारा चाहते हैं तो आप स्वयं उन्हें समस्त पैतृक संपत्ति समर्पित कर दें, ताकि उनके साथ आपका संबंध खराब न हो। बड़े भाई एवं भाभी से संबंध खराब होने की स्थिति में आपका भाग्य दुर्भाग्य में बदल जाएगा।

आपकी कुण्डली में मंगल नौवें भाव में स्थित है। आपको अपना मकान बनाने के लिए पैतृक धन का लाभ प्राप्त होगा।

मंगल के कुछ सामान्य उपाय –

रोज सफेद मंजन से दांत साफ करें। अपने मकान में दूध, शक्कर, चावल, शुद्ध चांदी स्थापित करें। जहां तक संभव हो सके, चांदी के बर्तनों का प्रयोग करें। बड़गद के पेड़ की जड़ में दूध में मीठा डालकर चढ़ायें और गीली मिट्टी का तिलक करें, इससे पेट की समस्याओं से मुक्ति मिलेगी। यदि आपके मकान में आग लगने की घटनायें अक्सर हो रही हैं तो मकान की छत पर चीनी की बोरियां रखें, घोड़े के मुंह में देशी खाण्ड दें। मिट्टी के बर्तन में शहद भरकर श्मशान में दबायें। मृगछाला एवं चांदी का चौकोर टुकड़ा अपने पास या घर में रखें। अपने मकान के दक्षिणी दरवाजे पर लोहे की कील ठोकें, काले घोड़े की नाल न ठोकें। काली वस्तुओं से परहेज करें। ढाक का वृक्ष न लगायें और न ही उसका प्रयोग करें। चिड़ियों के लिए मीठी चीजें डालें। हाथी दांत की वस्तुयें अपने पास या घर में रखें। तांबा, गुड़, गेहूं, घोड़ा, सोना, चांदी आदि का संग्रह करना शुभ फलदायक होगा।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– अपनी भाभी को हमेशा सम्मान दें एवं उनकी सेवा करें।
2– बड़े भाई से कभी भी संबंध खराब न करें।
3– बुध से संबंधित वस्तुओं को मकान निर्माण से पहले कुएं में डालें। शुक्र से संबंधित वस्तुओं को नींव में या मकान के कच्चे हिस्से में दबायें।
4– मकान में प्रवेश से पहले चंद्रमा की वस्तुयें मंदिर या किसी धर्मस्थल में दान करें।

छठवें भाव (उत्तर दिशा) में स्थित बुध का फल

आपकी कुण्डली में बुध छठे भाव में स्थित है। आपको अपने मकान के निर्माण के दौरान पैसा काफी सावधानी पूर्वक खर्च करना चाहिए। आप मकान निर्माण के दौरान बहुत अपव्यय कर सकते हैं।

यदि आपकी कोई कन्या संतान है तो आपको अपने मकान के निर्माण के समय सबसे पहले कन्या संतान का आर्शीवाद अवश्य लेना चाहिए और उन्हें यथा संभव उपहार भी दें।

आपकी कुण्डली में बुध अशुभ है। आपको अपने मकान का मुख्य द्वार कभी भी उत्तर दिशा मेंनहीं रखना चाहिए और न ही अपनी कन्या का विवाह उत्तर दिशा में करें।

आपकी कुण्डली में बुध अशुभ स्थिति में है। आप विश्वासघात या धोखे से अर्जित धन से मकान का निर्माण कर सकते हैं।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– अपने मकान में प्रवेश द्वार से पहले फूलों के बाग लगायें, इससे आपको काफी शुभ फल प्राप्त

होगा।
2– यदि आपको बुध से संबंधित अशुभ फल प्राप्त हो रहा है तो दूध की कांच वाली बोतल अपने मकान में ऐसे जगह दबायें जहां चहलकदमी न होती हो।
3– गंगाजल की बोतल अपने मकान के उद्यान में दबाना लाभदायक होगा।
4– बृहस्पति से संबंधित वस्तुयें अपने मकान के अध्ययन कक्ष या पूजा कक्ष में स्थापित करें।

आठवें भाव (दक्षिण दिशा) में स्थित गुरू का फल

आपकी कुण्डली में बृहस्पति आठवें भाव में स्थित है। आपको अपने मकान के निर्माण के दौरानकिसी तरह की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। मकान बनाने के लिए भूखंड के चुनाव के समय कुछ परेशानी हो सकती है।

आपकी कुण्डली में केतु दूसरे भाव में स्थित है। अपने मकान में केतु की वस्तुओं को रखें या स्थापित करें, बृहस्पति का शुभ फल प्राप्त होगा।

अपना मकान बनाने के लिए पूर्वमुखी भूखंड ही लें। मकान का निर्माण शुरू करते समय ही दाईं ओर नींबू का वृक्ष लगायें और जब गृह प्रवेश करें तो सबसे पहले उस वृक्ष के नींबू मंदिर में दें और आगे भी देते रहें।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– यदि मकान के निर्माण के दौरान कोई बाधा या समस्या हो तो बृहस्पति एवं शुक्र की वस्तुयें मंदिर में दान करें, स्थिति में सुधार होगा।
2– यदि आपके दादा जीवित न हों तो भूखंड लेते ही गले में सोना धारण करें।
3– अपने मकान से किसी साधू या फकीर को खाली हाथ न जाने दें।
4– यदि आपके परिवार में कोई मृत्यु शैय्या पर हो तो उनके सामने न रहें, अन्यथा उनके प्राण नहीं निकलेंगे।

छठवें भाव (उत्तर दिशा) में स्थित शुक्र का फल

आपकी कुण्डली में शुक्र छठे भाव में स्थित है। कुछ संभावना है कि आपके मकान का निर्माण का कार्य बीच में रूक सकता है। आपको अपने मकान में सभी सांसारिक सुख प्राप्त होंगे।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– मकान के हर कमरे में चांदी की ठोस गोली स्थापित करें।
2– आपकी पत्नी को कभी भी मकान में नंगे पैर नहीं चलना चाहिए, जुराब या चप्पल पहने रहें।
3– आपकी पत्नी को अपने बालों में नित्य सोने की क्लिप लगानी चाहिए, इससे आपका मकान एवं कारोबार सदैव धन–धान्य से परिपूर्ण रहेगा।
4– अपने मकान में परस्त्री गमन से बचें और अपने चाल चलन को ठीक रखें।
5– नियमित अंतराल पर लाल दवाई (पोटैशियम परमैगनेट) अपने मकान के जल भण्डार में डालें, जिससे कि पत्नी एवं खुद का स्वास्थ्य कभी खराब नही होगा।

ग्यारहवें भाव (पश्चिम दिशा) में स्थित राहु का फल

आपकी कुण्डली में राहु ग्यारहवें भाव में स्थित है। जब तक आपके पिता जीवित रहेंगे, आपकोधन–संपत्ति एवं मकान का सुख प्राप्त होता रहेगा। पिता की मृत्यु के बाद अपने मकानमें बृहस्पति की वस्तुओं को स्थापित करना आपके लिए लाभदायक होगा।

यदि आपका मकान दक्षिणमुखी है तो भाग्य आपका साथ नहीं देगा।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– सफाई कर्मचारियों का कभी अपमान न करें एवं कभी–कभी उन्हें कुछ दान देते रहें।
2– बृहस्पति के उपाय के तौर पर अपने शरीर पर सोना धारण करें। केसर का तिलक लगायेंएवं मकान के मुख्य द्वार पर केसर की पुड़िया बांधें।
3– बृहस्पतिवार के दिन बृहस्पति की वस्तुयें दान करें एवं इस दिन आपके परिवार में कोई लहसुन–प्याज का सेवन न करे।
4– लोहे का बड़ा मुख्य द्वार लगवायें एवं अपने शरीर पर भी लोहा धारण करें। यदि संभव होतो अपने मकान में पानी पीने के लिए चांदी के गिलास का प्रयोग करें।

पांचवें भाव (पूर्व दिशा) में स्थित केतु का फल

आपकी कुण्डली में केतु पांचवें भाव में स्थित है। जब से आपके मकान का निर्माण कार्य शुरू होगा तब से आपके मकान के पास या भूखंड पर कोई कुत्ता अवश्य रहेगा, जो कि आपके लिए शुभ फलदायक होगा।

आपको अपने मकान में एक से अधिक संतान का सुख प्राप्त होगा। जैसे–जैसे आपके संतानों की वृद्धि होगी, आपके मकान के आकार में भी वृद्धि होती जाएगी।

आपको अपने मकान के किसी भी भाग में काले रंग का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

अपने मकान के उत्तर में केतु की वस्तुओं को स्थापित करना आपके लिए शुभ फलदायक

होगा।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– मकान के निर्माण से लगातार 43 दिनों तक चन्द्रमाएवं मंगल की वस्तुयें दान करें।
2– बृहस्पति के उपाय करते रहें।
3– अपने मकान में कद्दू की बेल लगायें, जिस पर फल आते हों और हर वर्ष कद्दू का दानमंदिर में अवश्य करें।
4– अपने पास हमेशा केसर रखें।

मकान में चित्र, खिलौने, रंग, प्रतीक और शुभ चिन्हो की स्थापना

(भाव चलित कुण्डली पर आधारित)

वास्तु के अनुसार यदि भवन में कोई वास्तुदोष हो तो उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए शुभ चिन्हों, विभिन्न चित्रों, रंगो, खिलौनों व प्रतीकों आदि का प्रयोग भी किया जासकता है। इन चिन्हों इत्यादि का प्रयोग घर में करने से अनेक प्रकार की बाधाएं दूर होती हैं एवं सुख–समृद्धि में वृद्धि होती है।

आपकी कुण्डली में बुध शुभ स्थिति में है। आपके लिए अपने मकान में तोता–मैना के खिलौने,हरियाली के चित्र रखना शुभ होगा।

आपकी कुण्डली में सूर्य शुभ स्थिति में है। आपके लिए अपने मकान में उगते हुए सूर्य का चित्रएवं बंदर का खिलौना रखना शुभ होगा।

आपकी कुण्डली में केतु शुभ स्थिति में है। आपके लिए अपने मकान में पालतू कुत्तों के चित्र रखना शुभ होगा।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा शुभ स्थिति में है। आपके लिए अपने मकान में दूध वाले वृक्षों के चित्र एवं खिलौने, जलाशय के चित्र रखना शुभ होगा।

मकान के मुख्य द्वार पर मांगलिक चिन्ह लगाना लाभदायक एवं उन्नतिकारक होता है। मकान के मुख्य द्वार पर स्वास्तिक, कलश, बेल–बूटें एवं हाथ का चिन्ह लगाना चाहिए। ध्यान रखें कि स्वास्तिक के चित्र में चार बिन्दु अवश्य हों, अन्यथा यह अधूरा माना जाता है। मछली का चित्र, दौड़ते हुए हिरण का चित्र, घुड़सवारी या हाथी पर सवारी का चित्र एवं कछुआ का चित्रशुभ रहता है।

मकान में दर्पण लगाने के लिए सबसे उपयुक्त दिशा उत्तर एवं पूर्व होता है। पश्चिम में दर्पण लगाने से सामान्य फल प्राप्त होता है। दक्षिण दिशा में दर्पण नहीं लगाना चाहिए। वॉश बेसिनके साथ भी दर्पण लगा सकते हैं। दर्पण को इस तरह रखें कि सूर्य की किरणें परावर्तित होकर आंखों पर न पड़े।

अपने मकान में घड़ी कभी भी ईशान, दक्षिण दिशा एवं अग्निकोण में नहीं लगायें, बाकी अन्य दिशायों में लगाना शुभ होता है। ध्यान रखें कि घड़ी कभी बंद न हो। यदि घड़ी खराब हो जाये, तो उसे तुरंत बनवायें या दूसरी घड़ी लगायें।

हल, घानी (कोल्हू) गाड़ी, अरहट (रेहट कुँयें से पानी निकालने का चरखा) काँटेवाले वृक्ष तथा पाँच प्रकार के उदुंबर (गूलर, बड़, पीपल, पलाश और कढंबर) और क्षीरतरु (जिस वृक्ष को काटने से दूध निकले), वीजोरा, केला, अनार, नींबू , आक, इमली, बबूल, बेर व पीले फूलवाले तथा पक्षियों के घोंसले वाली लकड़ी घर बनाने के काम में नहीं लेनी चाहिए।

ओम्

ओम् शब्द ब्रह्मा का प्रतीक माना जाता है। वेदों का शुभारम्भ भी इसी शब्द से हुआ है। इस शुभ चिन्ह् को हिन्दु धर्म में शक्ति का मूल स्रोत माना गया है। इसका प्रयोग भवनों में मंगल चिन्ह के रूप में किया जाता है। यही ब्रह्मा है। इस चिन्ह् के स्वरूप में कुछ परिवर्तन के साथ लगभग सभी धर्मों में अपनाया गया है। यह शब्द संपूर्ण ब्रह्मा, ब्रह्मांड, अपरिमित बल तथा प्रणव का प्रतीक होता है। इस शब्द को देखने व उच्चारण करने मात्र से ही मन की एकाग्रता हो जाती है तथा शांति का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। इस चिन्ह् को घर में उचित स्थान पर स्थापित करना शुभ फलदायक होता है।

मंगल कलश

मंगल कलश वैदिककाल से ही जलपूरित एवं आम्रपत्र, पुष्प तथा नारियल से ढँका शुभ मंगल कलश शुभता, संपन्नता तथा समृद्धि का प्रतीक माना जाता रहा है, क्योंकि सृष्टि का उद्‌भव जल से हुआ है, इसीलिए ब्रह्मांड की उत्पत्ति का जल ही प्रतीक है। सभी धर्मशास्त्रों में जल से भरे हुए कुंभ को जीवन की पूर्णता का प्रतीक माना गया है। इसको भवन में स्थापित करने से सदैव घर की सुख–शांति बनी रहती है एवं धन–संपदा में वृद्धि होती है। इसी लिए नए घरमें प्रवेश करते समय सबसे पहले जल से भरे कुंभ को स्थापित किया जाता है।

स्वास्तिक

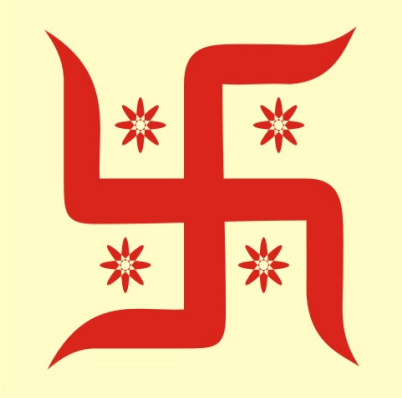

स्वास्तिक अति प्राचीन काल से ही स्वास्तिक को मांगलिक चिन्ह के रूप में प्रयोग किया जाताहै। धार्मिक मतानुसार इस चिन्ह को जीत का प्रतीक माना जाता है। इस चिन्ह को शुभ माना जाता है और भवन के मुख्य द्वार के दोनों ओर बनाया जाता है; ताकि अनिष्टकारी दृष्टिसे भवन की रक्षा होती रहे। घर में स्वास्तिक का चिन्ह स्थापित करने से पारिवारिक जनोंको उनके कार्यों में सफलता प्राप्त होती है।

पंचागुलक हाथ

पंचागुलक हाथ मांगलिक चिन्ह पंचागुलक हाथ गृह प्रवेश पुत्रजन्म तथा विवाह के शुभ अवसरपर हल्दी व चावल की पीठी से पींठ पर लगाने की काफी पुरानी परम्परा चली आ रही है। पाँच की संख्या पाँच तत्त्वों की निरंतरता, अनश्वरता का प्रतीक है। हाथ को कर्म का प्रतीकमाना गया है, यह देवताओं की अभय मुद्रा व आशीष मुद्रा का प्रतीक है। भवन में हाथ को मांगलिक चिन्ह के रूप में स्थापित करके, समृद्धि पंच महाभूतों एवं कर्म की महत्ता को प्रकट किया जाता है। बौद्ध धर्म में तो हाथ की मुद्राओं द्वारा ही विभिन्न मनोदिशाओं को संकेत रूप में बताया गया है।

मीन (मछली)

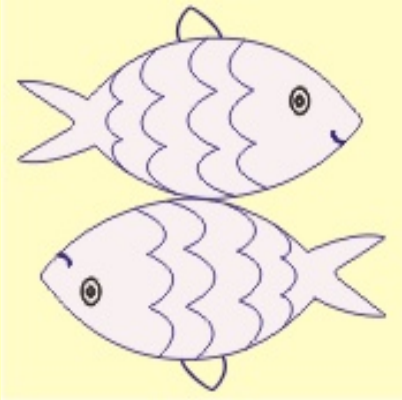

मीन (मछली) को सच्चे प्रेम की प्रतीक माना गया है। यात्रा शुरू करने से पहले मत्स्य दर्शन कार्य सफलता का सूचक व शुभ माना जाता है। दशहरा पर्व पर मत्स्य दर्शन की प्राचीन परम्परा हैं भवन के मुख्य द्वार पर जुड़वाँ मछलियों के चित्र को बनाने की परम्परा है। इसके पीछे यही भावना जुड़ी है कि यदि मत्स्य के साक्षात् दर्शन नहीं होते, तो उसके चित्र में ही दर्शन हो जायें। इसे मुख्य द्वार पर मांगलिक चिन्ह के रूप में अंकित करने का प्रचलन शुभता का द्योतक है।

धार्मिक शुभ प्रतीक

ईसाइयों का शुभ प्रतीक चिन्ह क्रॉस तथा मुस्लिमों का शुभ प्रतीक अंक 786 तथा अर्द्धचन्द्र व सिक्खों का एक ओंकार है। इन मांगलिक चिन्हों को भवनों के बाहर द्वार पर लगाना चाहिए। ये शुभ तथा समृद्धि के सूचक हैं।

त्रिशूल

भगवान शंकर के प्रतीक त्रिशूल का चिन्ह् सभी प्रकार की कठिनाईयों को दूर करता है एवं सभी प्रकार की सुख–समृद्धि, धन व यश में वृद्धि करता है।

लाल रंग

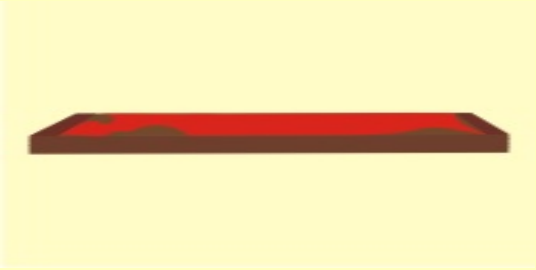

लाल रंग को मंगल का कारक माना जाता है। इस शुभ चिन्ह को लकड़ी के एक चौकोर टुकड़े को लाल रंग से रंगकर अथवा उसके उपर लाल रंग का कपड़ा चढ़ाकर बनाया जाता है। इस चिन्ह् को घर में रखने से किसी प्रकार बाहरी बाधा, बाहरी बीमारी, जादू, टोना आदि का प्रभाव घर के सदस्यों पर नहीं पड़ता है।

मकान कुण्डली (लाल किताब चन्द्र कुण्डली पर आधारित)

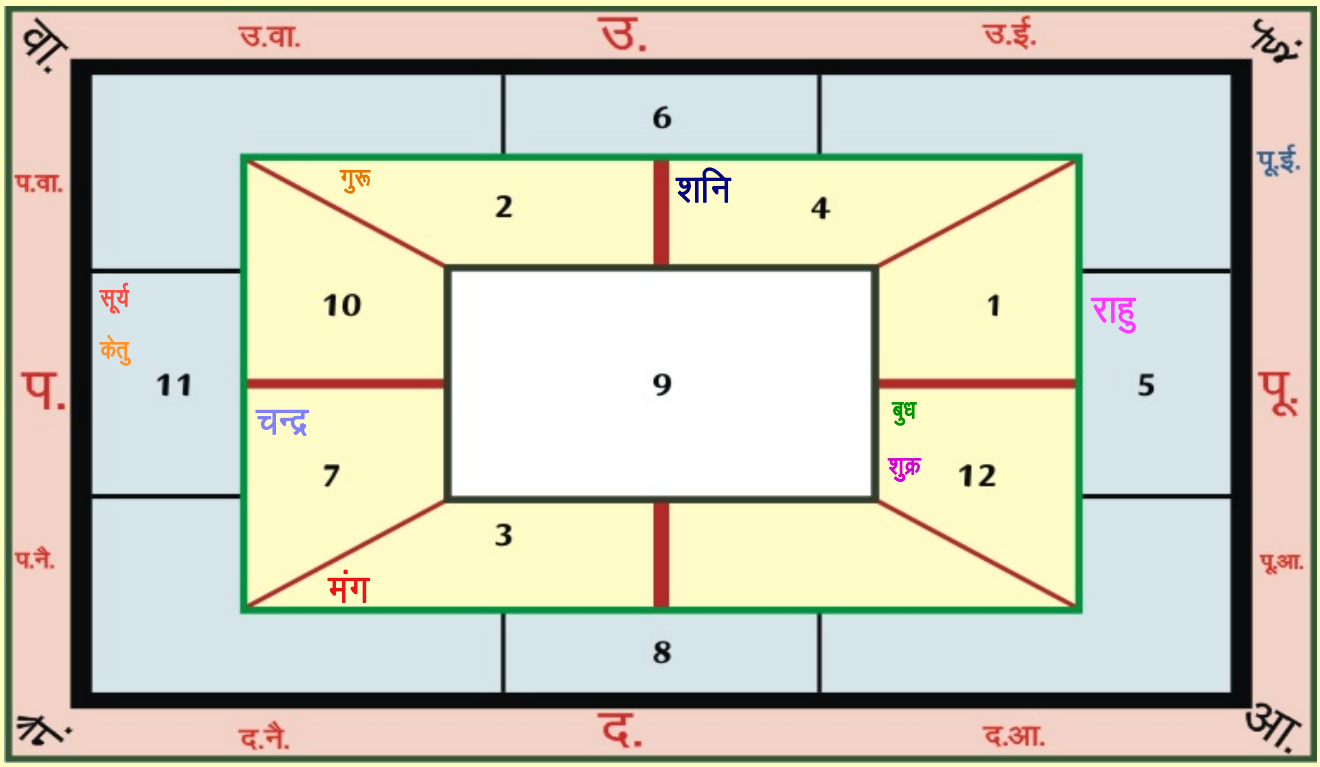

लग्न कुण्डली

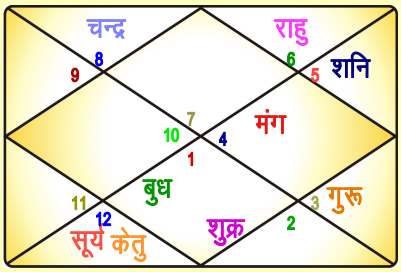

भाव चलित कुण्डली

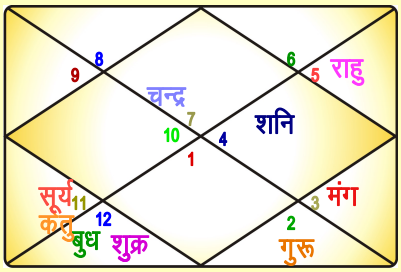

लाल किताब चन्द्र कुण्डली

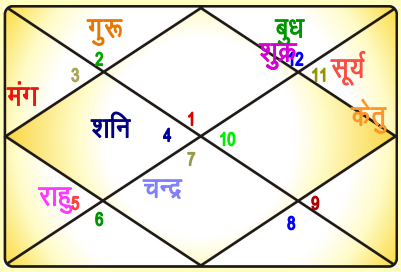

लाल किताब चन्द्र कुण्डली में ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भावस्थ	भावेश	प्रभाव	पक्का घर	भा0 का ग्रह	साथी ग्रह	कायम	धर्मी	सोया	विशेष
सूर्य	एकादश	5	राशि				हाँ		हाँ	शुभ भाव में
चन्द्रमा	सप्तम्	4	राशि				हाँ		हाँ	शुभ भाव में
मंगल	तृतीय	1, 8	ग्रह	हाँ			हाँ			शुभ भाव में
बुध	द्वादश	3, 6	ग्रह						हाँ	अशुभ भाव में
गुरू	द्वितीय	9, 12	ग्रह	हाँ			हाँ			शुभ भाव में
शुक्र	द्वादश	2, 7	ग्रह				हाँ		हाँ	शुभ भाव में
शनि	चतुर्थ	10, 11	राशि						हाँ	अशुभ भाव में
राहु	पचम्		राशि						हाँ	अशुभ भाव में
केतु	एकादश		राशि						हाँ	अशुभ भाव में

ग्रहों की मकान कुण्डली में स्थिति के अनुसार मकान सुख

(लाल किताब चन्द्र कुण्डली पर आधारित)

लाल किताब के अनुसार, किसी भी कुण्डली में मकान से संबंधित कार्यों में शनि काबहुत बड़ा योगदान होता है। शनि की स्थिति से जातक के मकान के बारे में बहुत सारी जानकारियां प्राप्त होती हैं। मकान कब बनेगा एवं कैसा मकान शुभ फलदायक होगा, इसके लिए कुण्डली में शनि की स्थिति देखनी बहुत जरूरी हो जाती है। कुण्डली में उपस्थित शनि अपना शुभ–अशुभ प्रभाव मकान की नींव का प्रारंभ करने के 3 या 18 वर्ष बाद अवश्य देता है।

चौथे भाव (उत्तरी ईशान दिशा) में स्थित शनि का फल

सबसे पहले शनि के जो फल और उपाय दिए गये हैं उन्हे समझना है और करना है। अन्य ग्रहों के फल और उपाय पर शनि को वरीयता देना है।

आपकी कुण्डली में शनि चौथे भाव में स्थित है। आपको कभी भी अपने नाम से जमीन या मकान नहीं खरीदना चाहिए, अन्यथा आपकी माता, सास एवं ननिहाल पक्ष को अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। आपसे संबंधित स्त्रियों एवं उनसे जुड़े परिवारों को कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। आपके लिए किराये के मकान में रहना ही उचित होगा। यदि आपकी पत्नी याबच्चों की कुण्डली में शनि शुभ स्थिति में है, तो उनमें से किसी के नाम से भूखंड खरीद कर मकान का निर्माण भी उन्हीं के नाम से करना चाहिए और भूमि–पूजन एवं द्वार पूजन में स्वयं न बैठ कर जिनके नाम से मकान का निर्माण हो रहा है उन्हें बैठायें।

आपकी कुण्डली में शनि चौथे भाव में स्थित है। मकान बनने के बाद आपकी मानसिक स्थिति खराब हो सकती है। आपके परिवार की स्त्रियों एवं उनसे जुड़े लोगों पर अशुभ प्रभाव पड़ सकता है। शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी करने के लिए कुऐं में दूध

गिरायें।

आपकी कुण्डली में शनि चौथे भाव में स्थित है। आपको वाहन सुख जल्द प्राप्त होगा, लेकिन मकान सुख देरी से प्राप्त हो सकता है। मकान बनने के बाद माता, सास, दादी या मामा को कष्ट हो तो सफेद ज्वार कबूतरों को देना, सफेद वस्तुओं का दान करना एवं शिव की पूजा करना लाभदायक होगा।

आपकी कुण्डली में शनि चौथे भाव में स्थित है। सांप मारना या मरवाना, सांप का तेल बेचना आदि आपकी संतान सुख में कमी कर सकता है। रात में मकान निर्माण शुरू करना या गृह प्रवेश करना भी उचित नहीं होगा।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– सांप को दूध पिलाना, मछली, भैंस, कौआ तथा मजदूरों की सेवा करना लाभदायक होगा।

ग्यारहवें भाव (पश्चिम दिशा) में स्थित सूर्य का फल

सूर्य को लालकिताब और वैदिक ज्योतिष में पालक कहा गया है। इसी कारण सूर्य को भी भगवान विष्णु के बराबर मान–सम्मान दिया जाता है और केवल इन्ही दोनों को नारायण कहा जाता है।

आपकी कुण्डली में सूर्य ग्यारहवें भाव में स्थित है। आपको मकान बनाने के लिए कभी भी षट्कोण या अष्ट्कोण भूमि नहीं लेनी चाहिए। मकान निर्माण के दौरान इस बात का खास ख्याल रखें कि किसी भी दरवाजे की चौखट तिरछी न

हो।

मकान के लिए जमीन लेते समय ध्यान रखें कि भूमि पूर्वमुखी एवं समतल हो। आपको भूमि का चयन ऐसी जगह करनी चाहिए, जहाँ कहीं आस–पास वधशाला न हो और मांस न पकताहो। आपको अपने भूखंड में और मकान निर्माण पूर्ण होने पर भी कभी भी मांस आदि कासेवन नहीं करना चाहिए।

आप मकान के अन्दर मंदिर का निर्माण करा सकते हैं। मंदिर में विष्णु की प्रतिमा पूर्व में स्थापित करें।

आपकी कुण्डली में सूर्य ग्यारहवें भाव में स्थित है तथा शनि अशुभ भाव में है। आपको मकान निर्माण में जितने लोहे की जरूरत है, उतना लोहा ही अपने भूखंड पर रखें। जरूरत से ज्यादालोहा न रखें, अन्यथा आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकता है।

आपकी कुण्डली में सूर्य ग्यारहवें भाव में स्थित है। यदि आपके मकान के सामने कोई चौराहा है और उसके साथ लगा कोई वृक्ष है तो आपको बुरे सपने आ सकते हैं। आप चिड़चिड़े हो जायेंगे।

यदि आपके घर में पुत्र संतान जीवित नहीं बच रहा है तो अपने घर में आग की भट्टी स्थापित न करें। रात को सोते समय सफेद वस्तु, कपड़ा, दूध, शक्कर आदि सिरहाने रखकर सोयें और सुबह उसे दान कर दें। किसी धर्म स्थान के कुत्ते को रोटी दें।

आपकी कुण्डली में बुध अशुभ भाव में है। अपने मकान में पीतल के पुराने बर्तन कायम रखें, उन्हें नहीं बेचें।

आपकी कुण्डली में सूर्य दसवें या ग्यारहवें भाव में स्थित है। अपने घर में जमीन के अंदर मिट्टी के बर्तन में नदी, दरिया या कुऐं का पानी 40–43 दिनों तक कायम करें।

आपकी कुण्डली में शनि, राहु या केतु की स्थिति या दृष्टि के कारण सूर्य अशुभ हो रहा है। अपने मकान का पूर्वी भाग खुला रखें, भाग्य आपका साथ देगा। घर में आटा पीसने की चक्कीरखें, रोजगार में बरकत होगी।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– रुद्राक्ष का पौधा घर के उत्तर में लगायें।
2– मकान की नींव भरवाते समय नींव में गुरु की वस्तुयें स्थापित करें।
3– मकान के पूर्व में मुख्य द्वार के दाईं ओर स्वास्तिक का चिन्ह बनवायें।
4– मकान निर्माण शुरू करने के एक रात पहले अपने सिहराने पांच मूली या बादाम रख कर सोयें और सुबह किसी मंदिर या धर्म स्थान में दें।

सातवें भाव (पश्चिमी नैऋत्य दिशा) में स्थित चन्द्रमा का फल

आपकी कुण्डली में चंद्रमा सातवें भाव में स्थित है। आपके मकान के निर्माण में आपकी पत्नी का समुचित योगदान होगा। आपके मकान में निर्माण से लेकर प्रवेश तक पत्नी का पूर्ण प्रभाव व हस्तक्षेप हो सकता है। आपकी पत्नी की बात पूर्ण प्रभावी होगी।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा सातवें भाव में स्थित है। आपको रसोई में चावल का भंडार दक्षिण दिशा में रखना चाहिए और दूध एवं इससे बने पदार्थों को भी दक्षिण में ही रखना शुभ होगा।अपने मकान के दाईं ओर खिरनी का पौधा लगाना चाहिए, इससे चंद्रमा की अशुभता कम होगी एवं शुभता में बढ़ोतरी होगी।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– यदि आपके विवाह से पूर्व ही मकान का निर्माण हो गया हो तो अपने शयनकक्ष में या घरके हर एक कक्ष में चांदी की वस्तुओं को अवश्य स्थापित करें।
2– जब आप विवाह करके अपने घर में वापस आयें तो अपने ससुराल से स्त्री के संग चांदी सेनिर्मित वस्तुओं को लाकर अवश्य स्थापित करें।

तीसरे भाव (दक्षिणी नैऋत्य दिशा) में स्थित मंगल का फल

आपकी कुण्डली में मंगल तीसरे भाव में स्थित है। आपके मकान में आपके भाई–बहनों के कारण हमेशा खुशी बनी रहेगी। यदि आप भी अपने भाई–बहनों का एक अच्छे अभिभावक कीतरह ख्याल रखेंगे तो भाग्य आप पर हमेशा मेहरबान रहेगा।

यदि आपका मकान शेरमुखी (आगे से चौड़ा और पीछे से संकरा) है तो आप सेना या पुलिस में कार्यरत हो सकते हैं। यदि आप उदार स्वभाव वाले होंगे तो आपके मकान का निर्माण करनेवाले मजदूर एवं अन्य संबंधित लोग दिल लगाकर निर्माण कार्य में लगे रहेंगे एवं आपके लिए कोई समस्या खड़ी नहीं करेंगे।

आपको उत्तरी भाग में अध्ययन कक्ष का निर्माण कराना चाहिए। उत्तर एवं दक्षिण दिशा में सुरक्षा के लिए ऊँची चारदीवारी बनवायें।

आपको चालबाजी करने से बचना चाहिए, खास कर मकान निर्माण के दौरान किसी के साथ फरेब न करें, अन्यथा आप आजीवन मंगल के अशुभ प्रभावों से पीड़ित रह सकते हैं।

मंगल के कुछ सामान्य उपाय –

रोज सफेद मंजन से दांत साफ करें। अपने मकान में दूध, शक्कर, चावल, शुद्ध चांदी स्थापित करें। जहां तक संभव हो सके, चांदी के बर्तनों का प्रयोग करें। बड़गद के पेड़ की जड़ में दूध में मीठा डालकर चढ़ायें और गीली मिट्टी का तिलक करें, इससे पेट की समस्याओं से मुक्ति मिलेगी। यदि आपके मकान में आग लगने की घटनायें अक्सर हो रही हैं तो मकान की छत पर चीनी की बोरियां रखें, घोड़े के मुंह में देशी खाण्ड दें। मिट्टी के बर्तन में शहद भरकर श्मशान में दबायें। मृगछाला एवं चांदी का चौकोर टुकड़ा अपने पास या घर में रखें। अपने मकान के दक्षिणी दरवाजे पर लोहे की कील ठोकें, काले घोड़े की नाल न ठोकें। काली वस्तुओं से परहेज करें। ढाक का वृक्ष न लगायें और न ही उसका प्रयोग करें। चिड़ियों के लिए मीठी चीजें डालें। हाथी दांत की वस्तुयें अपने पास या घर में रखें। तांबा, गुड़, गेहूं, घोड़ा, सोना, चांदी आदि का संग्रह करना शुभ फलदायक होगा।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– मकान का निर्माण कराते समय सबसे विन्रम व्यवहार करें। किसी के साथ भी हठ या अकड़पन के साथ पेश नहीं आयें।
2– अपने मकान या बाहर भी मकान के लिए भूखंड खरीदने के बाद से या निर्मित मकान लेनेके बाद आवारगी व अय्याशी न करें।
3– अपने मकान में हमेशा हाथीदांत या उससे निर्मित वस्तुओं को रखें।

बारहवें भाव (पूर्वी आग्नेय दिशा) में स्थित बुध का फल

आपको अपने मकान के लिए भूखंड लेने से पहले यह अवश्य देख लेना चाहिए कि, भूखंड में कहीं दीमक या सीलन आदि तो नहीं है, क्योंकि आपके मकान में इनका प्रकोप हो सकता है।

आपको अपने मकान का निर्माण शुरू करने से पहले ही मकान की नींव में केसर, हल्दी एवं फिटकरी का जल अवश्य डालना चाहिए एवं दीमक आदि से बचने के लिए आधुनिक उपाय भीकरना चाहिए।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– अपने मकान में काले–सफेद कुत्ते पालें।
2– गणपति की स्थापना कर नित्य उनकी पूजा करें।
3– मकान के अंदर किसी गमले या कच्चे स्थान पर दूब घास अवश्य लगायें।
4– मकान में चौखट लगवाते समय हर चौखट पर पीला धागा अवश्य बांधें।
5– मकान में करने प्रवेश से पहले खाली घड़ा ढक्कन सहित बहते पानी में बहायें।

दूसरे भाव (उत्तरी वायव्य दिशा) में स्थित गुरू का फल

आपकी कुण्डली में बृहस्पति दूसरे भाव में स्थित है। आपके अपने मकान में धार्मिक कार्य अक्सर होते रहेंगे। आप स्वयं धर्म के रास्ते पर चलने वाले महात्मा किस्म के व्यक्ति होंगे।

आपको अपने मकान में किसी भी तरह की तांत्रिक या अघोरी पूजा नहीं करनी चाहिए और नही ऐसा भूखंड लेना चाहिए जिस पर इस तरह की कोई पूजा हुई हो, अन्यथा आपको बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा एवं आपको मृत्युतुल्य कष्ट भी हो सकता है।

आपको अपने मकान में काफी धन की प्राप्ति होगी, लेकिन आपका धन बहुत तेजी से खत्म भीहो सकता है।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति दूसरे भाव में स्थित है तथा सूर्य शुभ है। यदि आपका जन्म गरीबपरिवार में भी होता है तो भी आप अपनी मेहनत एवं पुरूषार्थ से सुन्दर मकान का निर्माणकरायेंगे। आपको अपने मकान आदि के निर्माण के लिए दूसरे लोगों से भी भरपूर मदद प्राप्त होगी। आप अपने मकान में मिट्टी से बनी सुंदर कला कृतियों का प्रयोग करेंगे और स्त्रियों के लिए उपयोगी एवं प्रयोग में लाने वाली वस्तुओं का व्यवसाय अपने मकान से कर सकते हैं।

आपको अपने मकान में सूर्य के प्रकाश की समुचित व्यवस्था करनी चाहिए, क्योंकि सूर्य नारायण हैं और नारायण के प्रभाव से मकान में सुख–शांति बनी रहेगी।

अपने मकान में बृहस्पति की शुभता को बढ़ाने के लिए बृहस्पति की वस्तुओं का प्रयोग करें औरकेतु का उपाय करें।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति दूसरे भाव में स्थित है। आपके लिए कच्चे मकान बनाना काफी शुभ फलदायक होगा। यदि कच्चा मकान बनाना संभव न हो तो अपने मकान में कुछ भाग कच्चा अवश्य रखें।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– मकान में प्रवेश के दिन से लगातार 43 दिनों तक बृहस्पति की वस्तुयें पीले कपड़े में बांध कर मंदिर में दें।
2– अपने मकान में अतिथियों के सम्मान में कोई कमी नहीं करें और उनके रहने एवं आतिथ्य की पूरी व्यवस्था करें।
3– यदि मकान में कहीं से सर्प आ जाए तो उसे नहीं मारें और यदि कोई सपेरा साँप को आपके द्वार पर लाये तो उसे दूध अवश्य पिलायें।
4– बृहस्पति की वस्तुयें अपने मकान में स्थापित करें और बृहस्पति के उपाय करते रहें।

बारहवें भाव (पूर्वी आग्नेय दिशा) में स्थित शुक्र का फल

आपकी कुण्डली में शुक्र बारहवें भाव में स्थित है। आपको मकान का निर्माण अपनी पत्नी के नाम पर ही करना चाहिए। निर्माण के दौरान अपनी पत्नी से विचार–विमर्श अवश्य करते रहें।

आप समाज में एक कवि, लेखक या प्रचारक के रूप में प्रसिद्ध होंगे। आपके मकान में विद्वानों का आना–जाना लगा रहेगा। आप एक बड़ी जायदाद के स्वामी होंगे।

आपकी कुण्डली में शुक्र बारहवें भाव में स्थित है तथा बुध अशुभ भाव में है। अपनी पत्नी के साथ अपने मकान में आपका संबंध मधुर नहीं रह सकता है।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– अपने मकान में सभी स्त्रियों को पूर्ण मान–सम्मान दें।
2– अपनी पत्नी के हाथों मकान निर्माण के एक दिन पहले नीला फूल वीरान भूमि में दबवायें।
3– राहु की वस्तुओं का साथ एवं सम्बन्ध न रखें और उन्हें कभी भी अपने मकान में स्थापित न करें।
4– नये निर्मित मकान में प्रवेश से पहले या तो गाय पालें या पत्नी के कर–कमलों से दान करायें।

पांचवें भाव (पूर्व दिशा) में स्थित राहु का फल

आपकी कुण्डली में राहु पांचवें भाव में स्थित है। आपको उत्तम मकान, संतान, माता एवं सरकारी विभागों से लाभ का सुख प्राप्त होता रहेगा।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– अपने मकान में गृह प्रवेश करते समय अपनी पत्नी के संग पुनः फेरे लें, इससे राहु की अशुभता दूर होगी।
2– अपने मकान में चांदी का ठोस हाथी रखें।
3– अपने मकान में मांस–मदिरा का सेवन न करें, पराई औरतों के साथ अनैतिक संबंध न रखें।
4– मकान के प्रवेश द्वार की दहलीज के नीचे चांदी की पत्तर दबायें।

ग्यारहवें भाव (पश्चिम दिशा) में स्थित केतु का फल

आपकी कुण्डली में केतु ग्यारहवें भाव में स्थित है। आपको मकान, धन–संपत्ति एवं पत्नी का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। आपके मकान में अन्न–धन की कभी कमी नहीं होगी।

आपकी कुण्डली में केतु ग्यारहवें भाव में स्थित है तथा शनि अशुभ भाव में है। आपको अपना मकान एवं संतान प्राप्ति में बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– काला कुत्ता पालें।
2– 11 मूली अपने मकान के निर्माण कार्य शुरू होने के दिन से रात में अपनी पत्नी के सिराहने रखें और सुबह को मंदिर में दें।
3– अपने मकान में पन्ना का गणेश जी अवश्य स्थापित करें।

मकान में चित्र, खिलौने, रंग, प्रतीक और शुभ चिन्हो की स्थापना

(लाल किताब चन्द्र कुण्डली पर आधारित)

वास्तु के अनुसार यदि भवन में कोई वास्तुदोष हो तो उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए शुभ चिन्हों, विभिन्न चित्रों, रंगो, खिलौनों व प्रतीकों आदि का प्रयोग भी किया जासकता है। इन चिन्हों इत्यादि का प्रयोग घर में करने से अनेक प्रकार की बाधाएं दूर होती हैं एवं सुख–समृद्धि में वृद्धि होती है।

आपकी कुण्डली में शनि अशुभ भाव में है। आपके लिए अपने मकान में सांप, कौवा, मगरमच्छ,जहरीले जानवरों के चित्र एवं खिलौने रखना तथा मछली पालना शुभ होगा।

आपकी कुण्डली में सूर्य शुभ स्थिति में है। आपके लिए अपने मकान में उगते हुए सूर्य का चित्रएवं बंदर का खिलौना रखना शुभ होगा।

आपकी कुण्डली में शुक्र शुभ स्थिति में है। आपके लिए अपने मकान में गाय, बैल के मिट्टी के खिलौने रखना शुभ होगा। लकड़ी के खिलौने नहीं रखें।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा शुभ स्थिति में है। आपके लिए अपने मकान में दूध वाले वृक्षों के चित्र एवं खिलौने, जलाशय के चित्र रखना शुभ होगा।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति एवं शुक्र शुभ स्थिति में हैं। आपके लिए अपने मकान में गाय, बैलएवं घोड़े के चित्र एवं खिलौने रखना शुभ होगा।

मकान के मुख्य द्वार पर मांगलिक चिन्ह लगाना लाभदायक एवं उन्नतिकारक होता है। मकान के मुख्य द्वार पर स्वास्तिक, कलश, बेल–बूटें एवं हाथ का चिन्ह लगाना चाहिए। ध्यान रखें कि स्वास्तिक के चित्र में चार बिन्दु अवश्य हों, अन्यथा यह अधूरा माना जाता है। मछली का चित्र, दौड़ते हुए हिरण का चित्र, घुड़सवारी या हाथी पर सवारी का चित्र एवं कछुआ का चित्रशुभ रहता है।

मकान में दर्पण लगाने के लिए सबसे उपयुक्त दिशा उत्तर एवं पूर्व होता है। पश्चिम में दर्पण लगाने से सामान्य फल प्राप्त होता है। दक्षिण दिशा में दर्पण नहीं लगाना चाहिए। वॉश बेसिनके साथ भी दर्पण लगा सकते हैं। दर्पण को इस तरह रखें कि सूर्य की किरणें परावर्तित होकर आंखों पर न पड़े।

अपने मकान में घड़ी कभी भी ईशान, दक्षिण दिशा एवं अग्निकोण में नहीं लगायें, बाकी अन्य दिशायों में लगाना शुभ होता है। ध्यान रखें कि घड़ी कभी बंद न हो। यदि घड़ी खराब हो जाये, तो उसे तुरंत बनवायें या दूसरी घड़ी लगायें।

हल, घानी (कोल्हू) गाड़ी, अरहट (रेहट कुँयें से पानी निकालने का चरखा) काँटेवाले वृक्ष

तथा पाँच प्रकार के उदुंबर (गूलर, बड़, पीपल, पलाश और कढंबर) और क्षीरतरु (जिस वृक्ष को काटने से दूध निकले), वीजोरा, केला, अनार, नींबू , आक, इमली, बबूल, बेर व पीले फूलवाले तथा पक्षियों के घोंसले वाली लकड़ी घर बनाने के काम में नहीं लेनी चाहिए।

आपकी कुण्डली में बुध अशुभ भाव में है। आपके लिए अपने मकान में हरियाली के चित्र या बकरी के खिलौने रखना शुभ होगा।

आपकी कुण्डली में राहु पांचवे भाव में स्थित है। आपको अपने मकान में प्रवेश करने के समय पहली देहली के नीचे चांदी के पत्तर या नाग–नागिन दबाना चाहिए, इससे संतान को शुभ फल प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में शुक्र शुभ भाव में एवं शनि अशुभ भाव में है। आपके लिए अपने मकान में फूल वाले पौधे एवं चित्र लगाना, मछली का चित्र लगाना या मछली पालना एवं दरवाजे पर घोड़े की नाल ठोकना शुभ फलदायक होगा।

ओम्

ओम् शब्द ब्रह्मा का प्रतीक माना जाता है। वेदों का शुभारम्भ भी इसी शब्द से हुआ है। इस शुभ चिन्ह् को हिन्दु धर्म में शक्ति का मूल स्रोत माना गया है। इसका प्रयोग भवनों में मंगल चिन्ह के रूप में किया जाता है। यही ब्रह्मा है। इस चिन्ह् के स्वरूप में कुछ परिवर्तन के साथ लगभग सभी धर्मों में अपनाया गया है। यह शब्द संपूर्ण ब्रह्मा, ब्रह्मांड, अपरिमित बल तथा प्रणव का प्रतीक होता है। इस शब्द को देखने व उच्चारण करने मात्र से ही मन की एकाग्रता हो जाती है तथा शांति का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। इस चिन्ह् को घर में उचित स्थान पर स्थापित करना शुभ फलदायक होता है।

मंगल कलश

मंगल कलश वैदिककाल से ही जलपूरित एवं आम्रपत्र, पुष्प तथा नारियल से ढँका शुभ मंगल कलश शुभता, संपन्नता तथा समृद्धि का प्रतीक माना जाता रहा है, क्योंकि सृष्टि का उद्‌भव जल से हुआ है, इसीलिए ब्रह्मांड की उत्पत्ति का जल ही प्रतीक है। सभी धर्मशास्त्रों में जल से भरे हुए कुंभ को जीवन की पूर्णता का प्रतीक माना गया है। इसको भवन में स्थापित करने से सदैव घर की सुख–शांति बनी रहती है एवं धन–संपदा में वृद्धि होती है। इसी लिए नए घरमें प्रवेश करते समय सबसे पहले जल से भरे कुंभ को स्थापित किया जाता है।

स्वास्तिक

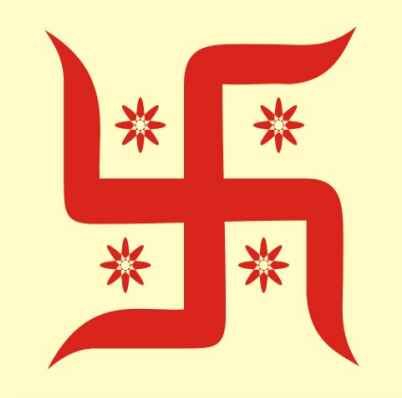

स्वास्तिक अति प्राचीन काल से ही स्वास्तिक को मांगलिक चिन्ह के रूप में प्रयोग किया जाताहै। धार्मिक मतानुसार इस चिन्ह को जीत का प्रतीक माना जाता है। इस चिन्ह को शुभ माना जाता है और भवन के मुख्य द्वार के दोनों ओर बनाया जाता है; ताकि अनिष्टकारी दृष्टिसे भवन की रक्षा होती रहे। घर में स्वास्तिक का चिन्ह स्थापित करने से पारिवारिक जनोंको उनके कार्यों में सफलता प्राप्त होती है।

पंचागुलक हाथ

पंचागुलक हाथ मांगलिक चिन्ह पंचागुलक हाथ गृह प्रवेश पुत्रजन्म तथा विवाह के शुभ अवसरपर हल्दी व चावल की पीठी से पींठ पर लगाने की काफी पुरानी परम्परा चली आ रही है। पाँच की संख्या पाँच तत्त्वों की निरंतरता, अनश्वरता का प्रतीक है। हाथ को कर्म का प्रतीकमाना गया है, यह देवताओं की अभय मुद्रा व आशीष मुद्रा का प्रतीक है। भवन में हाथ को मांगलिक चिन्ह के रूप में स्थापित करके, समृद्धि पंच महाभूतों एवं कर्म की महत्ता को प्रकट किया जाता है। बौद्ध धर्म में तो हाथ की मुद्राओं द्वारा ही विभिन्न मनोदिशाओं को संकेत रूप में बताया गया है।

मीन (मछली)

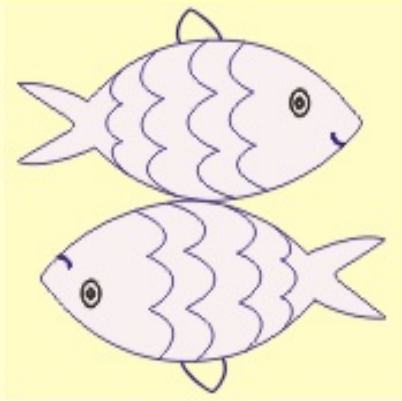

मीन (मछली) को सच्चे प्रेम की प्रतीक माना गया है। यात्रा शुरू करने से पहले मत्स्य दर्शन कार्य सफलता का सूचक व शुभ माना जाता है। दशहरा पर्व पर मत्स्य दर्शन की प्राचीन परम्परा हैं भवन के मुख्य द्वार पर जुड़वाँ मछलियों के चित्र को बनाने की परम्परा है। इसके पीछे यही भावना जुड़ी है कि यदि मत्स्य के साक्षात् दर्शन नहीं होते, तो उसके चित्र में ही दर्शन हो जायें। इसे मुख्य द्वार पर मांगलिक चिन्ह के रूप में अंकित करने का प्रचलन शुभता का द्योतक है।

धार्मिक शुभ प्रतीक

ईसाइयों का शुभ प्रतीक चिन्ह क्रॉस तथा मुस्लिमों का शुभ प्रतीक अंक 786 तथा अर्द्धचन्द्र व सिक्खों का एक ओंकार है। इन मांगलिक चिन्हों को भवनों के बाहर द्वार पर लगाना चाहिए। ये शुभ तथा समृद्धि के सूचक हैं।

त्रिशूल

भगवान शंकर के प्रतीक त्रिशूल का चिन्ह् सभी प्रकार की कठिनाईयों को दूर करता है एवं सभी प्रकार की सुख–समृद्धि, धन व यश में वृद्धि करता है।

लाल रंग

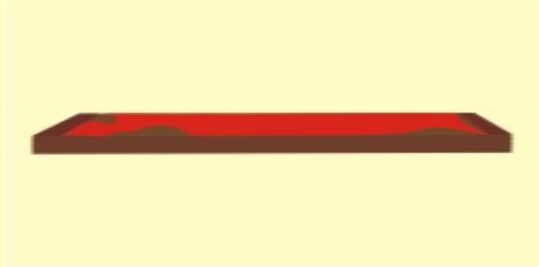

लाल रंग को मंगल का कारक माना जाता है। इस शुभ चिन्ह को लकड़ी के एक चौकोर टुकड़े को लाल रंग से रंगकर अथवा उसके उपर लाल रंग का कपड़ा चढ़ाकर बनाया जाता है। इस चिन्ह् को घर में रखने से किसी प्रकार बाहरी बाधा, बाहरी बीमारी, जादू, टोना आदि का प्रभाव घर के सदस्यों पर नहीं पड़ता है।

लाल किताब में मकान संबंधित महत्वपूर्ण नियम एवं सावधानियाँ

मकान निर्माण से पहले भूखंड के टुकड़े के कोने गिनना जरूरी होता है। चार कोने का मकान,जिसका हर कोना 90 डिग्री का हो, सबसे उत्तम होता है।

3 कोने, 13 कोने, 8 कोने एवं 18 कोने का मकान कभी नहीं बनवाना चाहिए, अशुभ फल प्राप्तहोगा। वैसे भूखंड, जिसके बीच में मछली के पेट की तरह उठा हुआ हो या पांच कोने वाला मकान भी अहितकर होता है।

8 कोने वाले मकान में हमेशा बीमारी का साथ रहता है। लाख चाहने के बावजूद बीमारियों सेछुटकारा पाना मुश्किल होता है तथा इस मद में खर्चे भी बहुत होते हैं। परिवार में किसी कोमृत्युतुल्य कष्ट भी हो सकता है।

18 कोने वाले मकान में धन–दौलत की बरकत नहीं होती है। सोने–चांदी की हानि होगी या घर का सोना–चांदी गुम हो सकता है।

3 या 13 कोने वाले मकान में अपने भाई–बंधुओं के साथ मधुर संबंध नहीं रहेगा। अपने भाई–बंधुओं से अक्सर झगड़ा होगा या उनके कारण हानि होगी। मकान में अक्सर आग लगनेकी घटनायें होती रहेंगी, जिससे आर्थिक नुकसान होगा। परिवार में किसी की असमय मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट का भय हमेशा बना रहेगा।

5 कोने वाले मकान में संतान को कष्ट होगा। उनकी शिक्षा अधूरी रह सकती है। संतान के नालायक होने की संभावना अधिक होगी, जिससे उनकी बर्बादी निश्चित होगी।

यदि भूखंड बीच से मछली के पेट की तरह बाहर निकला हुआ है तो वंश वृद्धि की समस्या होगी। मकान का मालिक निःसंतान होगा। मकान मालिक अपने परिवार में अकेला भाई होगा।

बिना भुजा वाले भूखंड पर मकान बनाकर रहने से मकान मालिक को अनगिनत दुःखों का सामना करना पड़ेगा। परिवार में एक से अधिक अकाल मृत्यु देखने को मिलेगा। ऐसे मकान मेंविधवा या विधुर लोगों की संख्या अधिक हो सकती है।

मकान का निर्माण कार्य प्रारम्भ करने से पहले भूमि पूजन करवाएं एवं मकान निर्माण के पश्चात्उसमें निवास करने के लिए प्रवेश करते समय भी शुभ मुहूर्त में ही प्रवेश करें। मकान केपूर्व एवं उत्तर दिशा की ओर अधिकाधिक खाली स्थान छोड़ने का प्रयास करना चाहिए। निर्मित मकान के चारों ओर खाली जगह छोड़ना चाहिए एवं उसके चारों ओर चारदीवारी भी अवश्य बनानी चाहिए। मकान हेतु ऐसे ही भूखण्ड का चयन करना चाहिए, जिनका दिशाकरणमुख्य दिशाओं पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण की ओर हो। मकान का मुख्य प्रवेश द्वार सदैव मकान के अन्य द्वारों से बड़ा रखना चाहिए। यदि संभव हो तो मुख्य प्रवेश द्वार पर

दो पल्लों वाला दरवाजा ही लगवाना चाहिए। मुख्य प्रवेश द्वार का निर्माण वास्तुचक्र के अनुसार शुभ पदों में करना शुभ फलदायक होता है।

मकान के मध्य स्थान में किसी प्रकार बीम, सीढ़ी, कुंआ आदि न बनवाएं। इस स्थान को सदैव भार मुक्त रखने का प्रयास करें। सामान्यतः मकान के मध्य में आंगन का बनाना सर्वाधिक उत्तम माना जाता है। आंगन का ढाल पूर्व अथवा उत्तर दिशा की ओर रखना चाहिए। मकानके नैऋत्य कोण की ओर किसी प्रकार का कोई खुला स्थान नहीं छोड़ना चाहिए और नही इस कोण में मुख्य द्वार अथवा चारदीवारी का द्वार रखना चाहिए। मकान के साथ यदि पीपल का पेड़ हो तो उसका साया जहां तक जाएगा, वहां तक तबाही याबर्बादी होगी। अशुभ प्रभाव से बचने के लिए पीपल की जड़ों में जल डालें, लेकिन जब भी सम्भव हो सके, मकान अवश्य बदलें। यदि आपके मकान पर किसी धर्म–स्थान आदि की छाया पड़ती हो, तो बीमारी से धन हानि होने की अधिक संभावना होगी।

यदि मकान कब्रिस्तान या श्मशान भूमि पर या कब्रिस्तान या श्मशान भूमि के आस–पास बना हो तो निःसंतान होने की संभावना अधिक है या परिवार के सदस्यों को रोग से छुटकारा पानामुश्किल होगा। अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए अपने मकान के उत्तर या पश्चिम में कुआं या हैण्डपम्प लगवाएं। यदि मकान के पास कुआं है तो उसमें रोज दूध डालने से धन–सम्पत्ति में वृद्धि होगी, लेकिन उसमें कूड़ा डालना बर्बादी को न्योता देना होगा।

मकान में उपयोग किए जाने वाले दर्पण को पूर्व अथवा उत्तर दिशा की ओर की दीवार पर लगाना चाहिए। मकान के मुख्य प्रवेश द्वार के सामने किसी प्रकार का कोई वेध नहीं होना चाहिए। जब भी कोई शुभ कार्य करें, तो अपना मुख पूर्व अथवा उत्तर दिशा की ओर करके बैठना चाहिए। मकान में कभी टूटे हुए दर्पण, बंद पड़ी अथवा टूटी हुई घड़ियां नहीं रखनी चाहिए। किसी भी प्रकार का कांटेदार एवं दूध वाला पौधा मकान के अन्दर नहीं लगाना चाहिए।

मकान में अनुपयोगी एवं बेकार की वस्तुओं को एकत्र करके नहीं रखना चाहिए। पुराने कपड़े, कबाड़, अखबार आदि को समय–समय पर निकालते रहना चाहिए। कुछ समय अन्तराल पर उपयोग में आने वाली वस्तुओं आदि को सुव्यस्थित करके उचित स्थान पर रखना चाहिए, जिससे घर साफ–सुथराएवं व्यवस्थित रहे। इस बात का ध्यान रखें कि बीम के नीचे बैठकर कोई कार्य न करें और न ही उसके नीचे सोएं या बैठें। मकान में किसी भी प्रकार की हिंसात्मक, भयावह, उदासीन, मृत्यु अथवा रोगी प्रकृति के चित्रों आदि को नहीं लगाना चाहिए।ऐसे चित्रों से व्यक्ति में नकारात्मक विचारधारा उत्पन्न होती है।

यदि आपके मकान की चारदीवारी के अंदर या आस–पास कीकर का पेड़ हो तो आप निःसंतान होंगे या भविष्य में आपके या आपके बच्चों की सेहत एवं शिक्षा में बाधा उत्पन्न होगी। उपाय के तौर पर लगातार 43 दिनों तक रात को पानी सिरहाने रखकर सोयें और सुबह उठकर उसे किसी वृक्ष की जड़ में डालें।

मकान के अन्दर प्रवेश करते समय ही यदि जमीन के अन्दर खोदकर बनाई गई ऐसी कोई

भट्टी हो जिसे केवल विवाह आदि के समय ही उपयोग में लाने के लिए खोला जाता हो एवं बाद में बंद कर दिया जाता हो, तो जब भी आपके घर लड़का पैदा होगा तो वह आपके धन–दौलत के लिए अशुभ होगा। उसके रक्त संबन्धियों का विनाश प्रारम्भ हो जाएगा एवं सबकुछ इस भट्टी की आग में जलकर नष्ट होने लगेगा। इसलिए ऐसी भट्टी को घर में कदापि नहीं रखना चाहिए। उपाय के तौर पर मिट्टी को खोद कर उसमें से जली मिट्टी निकाल कर उसको नदी या तालाब में प्रवाहित कर दें और उसको नयी मिट्टी से भर दें।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, मकान में मूर्तियों को स्थापित करना शुभ नहीं होता है। सामान्यतः मूर्तियों का स्थान किसी मंदिर में होता है, क्योंकि मंदिर एक ऐसा स्थान होता है जहां एक निश्चित समय के लिए पूजा–अर्चना आदि के लिए द्वार खुलता है, अन्यथा उसे बन्द रखा जाता है, क्योंकि मंदिर जीवित वस्तुओं का कारक नहीं होता है। जबकि मकान में सदैव सजीववातावरण होता है एवं शोर–गुल आदि होता रहता है। जिससे मकान में बनाये गये मंदिर की शांति सदैव बाधित होती रहती है। इसके अतिरिक्त, मकान में मंदिर के होने के अलावा शौचालय आदि भी आस–पास ही होते हैं, जिससे मंदिर की पवित्रता पर असर पड़ता है। इसलिए मकान में मूर्तियों की स्थापना नहीं करनी चाहिए। मूर्तियों के स्थान पर तस्वीरों कोरखना चाहिए। कागज पर बने चित्रों या तस्वीरों के समक्ष ध्यान करना वर्जित नहीं है, लेकिन पूजा करते समय घंटी–घड़ियाल, शंख आदि का प्रयोग न करें। यदि मकान में मूर्तियां स्थापित कर उसकी पूजा करेंगे तो संतान उत्पन्न होने में समस्या आएगी तथा भविष्य में आपके बच्चों की शिक्षा में भी व्यवधान होगा। आप मानसिक रूप से अशांत रहेंगे।

मकान में प्रवेश करने पर दाहिने हाथ की ओर मकान के आखिरी छोर पर जहां मकान समाप्तहो रहा हो, वहां पर यदि कोई अंधेरा कमरा हो जिसमें प्रवेश करने के लिए दरवाजे के अतिरिक्त कोई और रोशनदान अथवा खिड़की न हो, जिससे की हवा या प्रकाश का आवागमनहोता हो, ऐसा कमरा शनि का कारक कमरा होता है एवं यह शुभ शनि के स्थापित होने का प्रतीक होता है। इससे परिवारजनों की आयु आदि पर शुभ प्रभाव पड़ता है। इसलिए, ऐसे कमरे में रोशनी अथवा हवा के आवागमन के लिए कोई खिड़की अथवा रोशनदान नहीं बनाना चाहिए अथवा बिजली के द्वारा भी ऐसा इंतजाम नहीं करना चाहिए, अन्यथा आपके धन–संपत्ति के साथ–साथ वंश भी नष्ट हो सकता है। इससे गृहस्थ जीवन में कटुता आएगी तथा अपने पड़ोसियों एवं रिश्तेदारों के साथ संबंधों में खटास आ सकती है।

यदि कभी किसी कारणवश इस कमरे की छत बदलनी पड़े, तो छत को गिराने से पहले उसकेउपर छत बनवा लेना चाहिए, इससे किसी प्रकार की हानि नहीं होगी। ऐसे कमरे अपने–आप नहीं गिरते, तोड़ने पर ही गिरेगा। क्योंकि शनि को अंधेरा प्रिय होता है, इसलिए यदि इस कक्ष के अंधेरे को खत्म किया जाएगा तो यह परिवारजनों के लिए अत्यंत अशुभ साबित होगा।

सामान्यतः घरों में बहुमूल्य वस्तुओं जैसे रुपए–पैसे, गहने आदि रखने के लिए या तो किसी गुप्त स्थान पर गड्ढा बनाकर रखा जाता है अथवा आलमारी के लॉकर या तिजोरी आदि में रखा जाता है। यदि इन कीमती वस्तुओं के रखने वाले स्थान को खाली छोड़ दिया जाएगा तोघर की स्थिति भी खोखली होने लगेगी। गृहस्वामी की बातों में बस उपरी दिखावा ही

रहेगा, उसमें वास्तव में कुछ नहीं होगा। इसलिए इन स्थानों को कभी खाली नहीं छोड़ना चाहिए। यदि तिजोरी में धन, गहना आदि न रखा हुआ तो कोई मीठी चीज अथवा बादाम–छुहारे रख देना चाहिए। ऐसा करने से आर्थिक सुदृढ़ता बनी रहेगी एवं शुभता में वृद्धि होगी। ध्यान रखें कि इन बादाम–छुआरे को खाना नहीं है।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, जिस मकान के फर्श में कहीं भी कच्चा भाग नहीं होता है, तो उस मकान में शुक्र का निवास नहीं माना जाता है, जिससे उस मकान की स्त्रियों के स्वास्थ्य के साथ–साथ आर्थिक स्थिति पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। उपरी तौर पर मजबूत दिखने के बावजूद आंतरिक रूप से स्थिति कमजोर ही रहेगी। इसलिए मकान में शुक्र को स्थापित करने के लिए शुक्र की कारक वस्तुओं को स्थापित करना चाहिए। जैसे मनीप्लांट का पौधा अथवा आलू का पौधा लगाना चाहिए या गाय पालनी चाहिए, इससे स्थिति सबके अनुकूल हो जाएगी। सुखी गृहस्थ जीवन एवं आर्थिक समृद्धि के लिए अपने मकान में कच्चा स्थान अवश्य छोड़ें, अन्यथा आपके परिवार की स्त्रियों का स्वास्थ्य चिंताजनक रहेगा तथा धन–सम्पत्ति की भी हानि होगी। यदि कच्चा स्थान नहीं छोड़ा गया या नहीं छोड़ा जा सकता, तो उपाय के तौर पर सफेद सूती रूमाल में थोड़ा सा देसी घी, 7 कपूर की टिकिया और थोड़ी सी रूई बांध कर मकान में कहीं साफ एवं सुरक्षित स्थान पर रखें।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, यदि मकान का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में हो एवं व्यक्ति की जन्मकुण्डली में मंगल शुभ न हो तो ऐसा मकान व्यक्ति के लिए अत्यन्त अशुभ साबित होगा। ऐसे आवास में उसे किसी प्रकार का कोई सुख प्राप्त नहीं होगा, विशेषकर स्त्रियों के लिए ऐसामकान अधिक अशुभ होगा। इसलिए इस दिशा से हटाकर द्वार को किसी अन्य दिशा की ओर स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए। यदि ऐसा कर पाना संभव न हो तो एक लाल मुंह वाला मिट्टी का बन्दर द्वार से प्रवेश करने पर अन्दर की ओर रख देना चाहिए, जो कि मुख्य द्वार की ओर देखता रहे। चूंकि लाल मुंह वाले बंदर को सूर्य का कारक माना जाता है, इस बंदर को मकान में स्थापित करने से सूर्य की स्थापना हो जाती है, जिससे मंगल के कारक दक्षिण दिशा को शुभ शक्ति प्राप्त होती है और इसकी अशुभता में कमी आती है।

दक्षिण की ओर मुख्य द्वार होने पर मंगल बली होकर शनि के साथ और अधिक प्रचण्ड भाव से शत्रुता दर्शाता है। इसके लिए घर की दहलीज के नीचे एक चांदी की चपटी तार दबा देनीचाहिए। चांदी की तार चौड़ाई में चाहे जिस आकार का हो, परन्तु उसकी लम्बाई दहलीज के बराबर ही होनी चाहिए। ऐसा करना परिवारजनों के लिए शुभ होगा।

ग्रहों से संबंन्धित मकान का अनुमान

सूर्य का मकान

जिस मकान का मुख्य द्वार पूर्व दिशा में हो और धूप तथा प्रकाश समुचित रूप से मकान में आती हो या मकान से बाहर निकलते समय सूर्य पूर्व की ओर हो, बरामदा या आंगन मकान केबीचो–बीच हो, रसोईघर एवं बिजली के यन्त्र रेफ्रिजरेटर या अन्य घरेलू बिजली के उपकरणआस–पास हों, पानी के साधन, जैसे नल, टंकी इत्यादि मकान से निकलते समय दायेंहाथ की तरफ बरामदे या आंगन में हो, ऐसे मकान पर सूर्य भगवान का आधिपत्य होता है। ऐसा मकान स्वास्थ्यवर्द्धक होता है।

चन्द्रमा का मकान

जिस मकान पर चंद्रमा का आधिपत्य होगा, उस मकान के अंदर या मकान से कुछ ही दूरी परपानी के साधन जैसे– पानी की टंकी, हैंडपम्प, बोरवेल, कुआं या तालाब निश्चित रूप से होगा। मकान में सफेद रंग का प्रयोग अधिक होगा। मकान का मुख्य द्वार पूर्व या ईशान में होगा। मकान में जल के स्रोत का उचित प्रबन्ध होगा। ऐसा मकान सुख एवं समृद्धि प्रदान

करने वाला होता है।

मंगल का मकान

यदि कुण्डली में मंगल नेक है तो मकान का दरवाजा उत्तर या दक्षिण में होगा। मकान में सीमेन्ट का काम अधिक होगा। मकान में हवा, पानी के साधन ठीक–ठाक होंगे। यदि कुण्डलीमें मंगल बद है तो मकान का दरवाजा दक्षिणमुखी होगा। मकान पर किसी वृक्ष का साया पड़ सकता है। मकान के आस–पास श्मशान या कब्रिस्तान हो सकता है। मकान के आस–पास में बेकरी या हलवाई की दुकान या होटल होगा। मकान में रहने वाले लोग रोग सेग्रसित होंगे तथा संतान सुख में कमी महसूस करेंगे। कुछ संभावना है कि ऐसे मकान में रहनेवाले निःसंतान हों। मकान में कोई भी चैन से नही रह पाएगा।

बुध का मकान

जिस मकान पर बुध का आधिपत्य होगा, उस मकान के चारो तरफ खुला भाग अधिक होगा। दूसरे मकान कुछ दूरी पर बने होंगे। मकान के आस–पास चौड़े पत्ते वाले पेड़–पौधे लगे होंगे,लेकिन पीपल या शहतूत के पेड़ होने की संभावना बहुत कम है।

गुरू का मकान

जिस मकान पर बृहस्पति का आधिपत्य होगा, उस मकान में आंगन या बरामदा किसी कोने मेंहोगा। बरामदा कभी भी बीच में नहीं होगा। मकान का दरवाजा उत्तर, दक्षिण या उत्तर–पूर्वदिशा में होगा। मकान के अंदर या आस–पास कोई मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारा तथा बड़, पीपल या केले आदि का पेड़ होगा।

शुक्र का मकान

जिस मकान पर शुक्र का आधिपत्य होगा, उस मकान में कुछ भाग कच्चा जरूर होगा। मकानका दरवाजा उत्तर या दक्षिण दिशा में होगा। मकान के ड्योढ़ी का शहतीर उत्तर–दक्षिण दिशा में होगा। मकान में चूने एवं पलस्तर का काम अधिक होगा। फूल पत्ती वाले पौधे अधिक संख्या में लगे होंगे।

शनि का मकान

जिस मकान पर शनि का आधिपत्य होगा, उस मकान का मुख्य दरवाजा पश्चिम दिशा में होगा। मकान की सबसे आखिरी कोठरी, जो मकान में प्रवेश करते समय दायें हाथ की तरफ होगी, वह अंधेरी कोठरी होगी। जब तक इस कोठरी में अंधेरा रहेगा, मकान में सुख एवं समृद्धि बना रहेगा। यदि भूल से भी उस अंधेरी कोठरी में रोशनी के लिए खिड़की खोली गई या रोशनदान बनाया गया या किसी अन्य तरीके से रोशनी का प्रबन्ध किया गया तो मकान मेंरहने वालों के लिए नुकसान दायक होगा। ऐसे मकान में उत्तम लकड़ी का प्रयोग नहीं होताहै। आपके मकान में पत्थर गड़ा होगा। पुराने मकान के दरवाजे की दहलीज पुरानी लकड़ी जैसे शीशम, कीकर आदि की बनी होगी। मकान की छत पर पुरानी लकड़ी पड़ी होगी।

राहु का मकान

जिस मकान पर राहु का आधिपत्य होगा, उस मकान में बीमारियां अक्सर परेशान करती रहेंगी। मकान में आपसी झगड़े होते रहेंगे। मकान में प्रवेश करते ही दायें हाथ की ओर गढ्ढ़ाया नाली या कोई घड़ा पानी से भरा होगा। राहु की दशा खराब है तो छत को बार–बार बदलवाना पड़ेगा। घर में चारो तरफ धुआं–धुंआ होगा और गन्दे पानी का संग्रह होगा। मकान की दहलीज के नीचे से पानी निकलने की व्यवस्था होगी। सामने का पड़ोसी बेऔलाद होगा या वो घर उजड़ा होगा।

केतु का मकान

जिस मकान पर केतु का आधिपत्य होगा, वो मकान एक तरफ से या तीन तरफ से खुला होगा या मकान कोने का होगा। मकान में खिड़कियां अधिक संख्या में होंगी। मकान में दो तरफ से रास्ते होंगे। आस–पास कुत्तों का आना–जाना अधिक होगा। ऐसे मकान में पुत्र या पौत्र संतान की संख्या तीन से अधिक नहीं होगी। किसी पड़ोसी का मकान उजड़ा होगा।

आपका मकान और पंच तत्व

इस सृष्टि की रचना पांच तत्वों से हुई है – आकाश, अग्नि, वायु, जल एवं पृथ्वी। सृष्टि में जो भी रचना उपस्थित है, वो सभी इन्हीं पांच तत्वों से बनी है। इन पांचों तत्वों में सामंजस्य स्थापित करना बहुत जरूरी होता है, जिससे जीवन हर मामले में खुशहाल बना रहे।

आकाश

धरातल से लेकर अंतरिक्ष के बीच अनगिनित ग्रह, नक्षत्र, तारे आदि मौजूद हैं। ये सारा क्षेत्र आकाश कहलाता है। अपने मकान में आकाश तत्व को स्थापित करने के लिए खुला आंगन निश्चित रूप से रखना चाहिए। आंगन की लंबाई, चौड़ाई 3, 13, 8, 18 फीट पूरी नहीं होनी चाहिए। थोड़ा–बहुत कम–ज्यादा कर दें। आकाश तत्व की वृद्धि के लिए आकाश में तारों को देखें।

अग्नि

अग्नि से उष्मा एवं शक्ति की प्राप्ति होती है। सूर्य की लाभदायक किरणें प्राप्त करने के लिए उत्तर एवं पूर्व में मकान खुला रखना चाहिए। उत्तर एवं पूर्व में ढलान रखें, ऊँचाई कम रखें तथा मकान के आगे घने एवं ऊँचे पेड़ न लगायें। सुबह की किरणों में विटामिन डी अधिक होता है, जो कि काफी लाभदायक होता है। शाम की किरणें हानिकारक होती हैं, अतः दक्षिणएवं पश्चिम में ऊँचा बनाना तथा पेड़–पौधे लगाना लाभदायक रहेगा। अग्नि तत्व की

वृद्धि के लिए सूर्योदय के समय बाहर बैठकर सूर्य की किरणें अपने शरीर पर पड़ने दें।

वायु

पूरे वायुमंडल में हवा विद्यमान है। हवा के बिना जीवन की कल्पना नहीं हो सकती है। पूर्व कीहवायें सौर ऊर्जा प्रदान करती हैं तथा उत्तर की हवायें शीतलता प्रदान करती हैं। पूर्वी एवं उत्तरी भाग में अधिक खुला रखना तथा दरवाजे एवं खिड़कियों का अधिक प्रयोग करना लाभदायक रहेगा। दक्षिण में खिड़की–दरवाजे कम रखें। दक्षिण–पश्चिम का भाग ऊँचा रखें तथा पूर्व–उत्तर का भाग नीचा होना चाहिए, इससे लाभदायक हवायें अधिक एवं हानिकारक हवायें मकान में कम मात्रा में आयेंगी। वायु तत्व की वृद्धि के लिए पेड़–पौधे के नजदीक गहरीसांस लें।

जल

जल हमारे जीवन के लिए बहुत जरूरी है। पर्याप्त एवं स्वच्छ जल के बिना जीवन प्रणाली रूकजाती है। मकान में जल संसाधन की व्यवस्था उत्तर ईशान पूर्व में करना लाभदायक होताहै। बरसात के पानी की निकासी, कुआं, स्विमिंग पूल एवं स्नानागार उत्तर–पूर्व में बनाना शुभ होता है। गंदे पानी का निकास, सीवर एवं सेप्टिक टैंक उत्तर–पश्चिम में होना चाहिए। मध्य भाग में जल संसाधन होने से धन का नाश होता है। पूर्व में होने पर ऐश्वर्य नाश, दक्षिणमें होने पर स्त्री को कष्ट होता है। इससे समुचित गुरूत्वीय संबंध स्थापित होता है। जल तत्व की वृद्धि के लिए पर्याप्त मात्रा में शुद्ध एवं स्वच्छ जल पियें।

पृथ्वी

पृथ्वी एक चुम्बक है, जो किसी भी चीज को अपने गुरूत्व बल से अपनी ओर खींचती है। वैदिक सिद्धांत के अनुसार, जो कुछ ब्रह्मांड में उपस्थित है, वो सारे तत्व हमारे शरीर में भी उपस्थित हैं। जिस तरह पृथ्वी के दो ध्रुव हैं, उसी तरह हमारे शरीर में भी दो ध्रुव हैं। उत्तरी ध्रुव सिर तथा दक्षिणी ध्रुव पैर होता है। मकान के शयनकक्ष में सोने की ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि सिर दक्षिण में एवं पैर उत्तर में हो। इससे नींद अच्छी आती है तथा रक्तचाप, मधुमेह आदि बीमारियों से बचाव होता है। पृथ्वी तत्व की वृद्धि के लिए नंगे पांव घास या फर्शपर चलें।

भूखण्डो का आकार

लाल किताब के अनुसार मकान बनवाने के लिए भूखण्ड का चयन बहुत ही सावधानीपूर्वक करना चाहिए। किस आकार का भूखण्ड आपके लिए लाभदायक होगा, इसका निर्णय मकान बनवाने से पूर्व कर लेना चाहिए।

आयताकार भूखण्ड :–

लाल किताब के अनुसार आयताकार भूमि को भी वास्तुविदों ने भवन निर्माण करने हेतु शुभ माना है। ऐसी भूमि पर निर्मित आवास में निवास करने पर घर में सदैव सुख–शांति बनी रहतीहै।

वर्गाकार भूखण्ड :–

लाल किताब के अनुसार भवन बनाने हेतु भूमि में वर्गाकार भूमि को सर्वोत्तम माना गया है।

वर्गाकार भूखण्ड में निर्मित भवन में निवास करने पर भवन स्वामी एवं पारिवारिक सदस्य को सदैव सभी प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं।

गोलाकार भूखण्ड :–

लाल किताब के अनुसार गोलाकार भूखण्ड भवन निर्माण करने के लिए अनुकूल होता है। गोलाकार भूमि पर निर्मित भवन में रहने वाले सभी सदस्यों का जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होता है।

त्रिकोणाकार भूखण्ड :–

लाल किताब के अनुसार त्रिकोणाकार भूखण्ड आवास के लिए अनुकूल नहीं होता है। ऐसी

भूमि पर निर्मित आवास में निवास करने पर भवन स्वामी एवं पारिवारिक सदस्यों को किसी न किसी प्रकार के मानसिक तनाव से जूझना पड़ता है। मान–प्रतिष्ठा की हानि होने की संभावनाबनी रहती है एवं राज्य से संबंधित तनाव भी झेलना पड़ता है। अतः ऐसे भूखण्ड पर किसी भी स्थिति में भवन नहीं बनाना चाहिए।

सिंहमुखी भूखण्ड :–

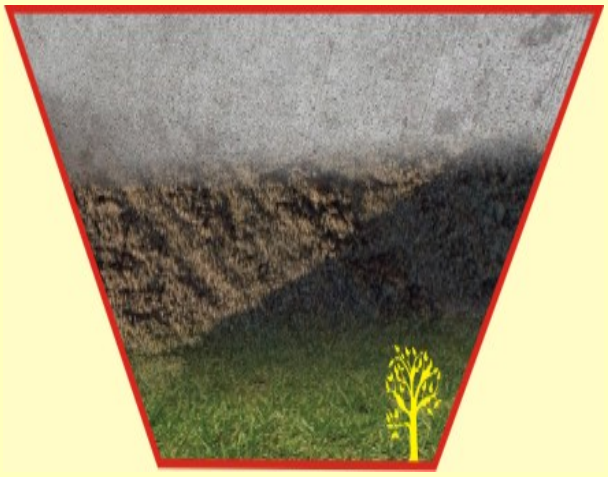

लाल किताब के अनुसार वह चतुर्भुजी भूखण्ड जो वर्गाकार या आयताकार ना होकर, आगे कीओर से चौड़ा होता है एवं पीछे से संकरा अर्थात कम चौड़ा होता है। उसे सामान्यतः सिंहमुखी भूखण्ड कहा जाता है। ऐसा भूखण्ड आवासीय भवन हेतु शुभ नहीं होता है। ऐसे भवन में निवास करने पर व्यक्ति को जीवन में कभी भी सुख–शांति नहीं मिलती। सदैव किसीन किसी प्रकार की परेशानी का सामना करना पड़ता है। अपितु ऐसे भूखण्ड पर व्यवसायहेतु भवन बनाना अधिक शुभ व लाभदायक होता है एवं काम–काज का विस्तार भी होता है।

गौमुखी भूखण्ड :–

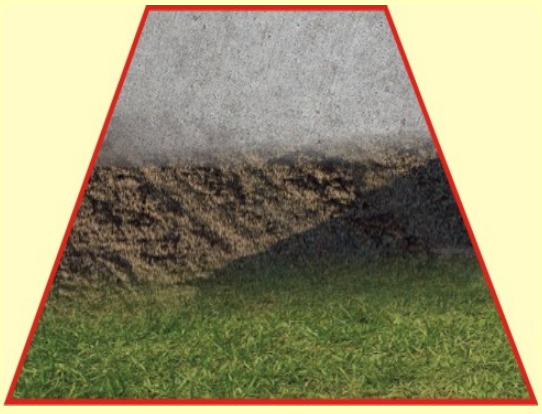

लाल किताब के अनुसार ऐसा चतुर्भुजी भूखण्ड जिसका सामने का भाग छोटा हो अर्थात कम चौड़ा हो एवं पीछे का भाग अधिक चौड़ा हो उसे गोमुखी भूखण्ड कहते हैं। ऐसे भूखण्ड पर आवास हेतु भवन का निर्माण किया जा सकता है। ऐसे भूखण्ड पर निर्मित भवन में सुख–शांतिसदैव बनी रहती है। जबकि ऐसी भूमि पर व्यावसायिक कार्य हेतु निर्माण कदापि नहीं करना चाहिए। क्योंकि ऐसे भूखण्ड के परिसर में किसी प्रकार का कामकाज सफल नहीं होता है।

अर्द्धवर्तुलाकार (अद्धचन्द्राकार) भूखण्ड :–

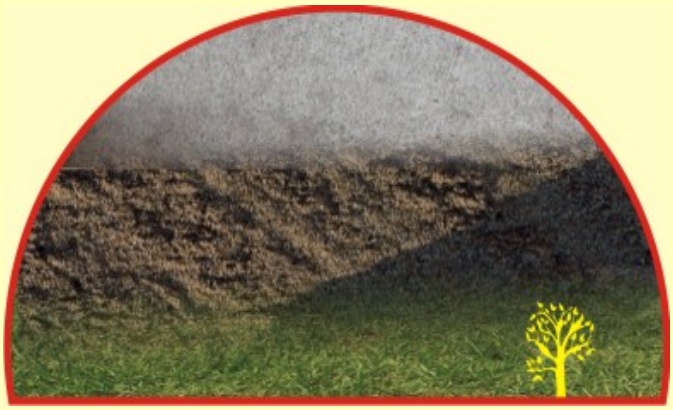

लाल किताब के अनुसार आकार के अनुसार अर्द्धवर्तुलाकार अर्थात आधा वृत्त की आकार के भूखण्ड को कई वास्तुविद आवासीय भवन बनाने के लिए अनुकूल नहीं मानते हैं। ऐसी भूमि भीनिवास हेतु शुभ साबित नहीं होती है। ऐसी भूमि का त्याग कर देना ही उचित होता है।

अण्डाकार भूखण्ड :–

लाल किताब के अनुसार अण्डाकार भूखण्ड पर धार्मिक कार्यो से संबंधित भवन के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार के भवन का निर्माण नहीं करना चाहिए। ऐसे भूखण्ड पर निर्मित घर में

निवास करना शुभ नहीं होता है। यदि ऐसे भूखण्ड पर किसी मंदिर अथवा धार्मिक स्थल का निर्माण करवाया जाय तो वह शुभ फलदायक रहेगा।

लाल–किताब वास्तु के अनुसार मकान में विभिन्न कक्षों की स्थिति के लिए सुझाव

लाल–किताब वास्तु के अनुसार मुख्य द्वार के लिए सुझाव

मकान के मुख्य द्वार का निर्माण सदैव वास्तु के अनुसार बताए गए शुभ पदों में ही करना शुभ होता है। मुख्य द्वार को स्थापित करते समय इस बात का ध्यान रखें कि वह कभी भी भूखण्डके बढ़े हुए अथवा कटे हुए भाग में ना हो। आवसीय अथवा व्यावसायिक किसी भी मकान के मध्य में मुख्य द्वार नहीं बनाना चाहिए। इस प्रकार के द्वार की स्थापना धार्मिक स्थलों के लिए ही अनुकूल होता है। मकान के मध्य में मुख्य द्वार बनाने से परिवार का नाश हो जाता है। मुख्य द्वार का निर्माण इस प्रकार करवाना चाहिए कि वह सदैव मकान के भीतर की ओर ही खुले एवं मुख्य द्वार मकान में बने अन्य द्वारों की तुलना में अधिक सुन्दर, भव्य व बड़ा होना चाहिए। साथ ही मुख्य द्वार में दहलीज अवश्य ब नाना चाहिए। मुख्य द्वार स्थापित करते समय यह ध्यान देना चाहिए कि मकान के पूर्व व पश्चिम तथा उत्तर व दक्षिण दोनों दिशा में द्वार आमने–सामने नहीं होना चाहिए। मकान के मुख्य द्वार को कभी भी सड़क, गलीअथवा किसी भी प्रकार के वेध के ठीक सामने स्थापित नहीं करना चाहिए। वेध से हटाकरमुख्य द्वार की स्थापना करना ही शुभ रहेगा।

वास्तुशास्त्र के अनुसार द्वार की लम्बाई व चौड़ाई का सर्वमान्य व उत्तम अनुपात 1:2 का मानाजाता है। आवश्यकतानुसार बढ़ाया जा सकता है परन्तु यह 1:3 से अधिक नहीं होना चाहिए। व्यावसायिक स्थलों के लिए अर्थात दुकान व कार्यालय आदि के लिए यह अनुपात मान्य नहीं है।

आवासीय मकानों में द्वार की संख्या सम होनी चाहिए जैसे 2, 4, 6 व 8। परन्तु यह संख्या शून्य में नहीं होनी चाहिए जैसे 10, 20, 30 आदि। मुख्य द्वार की स्थापना सदैव वास्तु के अनुसार शुभ मुहुर्त में ही करना चाहिए। मुख्य द्वार यदि लकड़ी का बनाना हो तो सदैव ऐसी

लकड़ी का प्रयोग करना चाहिए कि उसके दरवाजे कभी भी बाद में जाकर सिकुड़ने अथवा झुकने ना पाएं। यदि नए मकान का निर्माण हो रहा हो तो उसमें किसी प्रकार के पुराने दरवाजे का प्रयोग नहीं करना चाहिए। मुख्य द्वार की देखभाल, रंग–रोगन आदि समय–समय पर करते रहना चाहिए एवं इसकी सजावट का ध्यान रखना चाहिए।

इस बात का सदैव ध्यान रखें कि मकान का कोई भी दरवाजा खुलते अथवा बंद होते समय किसी प्रकार की ध्वनि ना उत्पन्न करे। इसके लिए इनके कब्जों में तेल आदि लगाते रहना चाहिए। दरवाजों द्वारा ध्वनि उत्पन्न करना अशुभ माना जाता है। मकान के मुख्य द्वार को सदैव साफ, सुन्दर व सुसज्जित रखना चाहिए। इस पर ओम्, स्वास्तिक चिन्ह्, कुलदेवता का चित्र, गज लक्ष्मी का चित्र, तोरण आदि बनाना चाहिए। मुख्य द्वार कभी भी किसी प्रकार से मुड़ा हुआ, झुका हुआ अथवा टूटा हुआ होने पर मकान की अशुभता में वृद्धि होती है। मकान के पिछले द्वार का निर्माण घर में बने अन्य द्वारों की तुलना में छोटा रखना चाहिए।

यदि मकान का मुख्य द्वार पूर्व दिशा की ओर स्थित हो तो वास्तुशास्त्र में इसे सर्वाधिक शुभ फलदायक माना गया है। इसीलिए इसे शुभता की दृष्टि से प्रथम स्थान प्राप्त है। पूर्व की ओरमुख्य द्वार वाले आवास में सभी प्रकार के सुख व समृद्धि आती है एवं ऐसे आवास में सदैव अच्छ आदमियों का आना–जाना लगा रहता है।

वास्तुशास्त्र के अनुसार पश्चिम की ओर मुख्य द्वार का होना भी शुभ फलदायक होता है। शुभता की दृष्टि से पश्चिमी मुख्य द्वार को पूर्वी मुख्य द्वार के बाद दूसरा स्थान प्राप्त है। पश्चिम दिशा का कारक शनि है एवं शनि मशीनों व लोहे आदि से संबंधित कार्यों का कारक भी है। इसलिए पश्चिम की ओर मुख्य द्वार वाला मकान इंजीनियर, हाथों से कारीगिरी करने वाले अथवा मशीनों से संबंधित कार्य करने वालों के लिए अधिक शुभ परिणाम देने वाला साबित होता है।

यदि मकान का मुख्य द्वार उत्तर दिशा की ओर हो तो वास्तुशास्त्र में इसे भी शुभ माना जाताहै। उत्तराभिमुख द्वार का संबंध व्यक्ति की उदारता व परोपकारिता से होता है। उत्तर की ओर दरवाजे वाले मकान में रहने वाले लोगों के द्वारा किए गए धार्मिक कार्य, पूजा–पाठ, लम्बी यात्रा अथवा किसी प्रकार के शुभ कार्य इनके लिए अधिक शुभ फलदायक होते हैं। ऐसामकान आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी अनुकूल होता है।

दक्षिण दिशा की ओर मकान का मुख्य द्वार होना शुभ नहीं माना जाता है। दक्षिण की ओर मुख्य द्वार वाले मकान में रहने वाले लोगों को अथवा मकान स्वामी को बकरी का दान अथवाबुध की वस्तुओं का दान जैसे मूंग की दाल आदि का दान करते रहना चाहिए। ऐसा करने से मकान में होने वाली बीमारी, अनावश्यक विवाद या विवादपूर्ण परिस्थितियों से होने वाले मृत्यु तुल्य कष्टो आदि से सुरक्षा होती है। ऐसा माना जाता है कि दक्षिणी द्वार अपनी अशुभता का सम्पूर्ण प्रभाव तब देता है जब उस आवास में कोई राहु आठ वाला बच्चा जन्म लेता है।

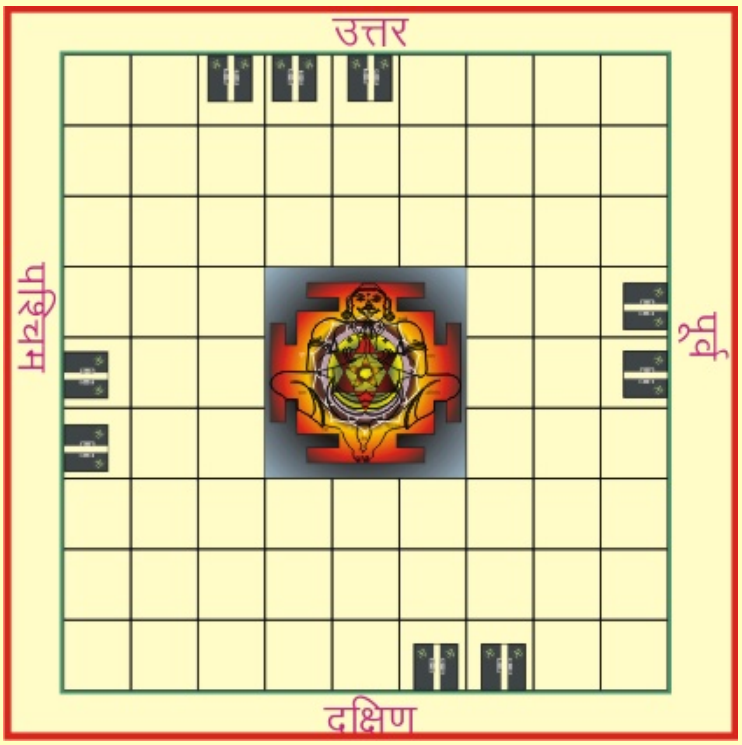

मकान में मुख्य द्वार के लिए उपयुक्त स्थान

लाल–किताब वास्तु के अनुसार पूजाघर के लिए सुझाव

वास्तुशास्त्र के अनुसार, पूजा एवं प्रार्थना के लिए सर्वोत्तम स्थान ईशान कोण को माना जाता है, परन्तु आवश्यकतानुसार भवन के पूर्व या उत्तर दिशा में भी पूजा घर बनाया जा सकता है,लेकिन दक्षिण दिशा में पूजा घर का निर्माण नहीं करना चाहिए। चूंकि अध्ययन कक्ष में पूजाघर बनाया जा सकता है, परन्तु इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उसमें संयुक्त शौचालय की व्यवस्था नहीं होनी चाहिए। पूजाघर की व्यवस्था शयन कक्ष में भी नहीं होनी चाहिए। पूजा घर में देवी एवं देवताओं की मूर्तियों या चित्रों को लकड़ी की चौकी अथवा

सिंहासन के उपर स्थापित करना चाहिए। पूजा घर के कमरे का फर्श अन्य कमरों से उंचा नहींहोना चाहिए एवं पूजा घर में अनुपयोगी एवं अनावश्यक सामान नहीं रखना चाहिए।

पूजाघर में स्थापित देवी–देवताओं की मूर्तियों अथवा चित्रों का मुख उत्तर अथवा पूर्व दिशा कीओर रखना चाहिए।

किसी भी जीवित अथवा मृत व्यक्ति का चित्र भले ही वह आपका अत्यंत प्रिय या निकटतम् क्यों ना हो, पूजा स्थल में नहीं रखना चाहिए। इस प्रकार के चित्रों को पूजा घर अथवा घर के किसी भी कमरे में दक्षिणी दीवार पर लगाया जा सकता है।

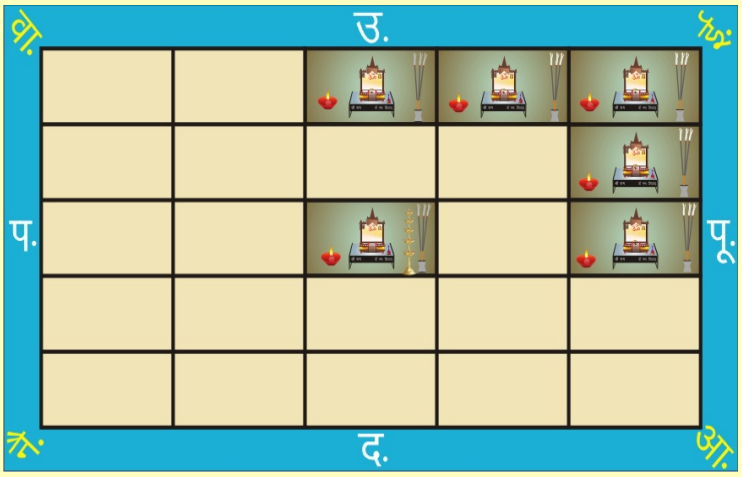

मकान में पूजाघर के लिए उपयुक्त स्थान

लाल–किताब वास्तु के अनुसार रसोई घर के लिए सुझाव

वास्तुशास्त्र के अनुसार, रसोईघर का निर्माण सदैव अग्निकोण में ही करना चाहिए। अग्निकोण में पूर्व दिशा की ओर मुख करके भोजन बनाने पर भोजन की गुणवत्ता में किसी भी अन्य

दिशा की अपेक्षा अधिक सात्विकता आती है। इसलिए रसोईघर में चूल्हे अथवा गैस के लिए स्लैब का निर्माण पूर्वी दीवार में करना चाहिए एवं चूल्हे को अग्निकोण की ओर ही रखना चाहिए। यदि किसी कारणवश अग्निकोण में रसोईघर बनाना संभव न हो तो पूर्व अथवा वायव्यकोण में रसोई बनाई जा सकती है, परन्तु नैऋत्य, ईशान एवं मध्य में रसोई घर का होना अशुभ परिणाम प्रदान करता है। प्रतिकूल जगहों पर गैस चूल्हा रखने से परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य अक्सर ठीक नहीं रहेगा तथा खाना पकाने वाली स्त्री अक्सर तनाव में रहेगी।

अपने दायें हाथ की तरफ मसाले के डिब्बे तथा बायें तरफ बर्तन धोने की व्यवस्था करें। रसोईघर का निर्माण शौचालय, स्नानघर, पूजाघर अथवा शयन कक्ष के उपर भी नहीं करना चाहिए। पाकशाला में पानी से संबंधित वस्तुओं जैसे नल, वाश–बेसिन, पानी का भण्डारण आदि सभी ईशान कोण की ओर करना चाहिए। बिजली से संबंधित उपकरण या मेन स्विच आदि को अग्निकोण की ओर रखना चाहिए एवं फ्रिज को पश्चिम दिशा में रखना चाहिए।रसोईघर में अनावश्यक सामान न रखें।

दक्षिण दिशा की रसोई में पके खाने का स्वाद कुछ तीखा, उत्तर दिशा की रसोई में पके खानेका स्वाद मीठा तथा उत्तर–पश्चिम की रसोई में पके खाने का स्वाद फीका होगा। पूर्व दिशा की रसोई में पके खाना खाने से रक्तचाप एवं मधुमेह बीमारी होने की संभावना होगी। ईशान कोण में रसोई होने से भूख कम लगेगी तथा भोजन का स्वाद कड़वा लगता है।

मकान के रसोई घर में एक ही चबूतरे पर गैस का चूल्हा और बर्तन धोने का सिंक नहीं होना चाहिए, इससे आपके परिवार में कलह होती रहेगी। उपाय के तौर पर इन दोनों जगहों के मध्य पंचमुखी हनुमान का चित्र लगायें। रसोई घर में फर्श और दीवारों का रंग आपके मनचाहेरंगों के अनुसार हो सकता, लेकिन जहाँ तक हो सके यह काला या सफेद नहीं होना चाहिए।

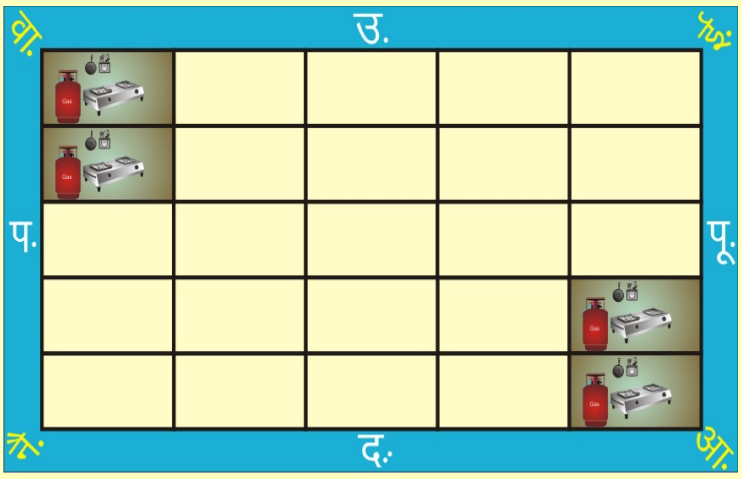

मकान में घर (किचेन) के लिए उपयुक्त स्थान

लाल–किताब वास्तु के अनुसार शयनकक्ष के लिए सुझाव

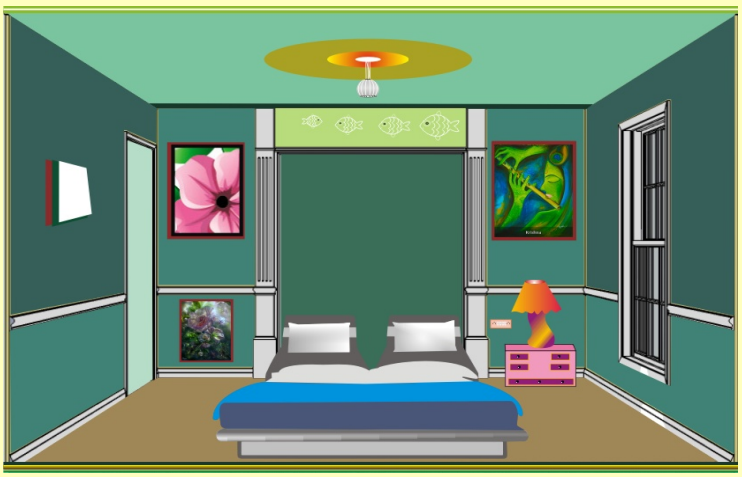

वास्तुशास्त्र के अनुसार, परिवार के सदस्यों के अनुसार शयनकक्ष का निमार्ण करना चाहिए। घर के मुखिया के लिए शयनकक्ष दक्षिण दिशा में बनाना चाहिए एवं नवविवाहिता या युवा दम्पति का शयनकक्ष वायव्य एवं उत्तर दिशा के मध्य में बनाना चाहिए। घर में आने वाले अतिथियों के लिए शयन कक्ष का निर्माण वायव्य कोण में करना चाहिए। लोहे की चारपाई याअपने लोहे के बेड को पूर्व–दक्षिण में न बिछाएं, इससे धन हानि होगी और बीमारी का साथहोगा। इसलिए, लोहे की चारपाई को पश्चिम में बिछाएं और प्लाईवुड लगायें, इससे हानि नहीं होगी। गृह स्वामी को दक्षिण–पश्चिम के कमरे में सोना चाहिए।

शयनकक्ष का निर्माण अग्निकोण, ईशान कोण अथवा मध्य में नहीं करना चाहिए। अग्निकोण मेंशयनकक्ष होने से पारिवारिक जीवन कलहपूर्ण एवं अशान्त होता है तथा मुकदमें आदि जैसी परेशानियां भी झेलनी पड़ती हैं। जबकि ईशानकोण में शयनकक्ष होने पर आर्थिक रूप से हानिहोती है तथा कार्यों में अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न होने से विलम्ब होता है। शयनकक्ष में बिस्तर या पलंग लगाते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उसके उपर बीम अथवा शहतीर आदि नहीं आए।

शास्त्रों के अनुसार सोते समय सिरहाना पूर्व अथवा दक्षिण की ओर रखना शुभ फलदायक होता है, परन्तु पश्चिम एवं उत्तर दिशा की ओर सिरहाना रखना अशुभ होता है। पूर्व की ओरसिर रखकर सोने से ज्ञान, बुद्धि एवं विद्या में वृद्धि होती है एवं दक्षिण की ओर सिर करकेसोने से आयु लम्बी होती है। जबकि पश्चिम की ओर सिरहाना रखने से मानसिक तनाव एवं दुःख में वृद्धि होती है तथा उत्तर की ओर सोना मृत्यु को प्राप्त करने के बराबर होता है।

शयनकक्ष के बायें हाथ की तरफ पड़ने वाली खिड़कियों को ठीक हालत में रखें, इससे दाम्पत्य जीवन में तनाव कम होगा। शयन कक्ष के फर्श को चिकना रखें, इससे आपसी प्रेम बना रहेगा। जहां तक संभव हो सके, शयन कक्ष में बाहरी लोगों को न बैठायें, आपसी शक की संभावना अधिक होगी। शयन कक्ष के अंदर किसी भी तरह के जल के श्रोत की व्यवस्था नहीं करनी चाहिए, अन्यथा परिवार का कोई सदस्य बाहरी प्रेम–प्रसंग में फंस सकते हैं।

यदि विवाहित दंपत्ति के बीच कलह हो और शुरूआत पत्नी की तरफ से हो तो शयन कक्ष

की दीवारों पर गुलाबी रंग का पेंट करना, सुन्दर पेंटिंग लगाना, हल्के गुलाबी रंग के पर्दे का प्रयोग करना, हल्के आवाज में संगीत की व्यवस्था करना तथा मनमोहक प्रकाश की व्यवस्था करना काफी लाभदायक होता है। यदि कलह की शुरूआत पति की तरफ से हो तो कमरे में लाल पेंट करायें। टी. वी. शयनकक्ष में न लगवायें। दीवारों पर तांबे के सजावट के सामान लगवाना, गुलाबी या लाल रंग के नाइट लैंप लगाना काफी लाभदायक होगा। यदि कोई संतान चिड़चिड़ी स्वभाव की है तो उसके लिए शयन कक्ष की व्यवस्था उत्तर–पश्चिम की दिशा वाले कमरे में करें।

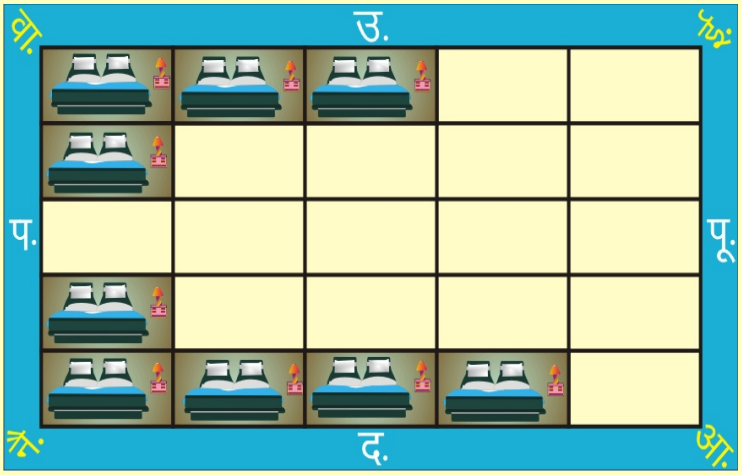

मकान में शयनकक्ष (बेडरूम) के लिए उपयुक्त स्थान

लाल–किताब वास्तु के अनुसार भोजन कक्ष के लिए सुझाव

यदि रसोईघर में भोजन करने की व्यवस्था न करके उसके लिए पृथक भोजनालय की व्यवस्थाकरनी हो तो मकान के पश्चिम दिशा में भोजनकक्ष बनवाना चाहिए अथवा जिस कक्ष मेंभोजन करना हो उसके पश्चिम ओर ही डाइनिंग टेबल आदि रखना चाहिए। डाइनिंग टेबल का आकार गोलाकार अथवा अंडाकार की अपेक्षा वर्गाकार या आयताकार हो तो अधिक

उपयुक्त होता है। भोजन के लिए बैठने की व्यवस्था ऐसी हो कि भोजन करते समय मुख पूर्व या उत्तर दिशा में रहे, न कि पश्चिम अथवा दक्षिण दिशा में।

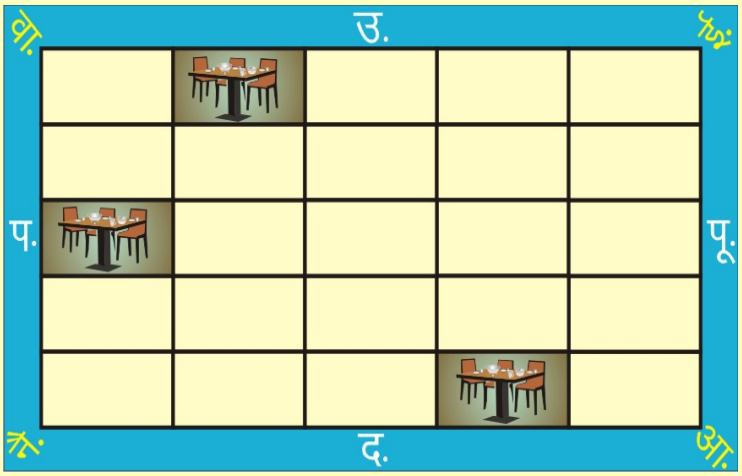

मकान में भोजन कक्ष (डाइनिंग रूम) के लिए उपयुक्त स्थान

लाल–किताब वास्तु के अनुसार अतिथि कक्ष के लिए सुझाव

वास्तुशास्त्र के अनुसार, घर में आने वाले अतिथियों के लिए कक्ष का निर्माण वायव्य कोण में करना चाहिए। अतिथि कक्ष में गद्दा बिछाकर मसनद लगाना या सोफा सेट लगाना ठीक रहता है। यदि गद्दे का प्रयोग करते हैं तो मसनद हमेशा दक्षिण या पश्चिम की ओर लगायें।यदि सोफा लगा रहे हैं तो इसे भी दक्षिण या पश्चिम की तरफ ही लगायें। उत्तर एवं पूर्व में खाली जगह छोड़नी चाहिए।

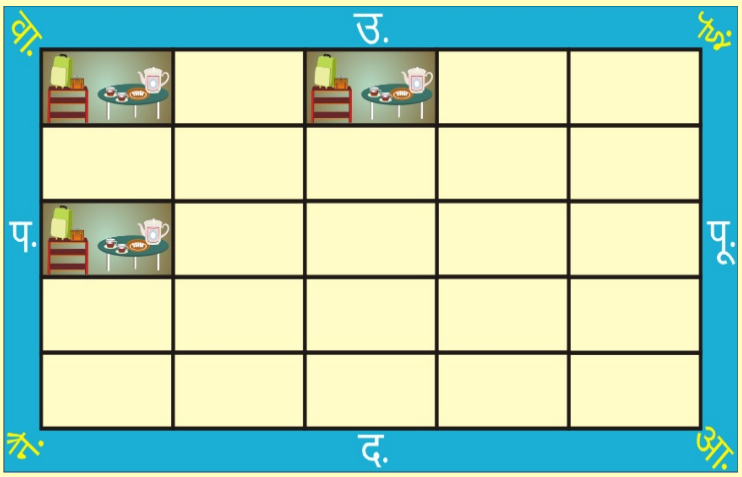

मकान में अतिथि कक्ष (गेस्ट रूम) के लिए उपयुक्त स्थान

लाल–किताब वास्तु के अनुसार अध्ययन कक्ष के लिए सुझाव

वास्तुशास्त्र के अनुसार, अध्ययन हेतु कक्ष का निर्माण पश्चिम एवं नैऋत्य में होना अधिक अनुकूल होता है। इस दिशा में बैठकर पढ़ने से अध्ययनकर्ता एकाग्रचित्त होकर अध्ययन करने में सक्षम होता है। अध्ययन कक्ष में अनावश्यक एवं बिखरा हुआ सामान अथवा किताबों का होना भी अध्ययन को बाधित करता है। अतः अध्ययन कक्ष स्वच्छ एवं सुसज्जित रखना चाहिएएवं अध्ययन करने वाली मेज पर भी किताबों का ढेर बनाकर नहीं रखना चाहिए। पढ़ने की मेज को उत्तर या पूर्व दिशा की ओर रखना चाहिए एवं इस प्रकार व्यस्थित करना चाहिए कि विद्यार्थी का मुख उत्तर अथवा पूर्व की ओर रहे।

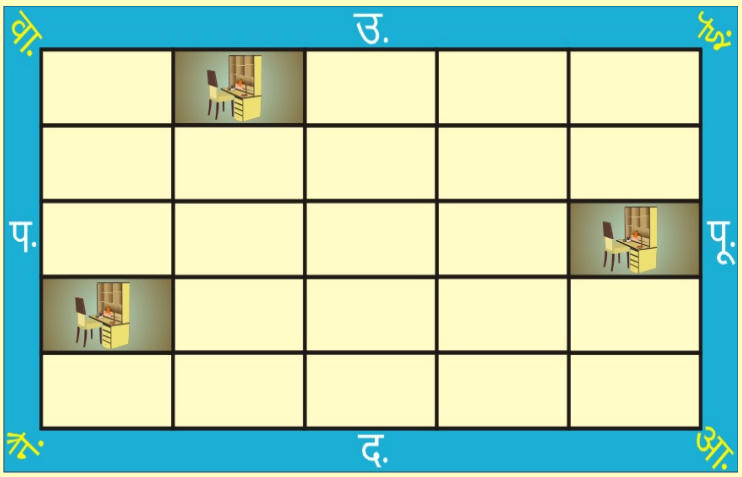

मकान में अध्ययन कक्ष (स्टडी रूम) के लिए उपयुक्त स्थान

लाल–किताब वास्तु के अनुसार शौचालय (टॉयलेट) के लिए सुझाव

वास्तुशास्त्र के अनुसार, नैऋत्य एवं दक्षिण दिशा के मध्य के स्थान को शौचालय के लिए सर्वाधिक उचित माना गया है। अग्निकोण, ईशानकोण, पूर्व अथवा मकान के मध्य मे शौचालयका निर्माण कदापि नहीं करना चाहिए। यदि शयन कक्ष के साथ संलग्न शौचालय बनाना हो तो उस कक्ष के वायव्य कोण में बनाना अधिक अनुकूल होता है। शौचालय की बैठक को इस प्रकार लगाएं कि बैठते समय व्यक्ति का मुख उत्तर अथवा दक्षिण दिशा की ओर रहे। पूर्व दिशा की ओर बैठकर मल–मूत्र का त्याग करना अशुभ होता है।

बाहरी शौचालय को पूर्व या उत्तर में दीवार के सहारे न बनायें। यदि पूर्व या उत्तर में ही बनाना जरूरी हो तो चारदीवारी के सहारे न बनायें, बीच में कुछ जगह छोड़ दें तथा इसका फर्श मकान के फर्श से नीचा रखना चाहिए।

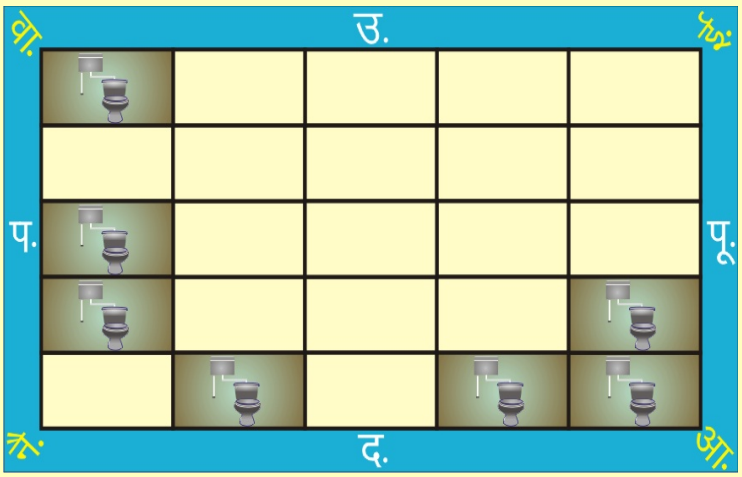

मकान में शौचालय (टॉयलेट) के लिए उपयुक्त स्थान

लाल–किताब वास्तु के अनुसार स्नानघर के लिए सुझाव

स्नानघर के लिए सर्वाधिक उपयुक्त स्थान पूर्व की ओर माना जाता है, परन्तु उसके साथ शौचालय का निर्माण नहीं करना चाहिए। यदि पूर्व में शौचालय बनाना आवश्यक हो तो अग्निकोण में शौचालय का निमार्ण करके पूर्व दिशा में स्नानघर का निर्माण करना चाहिए। नैऋत्य, ईशान एवं मध्य में स्नानघर नहीं बनाना चाहिए। वाश बेसिन के लिए पूर्व, ईशान या उत्तर किसी भी दिशा की दीवार का चयन किया जा सकता है।

मकान के बाहर स्नानघर दक्षिण–पश्चिम में पश्चिम दिशा की पश्चिमी दीवार के सहारे बनायें या दक्षिण–पश्चिम में दक्षिण की ओर दक्षिणी दीवार के साथ बनायें। बाहरी स्नानघर को पूर्व या उत्तर में दीवार के सहारे न बनायें। यदि पूर्व या उत्तर में ही बनाना जरूरी हो तो चारदीवारी के सहारे न बनायें, बीच में कुछ जगह छोड़ दें तथा इसका फर्श मकान के फर्श से नीचा रखना चाहिए। जहां तक संभव हो सके, स्नानघर एवं शौचालय को अलग–अलग बनानाचाहिए।

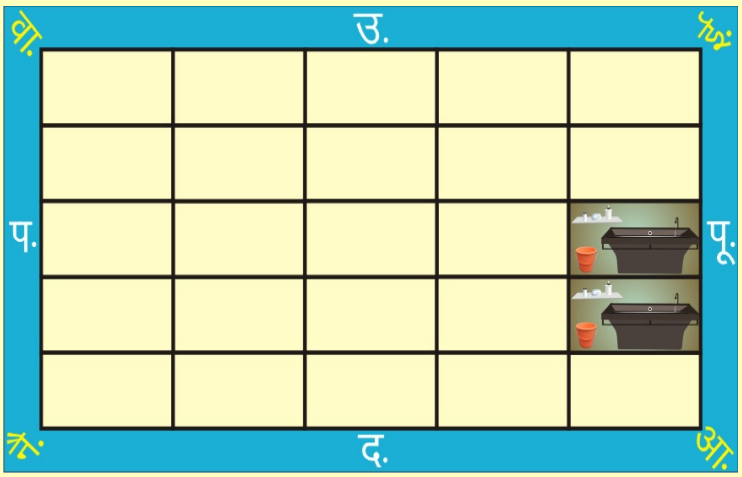

मकान में स्नानघर (बाथरूम) के लिए उपयुक्त स्थान

लाल–किताब वास्तु के अनुसार बैठक (ड्रॉइंगरूम) के लिए सुझाव

वास्तुशास्त्र के अनुसार, आवासीय मकान में बैठक के लिए पूर्व अथवा उत्तर दिशा को अधिक अनुकूल माना गया है, परन्तु मकान के मुख्य द्वार के अनुसार सुविधा के लिए अन्य दिशाओं मेंभी बैठक बनाया जा सकता है। बैठक की साज–सज्जा का ध्यान विशेष रूप से करना चाहिए। इस कक्ष में दीवारों पर हिसंक, वीभत्स एवं डरावने चित्र नहीं लगाने चाहिए, बल्कि सुन्दर एवं आकर्षक तस्वीरें लगानी चाहिए। इसी प्रकार इस कक्ष में कंटीली, नुकीली अथवा धारीदार वस्तुयें न रखकर सुगंधित एवं आकर्षक फूल आदि रखने चाहिए।

बैठक में फर्नीचर रखते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि भारी एवं बड़े आकार के फर्नीचर दक्षिण अथवा पश्चिम दिशा की ओर हो एवं हल्के एवं छोटे आकार के फर्नीचर उत्तर एवं पूर्व दिशा की ओर हों। बैठने की व्यवस्था इस प्रकार से करनी चाहिए कि घर का मुखियाका स्थान बैठते समय दक्षिण अथवा पश्चिम की ओर हो एवं मुख उत्तर अथवा पूर्व दिशा की ओर हो। हॉल में पानी बहने वाले चित्र न लगायें, आपका धन पानी की तरह खर्च

होगा। लॉन या बैठक में कैक्ट्स का पौधा न लगायें, परिवार में तनाव बढ़ता है।

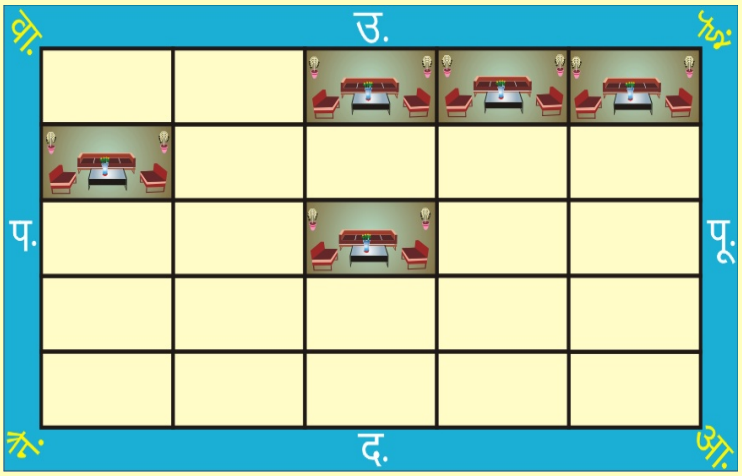

मकान में बैठक (ड्रॉइंगरूम) के लिए उपयुक्त स्थान

लाल–किताब वास्तु के अनुसार कोषागार (तिजोरी) के लिए सुझाव

वास्तुशास्त्र के अनुसार, तिजोरी के लिए उत्तर दिशा का कमरा अधिक अनुकूल होता है। उत्तर दिशा के कमरे में दक्षिणी दीवार की ओर तिजोरी रखनी चाहिए एवं उसका मुख उत्तर की ओर रखना चाहिए। यदि तिजोरी दीवार में लगी हो अथवा आलमारी में हो तो उसमें कीमती वस्तुओं के लिए सबसे उपर के खाने में स्थान बनाना चाहिए। ईशान या वायव्य कोण में तिजोरी या बहुमूल्य वस्तुओं को नहीं रखना चाहिए। ईशानकोण में रखने पर धन का क्षय होता है एवं वायव्य कोण में रखने पर धन कभी भी घर में जमा निधि के रूप में नहीं रुकता है एवं आर्थिक हानि भी होती है।

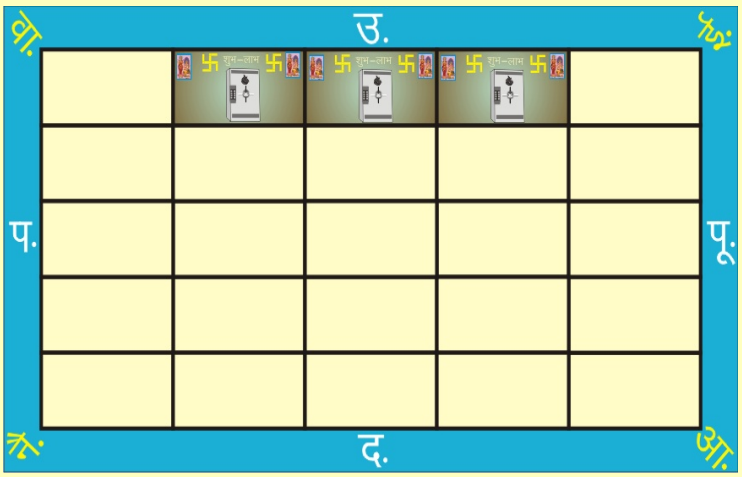

मकान में कोषागार (तिजोरी) के लिए उपयुक्त स्थान

लाल–किताब वास्तु के अनुसार तहखाना (बेसमेंट) के लिए सुझाव

अधिकांश वास्तुविदों के मतानुसार मकान में बेसमेंट का निर्माण नहीं करना चाहिए, परन्तु वर्तमान समय में भूमि की मांग एवं कीमतों में वृद्धि के फलस्वरूप मकान में बेसमेंट बनाने का प्रचलन अधिक हो गया है। अतः बेसमेंट बनाना यदि आवश्यक हो तो मकान के उत्तर एवं पूर्वदिशा में बेसमेंट बनाएं अथवा सम्पूर्ण मकान में ही बेसमेंट बनाएं। मकान के मात्र दक्षिण दिशा में अथवा पश्चिम दिशा में बेसमेंट कदापि नहीं बनाना चाहिए। व्यवसाय हेतु भी बेसमेंट पूर्व अथवा उत्तर दिशा में ही रखना शुभ साबित होता है।

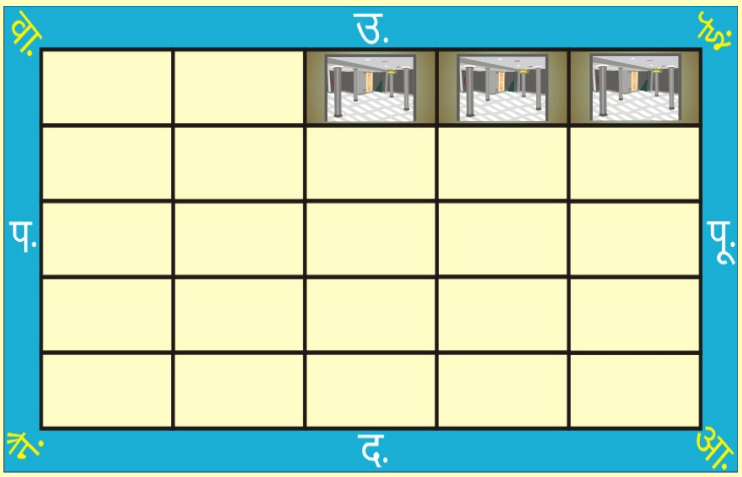

मकान में तहखाना (बेसमेंट) के लिए उपयुक्त स्थान

लाल–किताब वास्तु के अनुसार छत की पानी की टंकी के लिए सुझाव

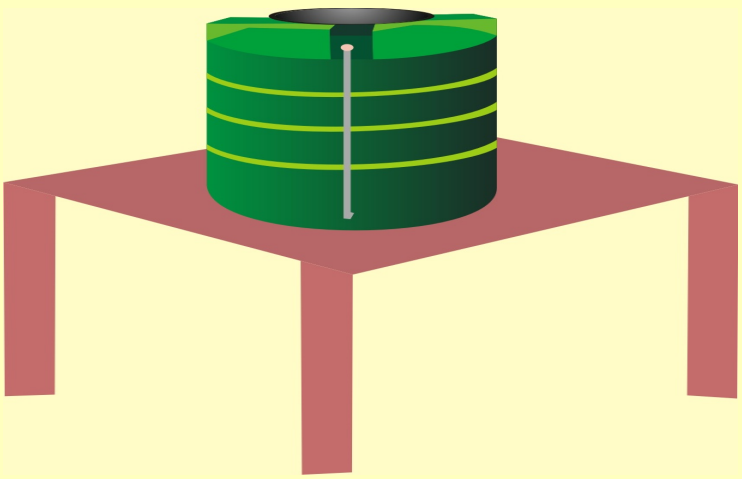

वास्तुशास्त्र के अनुसार छत पर बनाई जाने वाली पानी की टंकी के लिए नैऋत्य कोण अधिक उपयुक्त माना जाता है, परन्तु स्थानाभाव होने पर वायव्य कोण में भी पानी की टंकी लगाई जा सकती है, यदि टंकी वायव्य कोण में लगाना हो तो मकान के नैऋत्य कोण में एक ऐसा कमरा बनवाएं जिसकी उंचाई पानी की टंकी से अधिक हो। कभी भी पानी की टंकी उत्तर या ईशान कोण में नहीं बनानी चाहिए।

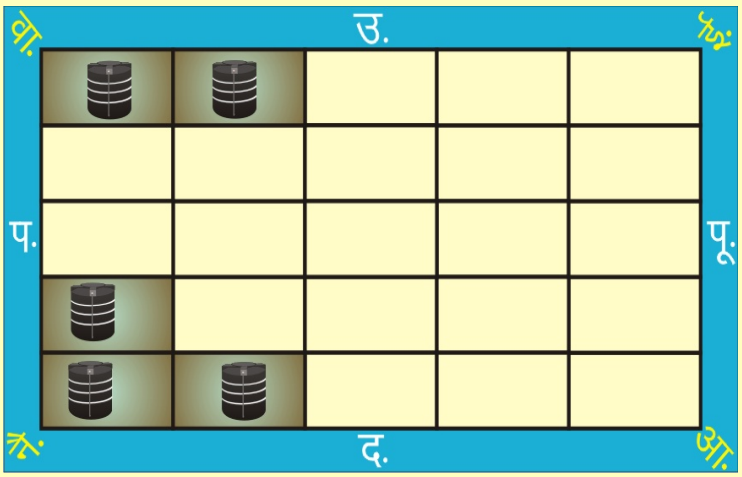

मकान में छत की पानी की टंकी के लिए उपयुक्त स्थान

लाल–किताब वास्तु के अनुसार सीढ़ियों के लिए सुझाव

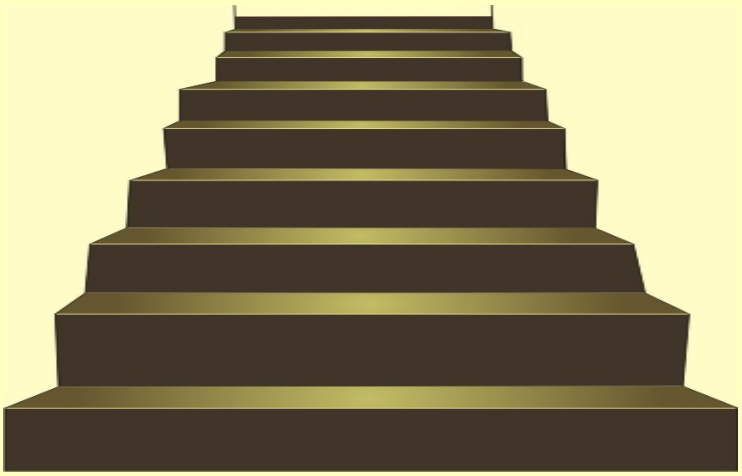

वास्तुशास्त्र के अनुसार सीढ़ियों के लिए सर्वाधिक उत्तम स्थान भवन के पीछे दक्षिण एवं पश्चिम दिशा को माना जाता है एवं सीढ़ियों का द्वार पूर्व अथवा दक्षिण दिशा की ओर रखना शुभ होता है। यदि घुमावदार सीढ़ियों का निर्माण करवाना हो तो घड़ी की सुई के घूमने की दिशा के अनुसार, यानि दक्षिणावर्त, सीढ़ियों का घुमाव रखना चाहिए। मकान में वास्तुनुकूल बनाई गई सीढ़ियां सदैव शुभ फल प्रदान करती हैं।

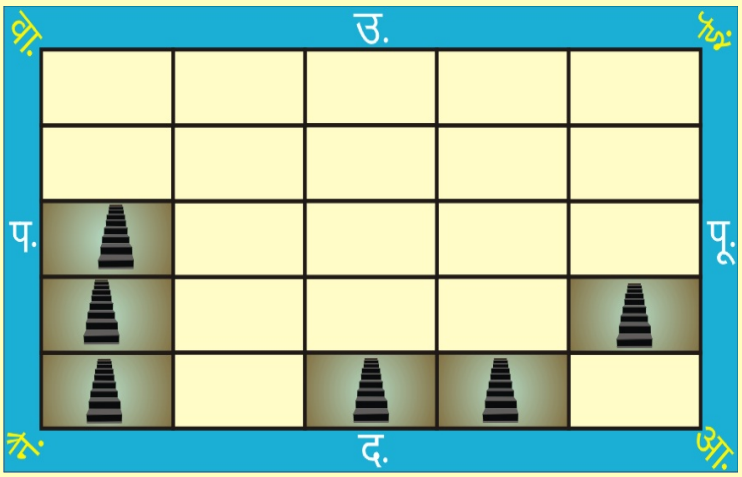

मकान में सीढ़ियों के लिए उपयुक्त स्थान

लाल–किताब वास्तु के अनुसार खिड़कियों के लिए सुझाव

वास्तुशास्त्र के अनुसार मकान में खिड़कियों का निर्माण करवाते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इनका निर्माण उत्तर अथवा पूर्व दिशा की ओर अधिकाधिक हो, ताकि मकानमें हवा एवं प्रकाश का आवागमन अधिकाधिक होता रहे। मकान में हवा एवं धूप के आने से पारिवारिक सदस्यों का स्वास्थ्य सामान्यतः ठीक रहता है एवं रोगादि की संभावनाएं कम होती हैं, जिससे दवा एवं उपचार आदि पर होने वाले व्यय में कमी आती है। इसके विपरीत, यदि पश्चिम अथवा दक्षिण दिशा की ओर खिड़कियां एवं दरवाजे अधिक हों तो संभव होने परउन्हें बन्द करवा देना चाहिए, अन्यथा उनपर मोटे पर्दे लगवा देना चाहिए। ऐसा करने से पारिवारिक सदस्यों के स्वास्थ्य पर तो अनुकूल प्रभाव पड़ता ही है, साथ ही साथ पीठ पीछे बुराई भी कम होती है।

लाल–किताब वास्तु के अनुसार बालकनी (टैरेस) के लिए सुझाव

मकान में बालकनी का निर्माण करवाते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इनका निर्माण उत्तर अथवा पूर्व दिशा की ओर अधिकाधिक हो, ताकि मकान में हवा एवं प्रकाश का आवागमन अधिकाधिक होता रहे। मकान में हवा एवं धूप के आने से पारिवारिक सदस्यों का स्वास्थ्य सामान्यतः ठीक रहता है एवं रोगादि की संभावनाएं कम होती हैं, जिससे दवा एवं उपचार आदि पर होने वाले व्यय में कमी आती है। बालकनी का स्थान भूखंड की दिशा पर निर्भर करता है। यदि पूर्वोन्मुखी भूखंड है तो बालकनी उत्तर–पूर्व में पूर्व की ओर बनाना चाहिए। उत्तरोन्मुखी भूखंड पर उत्तर–पूर्व में उत्तर की ओर, पश्चिमोन्मुखी भूखंड पर उत्तर–पश्चिम में पश्चिम की ओर तथा दक्षिणोन्मुखी भूखंड पर दक्षिण–पूर्व में दक्षिण की ओरबालकनी बनवायें।

लाल–किताब वास्तु के अनुसार बिजली के मीटर बोर्ड, मेन स्विच के लिए सुझाव

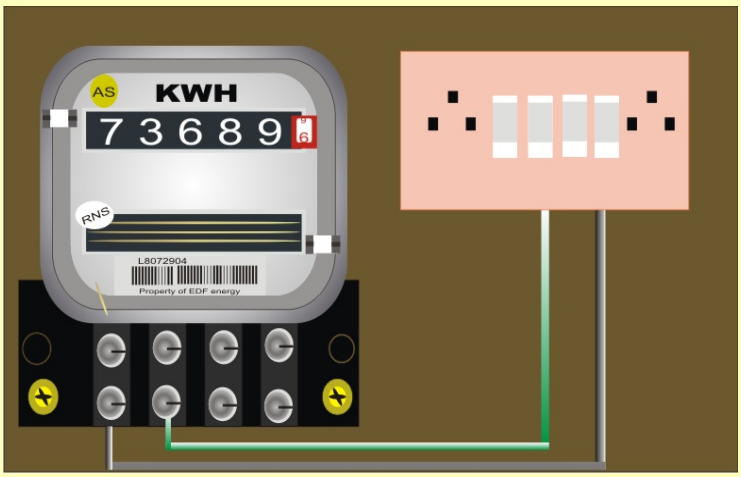

वास्तुशास्त्र के अनुसार,मकान में विद्युत से संबंधित उपकरण, मीटर बोर्ड, विद्युत कक्ष आदि की व्यवस्था अग्निकोण में करना सर्वाधिक उत्तम माना जाता है। अतः अग्निकोण में ही इन्हें

लगवाना चाहिए।

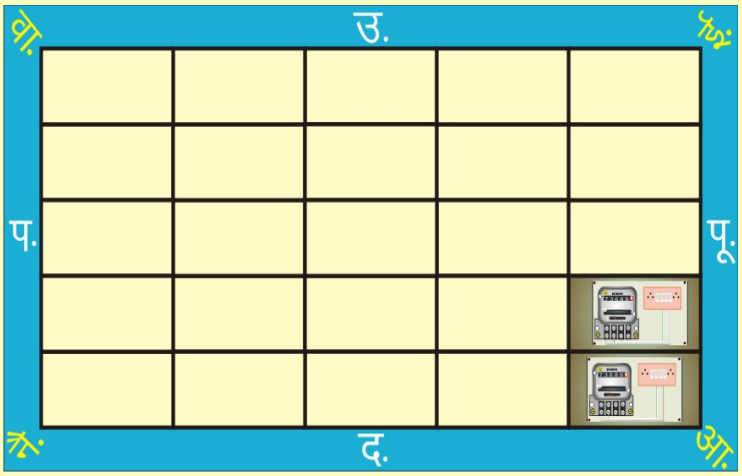

मकान में बिजली के मीटर बोर्ड, मेन स्विच के लिए उपयुक्त स्थान

लाल–किताब वास्तु के अनुसार गैराज (कार पार्किंग) के लिए सुझाव

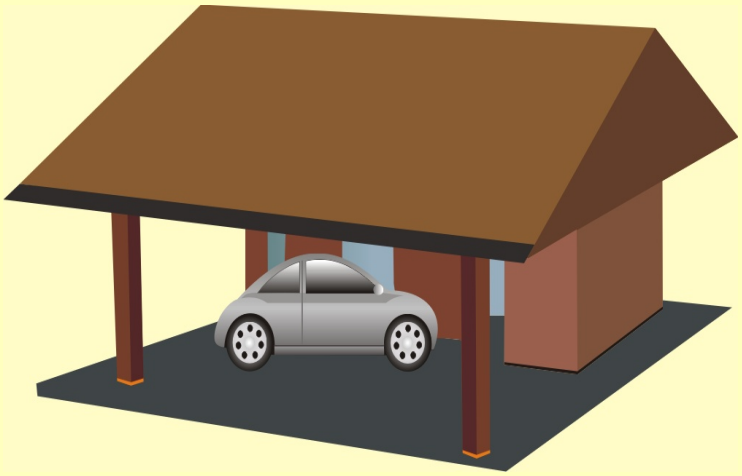

वाहन आदि की पार्किंग के लिए वास्तुविदों ने वायव्य कोण एवं उत्तर अथवा पूर्व दिशा को सर्वाधिक अनुकूल माना है। यदि पार्किंग स्थल पूर्व, उत्तर या वायव्य दिशा में बनाना संभव न हो एवं दक्षिण दिशा में बनाना आवश्यक हो तो आग्नेय कोण की ओर बनाना चाहिए। वाहन आदि की पार्किंग के लिए ईशान या नैऋत्य कोण अशुभ होता है इसलिए इस दिशा में पार्किंगबनाने से बचना चाहिए।

यदि भूखंड पूर्व या उत्तर–पूर्व है तो पोर्टिको उत्तर–पूर्व में पूर्व की ओर बनायें। उत्तर दिशा का भूखंड होने पर पोर्टिको उत्तर–पूर्व में उत्तर की ओर रखना चाहिए। उत्तर–पश्चिम भूखंडहोने पर पोर्टिको पश्चिम में उत्तर–पश्चिम दिशा में बनाना चाहिए। दक्षिण दिशा का भूखंड होने पर दक्षिण–पूर्व की ओर दक्षिण दिशा में पोर्टिको बनाना चाहिए। आग्नेय कोण के

भूखंड में दक्षिण में दक्षिण–पूर्व की दिशा में पोर्टिको बनाना चाहिए। यदि भूखंड पूर्वोन्मूखी है, लेकिन मार्ग उत्तर–पूर्व में है तो पोर्टिको उत्तर में उत्तर–पूर्व या पूर्व दिशा में बनाना चाहिए।

गैरेज का स्थान सेवक निवास के नजदीक बनाना चाहिए। यदि भूखंड पूर्वोन्मूखी है तो दक्षिण–पूर्व दिशा में, उत्तरोन्मुखी है तो उत्तर–पश्चिम में उत्तर दिशा में और यदि दक्षिणोन्मुखी है तो दक्षिण–पश्चिम में पश्चिम की ओर बनाना चाहिए।

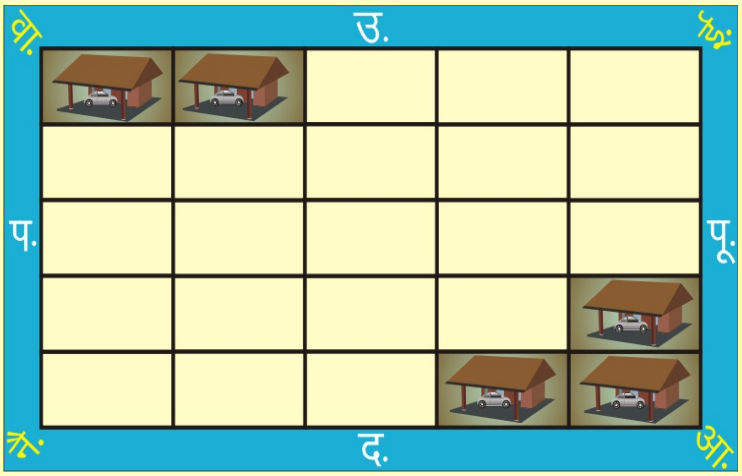

मकान में गैराज (कार पार्किंग) के लिए उपयुक्त स्थान

लाल–किताब वास्तु के अनुसार सैप्टिक टैंक के लिए सुझाव

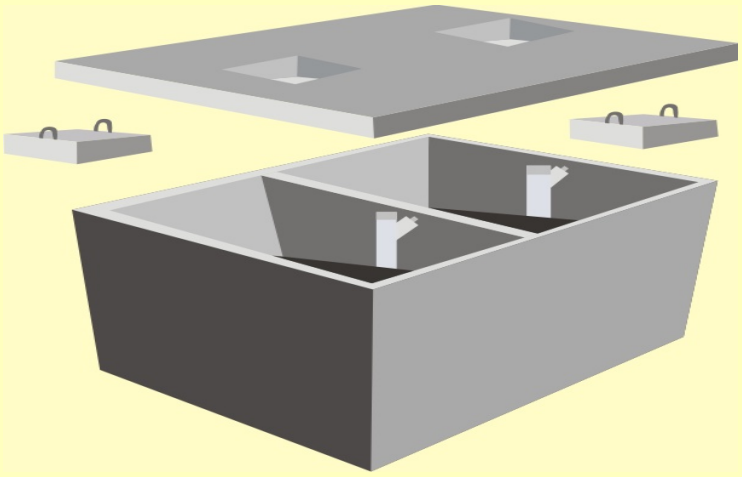

वास्तुशास्त्र के अनुसार, सैप्टिक टैंक के गड्ढे के लिए स्थान का चयन उत्तर, पश्चिम, वायव्य अथवा अग्कोण के क्षेत्र से पूर्व दिशा की ओर करना चाहिए एवं साथ ही मकान में सैप्टिक टैंक बनाते समय इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि यह घर की नींव, दीवार अथवा चाहरदीवारी से सटा हुआ ना हो एवं इनके बीच दो से पांच फीट तक का अन्तर रहे।

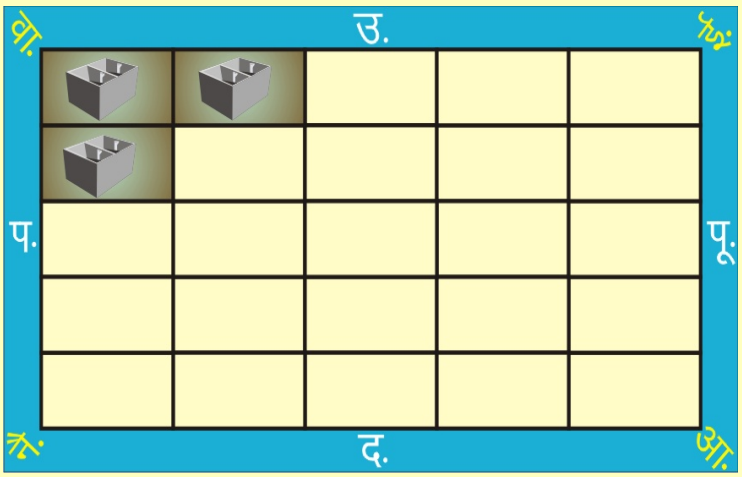

मकान में सैप्टिक टैंक के लिए उपयुक्त स्थान

लाल–किताब वास्तु के अनुसार कुंआ, बोरिंग व भूमिगत टैंक के लिए सुझाव

वास्तुशास्त्र के अनुसार भूमिगत जल के स्रोत जैसे कुंआ, ट्यूबवेल, नलकूप, बोरिंग अथवा भूमिगत टैंक के लिए पूर्व, पश्चिम, उत्तर अथवाईशान कोण को उपयुक्त माना गया है। भूमिगत जल के स्रोत इन्हीं दिशाओं में होने चाहिए। भवन के मध्य, नैऋत्य, वायव्य व अग्निकोण में किसी भी प्रकार का कोई भी भूमिगत जल का स्रोत कदापि नहीं बनाना चाहिए।इन दिशाओं में जल के स्रोत होने से घर–परिवार के सदस्यों में सदैव किसी प्रकार काभय व चिन्ता आदि बनी रहती है। यदि मकान के आस–पास उत्तर–पूर्व कोण में उत्तर कीओर कोई नदी या तालाब है तो मकान मालिक को काफी शुभ फल प्राप्त होगा। पश्चिम, पश्चिम–उत्तर में पश्चिम की ओर, दक्षिण, दक्षिण–पूर्व में दक्षिण की ओर तथा उत्तर–पश्चिम में नदी या तालाब होना शुभ फलदायक नहीं होता है।

मकान में नाली उचित स्थान पर लगाना चाहिए, अन्यथा पानी के ठहराव के कारण मकान में

सीलन लग सकती है, जिसके फलस्वरूप मकान की दीवारें कमजोर होंगी। पानी के ठहराव केकारण परिवार के लोगों को कई तरह की बीमारियों का सामना करना पड़ सकता है।

पूर्वोन्मुखी मकान में ड्रेनेज पाइप उत्तर–पूर्व में पूर्व दिशा की ओर, उत्तरोन्मुखी मकान में उत्तरमें उत्तर–पूर्व की ओर, दक्षिणोन्मुखी मकान में दक्षिण–पूर्व में दक्षिण की ओर तथा पश्चिमोन्मुखी मकान में पश्चिम की ओर उत्तर–पश्चिम में ड्रेनेज पाइप लगवाना चाहिए।

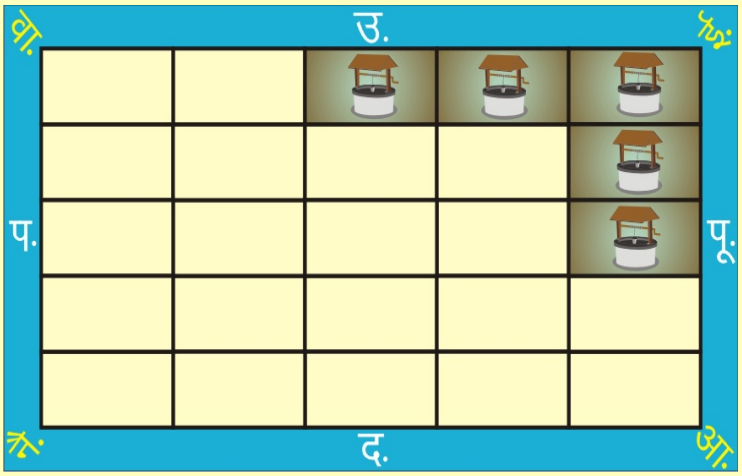

मकान में कुंआ, बोरिंग व भूमिगत टैंक के लिए उपयुक्त स्थान

वास्तुशास्त्र में दिशाओं का महत्व

उत्तर दिशा

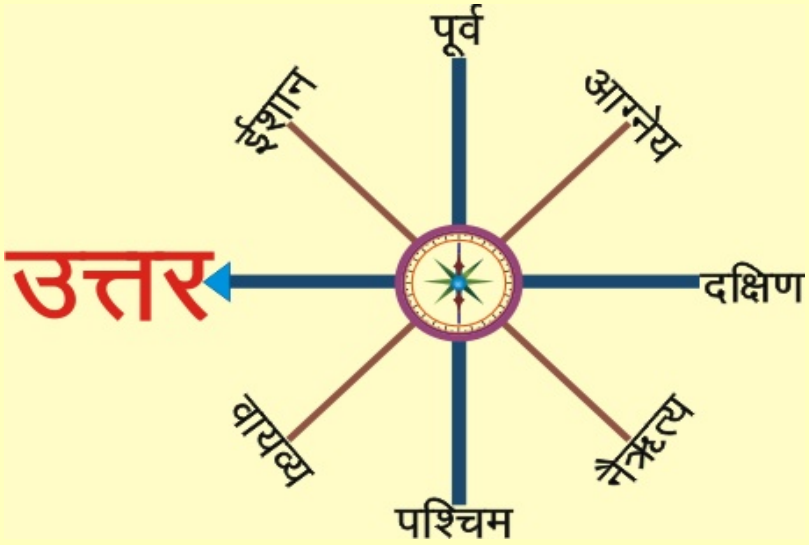

उत्तर दिशा का मालिक कुबेर को माना गया है। मकान के उत्तर दिशा की ओर की भूमि का स्तर नीचा होना चाहिए एवं निर्मित स्थान भी नीचे की तरफ होना चाहिए। वास्तु के अनुसार, उत्तर दिशा में बरामदा का निर्माण करना अधिक शुभ होता है। इसके अतिरिक्त, इस दिशा में मुख्य द्वार, सीढ़ियां अथवा कीमती सामान जैसे जेवर, रूपए, पैसे आदि रखने हेतु स्थान बनानाभी शुभ होता है। इस दिशा में अधिक भार नहीं होना चाहिए तथा जितना अधिक खालीभाग होगा, उतना ही अधिक आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। उत्तर दिशा में कोई बड़ी इमारत या पहाड़ होना अशुभता को बढ़ायेगा। इस दिशा में हरे या सफेद रंग के शीशे या पर्देलगाना लाभदायक होगा।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, उत्तर दिशा की ओर से घर और इस दिशा की बालकनी अथवा बरामदा आदि सभी नीची होनी चाहिए। इससे उसमें रहने वाली स्त्रियों पर शुभ प्रभाव पड़ता है एवं घर में धन लाभ भी अधिक होता है। मकान के उत्तर दिशा में खाली स्थान दक्षिण दिशा की तुलना में अधिक होना शुभ फलदायक होता है। इससे मकान मालिक एवं अन्य सदस्य ऐश्यवर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं। मकान का मुख्य द्वार यदि उत्तर दिशा में ईशान की ओर हो तो यह अति शुभ फल प्रदान करता है। ऐसे मकान में अत्यंत बुद्धिमान एवं मेधावीबच्चों का जन्म होता है एवं घर की सुख–समृद्धि सदैव बनी रहती है। मकान में उपयोगकिए गए जल का निकास उत्तर से होता हुआ ईशान कोण से बाहर निकालना शुभ होगा। इससे व्यवसायिक उन्नति होगी एवं आर्थिक सुदृढ़ता आएगी।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, उत्तर दिशा एवं मकान के उत्तरी भाग का उंचा होना उस मकान में

निवास करने वाली स्त्रियों के लिए अशुभ होता है। ऐसे मकान की स्त्रियां सदैव किसी न किसी प्रकार के रोग से पीड़ित रहती हैं अथवा किसी लम्बी या स्थाई रोग का शिकार हो जाती हैं। इसके अतिरिक्त धन हानि भी होती है। मकान के उत्तर दिशा में द्वार हो, जो वायव्य की ओर हो, तो उस मकान में चोरी एवं आगजनी से हानि होने की संभावना प्रबल होती है। मकान के उत्तर दिशा की ओर उंचे मकान या उंचे टीले नहीं होने चाहिए। इनके होने से सदैव धन हानि होती रहती है। यदि मकान के परिसर में दक्षिण दिशा में खुला स्थानअधिक हो एवं उत्तर दिशा में खुला स्थान बिल्कुल न हो तो ऐसे मकान में अधिक समयतक बसेरा नहीं रहेगा अर्थात शीघ्र ही यह मकान उजड़ जाएगा।

दक्षिण दिशा

दक्षिण दिशा का स्वामी यम को माना गया है। मकान के दक्षिण दिशा की ओर शयन कक्ष का निर्माण करना चाहिए। इस दिशा की भूमि या मकान के निर्मित भाग को अन्य दिशाओं कीअपेक्षा उंचा रखना चाहिए। दक्षिण दिशा के शीशे, पर्दे आदि काले रंग का रखना लाभदायक होगा।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, जिस भूखण्ड पर मकान का निर्माण करवाना हो, उससे लगती हुई सड़क यदि दक्षिण दिशा में हो तो मकान का निर्माण उसकी सीमा से सटकर करवाना शुभ फलदायक रहेगा। मकान के दक्षिण दिशा में निर्मित कमरों के भीतर भारी वस्तुओं को रखना शुभ होता है। दक्षिण दिशा में निर्मित कमरों को भी उत्तर दिशा में निर्मित कमरों से उंचा रखना शुभ फलदायक होता है। यदि संभव हो तो मकान के दक्षिणी भाग में उपयोग किए गएजल का निकास उत्तर दिशा से करना चाहिए। ऐसा करने से मकान में निवास करने वाली स्त्रियों के स्वास्थ्य पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है एवं आर्थिक दृष्टि से भी स्थिति सुदृढ़ होती है।आवसीय परिसर के दक्षिणी भाग को उत्तरी भाग से सदैव उंचा रखना चाहिए। ऐसा मकान में रहने वाले लोगों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से शुभ फल प्राप्त होता है एवं धन में भी वृद्धि

होती है।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, यदि बालकनी दक्षिण दिशा में झुकी हुई बनाई गई हो, तो यह भी उस मकान के निवासियों के लिए अशुभ फल प्रदान करती है। मकान के दक्षिणी भाग की चारदीवारी यदि उत्तरी भाग की चारदीवारी से ऊँची हो तो यह बहुत अशुभ फल प्रदान करतीहै एवं मकान में रहने वालों के लिए बर्बादी का कारण बनती है। मकान के दक्षिणी भाग में जल स्रोत या कुआं का होना बहुत अशुभ होता है। इससे धन एवं जन की हानि की प्रबल संभावना रहती है। मकान का मुख्य द्वार दक्षिण–आग्नेय की ओर नहीं होना चाहिए। इस दिशा में मुख्य द्वार होने पर चोरी, मुकदमा एवं अग्नि से हानि होने की संभावना अधिक होती है। वास्तुशास्त्र के अनुसार, मकान का मुख्य द्वार यदि दक्षिण दिशा में हो तो यह बहुत अशुभहोता है। मकान की दक्षिणी भूमि का स्तर या फर्श उत्तरी भूमि के स्तर या फर्श से नीचाहोना अशुभ फलदायक होता है। ऐसे मकान में निवास करने वाली स्त्रियों का स्वास्थ्य सदैव रोगजनित रहता है एवं मृत्युतुल्य कष्ट की प्रबल संभावना बनी रहती है।

पूर्व दिशा

पूर्व दिशा का मालिक इन्द्र को माना गया है। इसे पितृ भाग भी बोला जाता हैं। मकान में यहदिशा शुभ होने पर पुरूष संतान का सुख उत्तम होता है। वास्तु के अनुसार किसी भी मकान के पूर्व दिशा में कुआं, पानी का पम्प अथवा स्नानघर का निर्माण करवाना शुभ होता है।इस दिशा को छोटा करना या अधिक भार वाली वस्तुओं को रखना अथवा अधिक ऊँचा कर देना अशुभ मान जाता है, इसके फलस्वरूप वंश हानि या धन हानि हो सकती है। इस दिशा में पीले रंग का पर्दा लगाना शुभ रहता है।

यदि पूर्वाभिमुख मकान का मुख्य द्वार बाहर सड़क पर से दिखाई देता है, तो यह वास्तुशास्त्र

के अनुसार शुभ फल प्रदान करने वाला होता है। वास्तुशास्त्र के अनुसार, मकान के पूर्व दिशा की ओर जो भी कक्ष बनाया जाए उसके पूर्वी भाग को नीचा रखना चाहिए। ऐसा करने से मकान मालिक एवं उनके पारिवारिक सदस्य शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ एवं निरोग रहते हैं। यदि किसी को कोई रोग आदि भी होता है, तो वह शीघ्र ही निरोगी हो जाता है। वास्तु के अनुसार, पूर्व दिशा की ओर की बाहरी दीवार पश्चिम दिशा की ओर की दीवार से कम उंची होनी चाहिए। ऐसा करना वंश एवं धन की वृद्धि के लिए शुभ होता है और ऐसे मकान में उत्पन्न होने वाली संतान अपने जीवन में बहुत उन्नति करती है। यदि संभव हो तो पूर्व दिशा की ओर मकान का मुख्य द्वार रखना चाहिए। पूर्वाभिमुख द्वार वाला मकान सभी प्रकार की सुख–शांति एवं सुविधापूर्ण जीवन प्रदान करने वाला होता है। पूर्व दिशा की ओर यदि कुआं अथवा जल के स्रोत की व्यवस्था की जाए तो इससे पारिवारिक सदस्यों की सुख–शांति एवं उन्नति में लाभ होता है। मकान के पूर्व दिशा की ओर यदि संभव हो तो अन्य दिशाओं की अपेक्षा अधिक खुला एवं खाली स्थान रखना चाहिए, इससे वंश एवं धन में कभी कोई कमी नहीं आती है एवं सदैव घर इनसे भरा–पूरा रहता है। यदि संभव हो तो उपयोग किए हुए जलका निकास पूर्व दिशा की ओर से बाहर निकालने की व्यवस्था करनी चाहिए। पूर्व दिशा सेजल का निकास होने से घर की सुख–शांति सदैव बनी रहती है।

यदि मकान का मुख्य द्वार पूर्व दिशा में आग्नेय–पूर्व की ओर अधिक सटकर होगा तो इससे मकान मालिक के मुकदमे आदि में फंसने की संभावना अधिक होगी एवं चोरी आदि का भय भी अधिक रहेगा। यदि मकान के पूर्व दिशा की ओर किसी प्रकार का कोई छोटा–सा भी खुला या खाली स्थान न हो तो ऐसे मकान में रहने वालों को सिरदर्द, पक्षाघात एवं नेत्र रोग अथवा किसी अन्य प्रकार के रोग से पीड़ित होने की संभावना अधिक होती है। मकान के पूर्व में यदि खुला स्थान हो तो वहां पर किसी प्रकार की गंदगी या कूड़ा नहीं डालना चाहिए। क्योंकि इस खाली भाग में गंदगी रखना धन एवं पुत्र के लिए हानिकारक सिद्ध होता है। वास्तुशास्त्र के अनुसार, यदि मकान के पूर्वी भाग से पश्चिमी भाग नीचा हो तो ऐसे मकान में धन की कमी सदैव बनी रहती है तथा ऐसे मकान में उत्पन्न बच्चों का मानसिक विकास भी ठीक ढंग से नहीं होता है, जिससे उनकी उन्नति के अवसर में बाधा आती है।

पश्चिम दिशा

पश्चिम दिशा का मालिक वरूण को माना गया है। वास्तु शास्त्र के अनुसार, मकान के पश्चिमदिशा में सीढ़ियां अथवा बाग–बगीचे की व्यवस्था करना अधिक शुभ होता है, परन्तु कुछवास्तुविद इस दिशा में भोजन का स्थान बनाना भी उचित मानते हैं। इनके अतिरिक्त, पश्चिम दिशा में जल का स्रोत भी रखा जा सकता है। पश्चिम दिशा में भूमि का स्तर अथवा निर्मित भाग का स्तर उंचा रखना चाहिए। पश्चिम दिशा में दरवाजे–खिड़कियां कम रखनी चाहिए तथा सफेद शीशे या पर्दे का प्रयोग करना लाभदायक होगा।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, भूखण्ड के पश्चिम दिशा की ओर की भूमि का स्तर अथवा मकान का फर्श सदैव इसके उत्तर–पूर्व के फर्श से उंचा होना चाहिए। यह मकान मालिक तथा उसके पारिवारिक जनों के लिए शुभ फलदायक होता है। यदि मकान का मुख्य द्वार एवं अन्य द्वार मात्र पश्चिममुखी हो तो वास्तु शास्त्र के अनुसार यह शुभ फल प्रदान करने वाला होता है। यदि पश्चिम दिशा की ओर बड़े–बड़े पत्थर अथवा पेड़ स्थित हैं तो इससे भी मकान में निवासकरने वालों को शुभ परिणाम प्राप्त होते हैं। मकान की पश्चिम दिशा की ओर की दीवारको पूर्व दिशा की ओर की दीवार से उंचा रखना चाहिए। इससे मकान की शुभता में वृद्धि होती है।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, पश्चिम दिशा में स्थित खाली स्थान कभी भी पूर्व दिशा की तुलना में नीचा नहीं होना चाहिए। यह मकान की अशुभता में वृद्धि करता है। यदि मकान के पश्चिम दिशा में स्थित दरवाजा वायव्य की ओर हो तो इससे पारिवारिक जनों को कोर्ट–कचहरी एवं मुकदमें में बेवजह फंसना पड़ता है एवं अर्थिक दृष्टि से हानि भी सहन करनी पड़ती है। मकानमें उपयोग किए गए जल का निकास पश्चिम दिशा से नहीं करना चाहिए। इस दिशा सेजल का निकास करने पर मकान में निवास करने वालों को गंभीर रोग से पीड़ित रहने की संभावना अधिक होती है। यदि मकान के पश्चिम दिशा में पूर्व दिशा की तुलना में खुला भाग अधिक हो तो यह अधिक अशुभ होता है। इससे वंश का नाश होता है। यदि मकान के पश्चिम में स्थित दरवाजा नैऋत्य दिशा की ओर हो तो इससे पारिवारिक जनों को गंभीर रोग,अकाल मृत्यु एवं धन हानि जैसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है।

नैऋत्य दिशा

नैऋत्य दिशा दक्षिण एवं पश्चिम दिशाओं का मिला हुआ भाग है। आवास हेतु निर्मित मकान के नैऋत्य कोण में शौचालय अथवा अनुपयोगी एवं भारी वस्तुओं के रखने हेतु व्यवस्था करना अधिक अनुकूल होता है। वास्तुविदों के अनुसार, इस दिशा की भूमि अथवा मकान का निर्मित भाग उंचा होना चाहिए, इससे शत्रुओं से रक्षा होती है। इस दिशा में शस्त्र रखना एवं नीले याकाले पर्दे या शीशे लगाना लाभदायक होगा।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, नैऋत्य कोण के भूमि का स्तर अथवा निर्मित भाग का स्तर भी उंचा रखना चाहिए। इस स्थान में बड़े–बड़े पेड़ लगाने चाहिए। इससे धन, भाग्य, सुख एवं संपदा मेंवृद्धि होती है। वास्तु शास्त्र के अनुसार, नैऋत्य कोण में सीढ़ियों का निर्माण करवाना भी मकान की शुभता में वृद्धि करता है। आवास हेतु निर्मित मकान के नैऋत्य कोण में शयन कक्ष होना चाहिए, इससे मकान में रहने वालों को शुभ फल प्राप्त होता है। भूखण्ड के नैऋत्य कोण में यदि कोई मिट्टी का टीला पहले से मौजूद हो तो उसे वहां से हटाने का प्रयास नहींकरना चाहिए। इस स्थान पर स्वनिर्मित टीले मकान वासियों के लिए शुभ फल प्रदान करनेवाले होते हैं।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, नैऋत्य कोण में वृद्धि अशुभ होती है। इसके बढ़ने से शत्रुओं की वृद्धि होती है एवं शत्रु हावी होते हैं। पारिवारिक जनों को कोर्ट–कचहरी आदि के कारण ऋण भी लेना पड़ता है। नैऋत्य कोण में पानी का भूमिगत टैंक कदापि नहीं होना चाहिए। यह बहुत अशुभ होता है। इससे दुःखद परिस्थितियों एवं बर्बादी का सामना करना पड़ता है। नैऋत्य कोण की वृद्धि पश्चिम या दक्षिण किसी भी दिशा में करना अशुभ होता है। दक्षिण की ओर नैऋत्य कोण की वृद्धि होने पर परिवार की स्त्रियों को परेशानी होती है एवं पश्चिम दिशा की ओर वृद्धि होने पर पुरुषों को परेशानियों का सामना करना पड़ता है। नैऋत्य कोण में मकान अथवा उसकी चारदीवारी का द्वार होना अशुभ माना जाता है। इससे मकान में रहने वालों को

भंयकर बीमारियों का शिकार होना पड़ता है एवं मृत्युतुल्य कष्ट की संभावना भी प्रबल हो जाती है। इसके अतिरिक्त, अकारण अपयश, जेल, कचहरी, मुकदमा एवं दुर्घटना आदि के कारण भी परेशानियां होती हैं। नैऋत्य कोण में कुआं भी नहीं होना चाहिए। इससे मकान में रोगियों की संख्या में वृद्धि होती है एवं रोग आसानी से ठीक नहीं होते हैं। पारिवारिक जनों को मानसिक रूप से भी परेशान होने से हत्या एवं आत्महत्या की संभावना भी अधिक बढ़ जाती है। मकान के नैऋत्य दिशा में बने कमरे में इस ओर कोई खिड़की नहीं बनानी चाहिए। इससे मकान की अशुभता में वृद्धि होती है।

आग्नेय दिशा

आग्नेय दिशा का मालिक अग्नि देव को माना गया है। चूँकि यह दो दिशाओं पूर्व एवं दक्षिण दिशा का मिलन है, इसलिए यहां यम और इन्द्र का भी प्रभाव होता है और दो दिशाओं के मिलने से यहां उर्जा एवं शक्ति का प्रभाव ज्यादा होता है। पंच शिलान्यास के समय प्रथम दिशा की स्थापना इसी दिशा में की जाती है। इस दिशा में चूल्हा या अन्य आग्नेय यंत्र रखना ठीक रहता है। इस दिशा में लाल रंग का पर्दा लगाना ठीक रहता है। इस दिशा में किसी प्रकार का जल स्रोत या कुआं आदि नहीं बनाना चाहिए।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, अग्निकोण में शौचालय का निर्माण करवाना शुभ फलदायक होता है, परन्तु इस कोण में सैप्टिक टैंक का निर्माण नहीं करवाना चाहिए। सैप्टिक टैंक का निर्माण वायव्य कोण में करवाना उचित होगा। मकान में उपयोग किए हुए जल की निकासी का प्रबंध अग्निकोण से नहीं होना चाहिए, इससे सुख–शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होती है। पूर्व दिशा की ओर रखे गए खाली स्थान का अनुकूल प्रभाव अग्निकोण के शुभ प्रभावों में वृद्धि करता है। अग्निकोण में पाकशाला अर्थात रसोईघर का निर्माण करना सर्वोत्तम होता है। मकान के अग्निकोण वाले भाग को नीचा रखना उसमें निवास करने वालों के लिए शुभ फलदायक होताहै।

वास्तु शास्त्र के अनुसार, मकान का अग्निकोण का भाग उंचा होने पर एवं नैऋत्य एवं वायव्य का भाग नीचा होने पर वंश का नाश होता है और अपयश का भागी बनना पड़ता है। यदि मकान का मुख्य द्वार दक्षिण या नैऋत्य कोण में स्थित हो तो अग्निकोण की अशुभता में वृद्धिहोगी तथा मकान के उत्तर–पूर्व दिशा की ओर यदि कोई खाली स्थान न हो तो भी अग्निकोण मकान मालिक एवं उसके निवासियों के लिए अशुभ फल प्रदान करने वाला साबित होगा। इससे घर में आगजनी, चोरी, मुकदमें, झगड़े आदि में वृद्धि होगी। अग्नि कोण में जल का स्रोत एवं किसी प्रकार का गड्ढा आदि कदापि नहीं होना चाहिए। इससे अग्नि से दुर्घटना आदि का भय होता है। यदि अग्निकोण और दक्षिण दिशा का भाग नीचा हो एवं ईशान कोणऔर उत्तर दिशा की ओर का भाग उंचा हो तो मकान मालिक को सदैव आर्थिक तंगी कासामना करना पड़ेगा अर्थात दरिद्रतापूर्ण जीवन व्यतीत करना पड़ेगा।

वायव्य दिशा

वायव्य दिशा पश्चिम एवं उत्तर दिशाओं का मिलन स्थान है। इस दिशा के मालिक वायु को माना गया है। वायव्य कोण शुभ होने से मित्रों की संख्या अधिक होगी। वास्तुशास्त्र के अनुसार, वायव्य कोण में अन्न के भंडारण हेतु व्यवस्था करना अधिक शुभ होता है। इसके अतिरिक्त, इस दिशा में शौचालय या पशुओं के रखने हेतु व्यवस्था भी की जा सकती है। वायव्य कोण में भूमि का स्तर ऊँचा रखना चाहिए। वायव्य कोण में शीशे एवं पर्दे हरे रंग का लगाना लाभदायक होता है।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, वायव्य कोण को ईशान से उंचा रखना चाहिए एवं आग्नेय एवं नैऋत्यसे नीचा रखना चाहिए। यह पारिवारिक जनों के लिए शुभ फल प्रदान करने वाला होताहै। वास्तुशास्त्र के अनुसार, यदि भूखण्ड से वायव्य कोण प्राकृतिक रूप से कटा हुआ या लुप्त हो तो यह शुभ होता है। मकान के वायव्य कोण में कुआं अथवा कोई गड्ढा न होना मकान की शुभता में वृद्धि करता है। यदि मकान का मुख्य द्वार पश्चिमी वायव्य की ओर हो

तो यह अनुकूल फल प्रदान करता है।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, भूखण्ड अथवा मकान के वायव्य कोण में बड़े–बड़े गड्ढे हो एवं वायव्यकोण ईशान कोण की तुलना में नीचा हो, तो ऐसे मकान में निवास करने वालों को रोगएवं कोर्ट–कचहरी आदि से जूझना पड़ता है। यदि मकान के वायव्य कोण में किसी प्रकार का कोई भी दोष होगा, तो इस बात की प्रबल संभावना रहेगी कि उस मकान की नीलामी तककी नौबत आ जाए। वायव्य कोण में रसोईघर का निर्माण नहीं करना चाहिए। इस स्थान पर पाकशाला होने पर मकान में अतिथियों का आगमन अधिक होता है, जिसके फलस्वरूप घरेलू खर्च में वृद्धि होती है। मकान का वायव्य कोण बढ़ा हुआ होने पर पारिवारिक जनों में सेकिसी को भी मानसिक रूप से रोगग्रस्त रहने की प्रबल संभावना होती है।

ईशान दिशा

ईशान दिशा का मालिक शिव को माना गया है। पूर्व की ही तरह ईशान कोण की भूमि का स्तर अथवा मकान का हिस्सा भी नीचा होना चाहिए। इस दिशा में पूजा घर बनाना चाहिए अथवा कुआं, जल स्रोत अथवा बाग–बगीचा लगाना भी शुभ होता है, इससे धन एवं संतान में वृद्धि होती है। ईशान कोण में ज्यादा भार नहीं होना चाहिए। ईशान कोण में शीशे या पर्दे सफेद या काले रंग का लगाना लाभदायक होगा।

वास्तुशास्त्र के अनुसार, ईशान कोण का बढ़ा हुआ होना शुभ फलदायक होता है। यदि ईशान कोण पूर्व की ओर बढ़ा हुआ होगा तो मकान मालिक एवं उसमें निवास करने वाले सभी लोग सज्जन, व्यवहारिक एवं धार्मिक होंगे तथा आर्थिक रूप से भी समृद्ध जीवन व्यतीत करेंगे।यदि ईशान कोण नीचा हो अथवा इस दिशा में गड्ढे आदि हों तो भी यह शुभ फलदायक होता है।ऐसे मकान में निवास करने पर सभी प्रकार की सुख–सुविधायें एवं ऐश्वर्य से परिपूर्ण जीवन

प्राप्त होता है। मकान में उपयोग किए जल अथवा वर्षा आदि किसी भी प्रकार के जल की निकासी ईशान कोण से करना अधिक शुभ होता है। ऐसे मकान में निवास करने पर व्यक्ति को संतान की कभी कमी नहीं होगी एवं वह सुखी एवं समृद्ध जीवन व्यतीत करेगा। ईशान कोण में कुआं, ट्यूबवेल, हैंडपंप या अन्य पानी के स्रोत होने पर भी मकान की शुभता में वृद्धि होती है। मकान में निवास करने वाले व्यक्तियों को धन–संपदा की भरपूर प्राप्ति होती है।

ईशान कोण की उत्तरी दिशा में यदि उसकी लम्बाई पूर्व से कुछ कम हो एवं उत्तर दिशा में कोई उंची इमारत हो तो ऐसे मकान में निवास करने वाली स्त्रियों को बीमारी आदि से पीड़ित रहना पड़ता है एवं मृत्युतुल्य कष्ट प्राप्त होने की भी प्रबल संभावना रहती है। इसके अतिरिक्तआर्थिक तंगी भी झेलनी पड़ती है। ईशान कोण में बनी चारदीवारी उत्तर–पूर्व से कदापि उंचा नहीं होना चाहिए। यह मकान मालिक एवं पारिवारिक सदस्यों के लिए अशुभ फल प्रदान करता है। मकान के ईशान कोण में किसी प्रकार का कूड़ा–कचड़ा आदि नहीं डालना चाहिए। इस स्थान में गंदगी फैलाने पर मकान में रहने वालों का चरित्र संदिग्ध बना रहता है। ईशान दिशा में रसोईघर भी नहीं होना चाहिए, क्योंकि इससे घर में कलह होती है।वास्तुशास्त्र के अनुसार, यदि ईशान कोण किसी इमारत या टीले आदि के कारण बंद हो और नैऋत्य कोण में गड्ढे बने हुए हों तो यह बहुत अशुभ होता है। ऐसा भूखण्ड अथवा मकान सुख–समृद्धि, धन, यश आदि को बर्बाद करने वाला होता है।

नाम : **Sample**

मुख्य द्वार की दिशा : पूर्व बेडरूम : 3 प्लाट साइज : **20' X 50'**

20'

50'

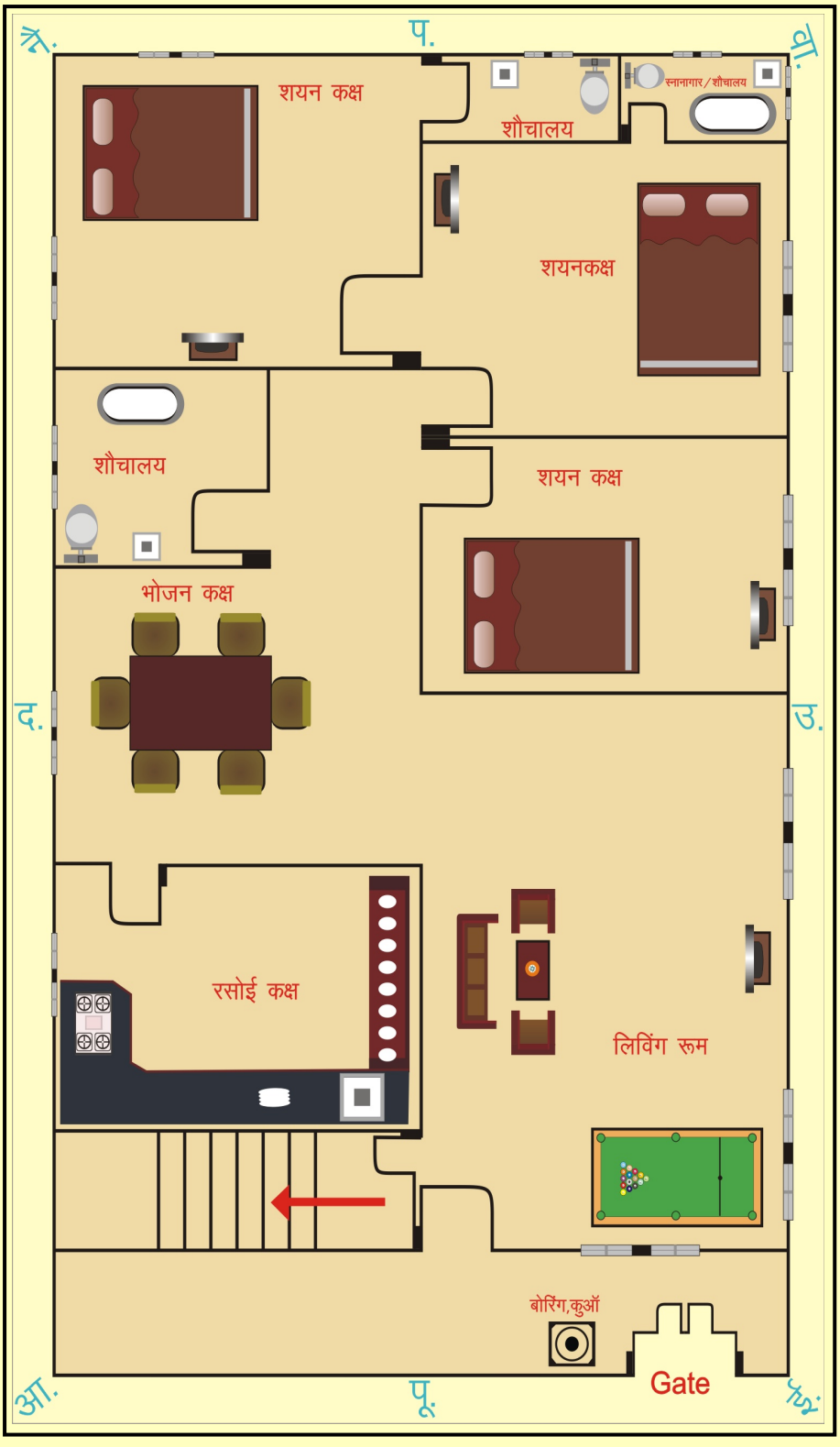

© Lal-Kitab Vastu 3.5

उपर दिया गया मकान का वास्तुनुसार रूपरेखा (नक्शा) केवल सांकेतिक है। इसमें मकान के कक्षों को वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तो के अनुरूप दिशा में रखा गया है। कमरों की लम्बाई–चौड़ाई को भवनस्वामी अपने जरूरत के अनुसार रख सकते हैं।

नाम : **Sample**

मुख्य द्वार की दिशा : दक्षिण बेडरूम : 3 प्लाट साइज : **28' X 48'**

28'

48'

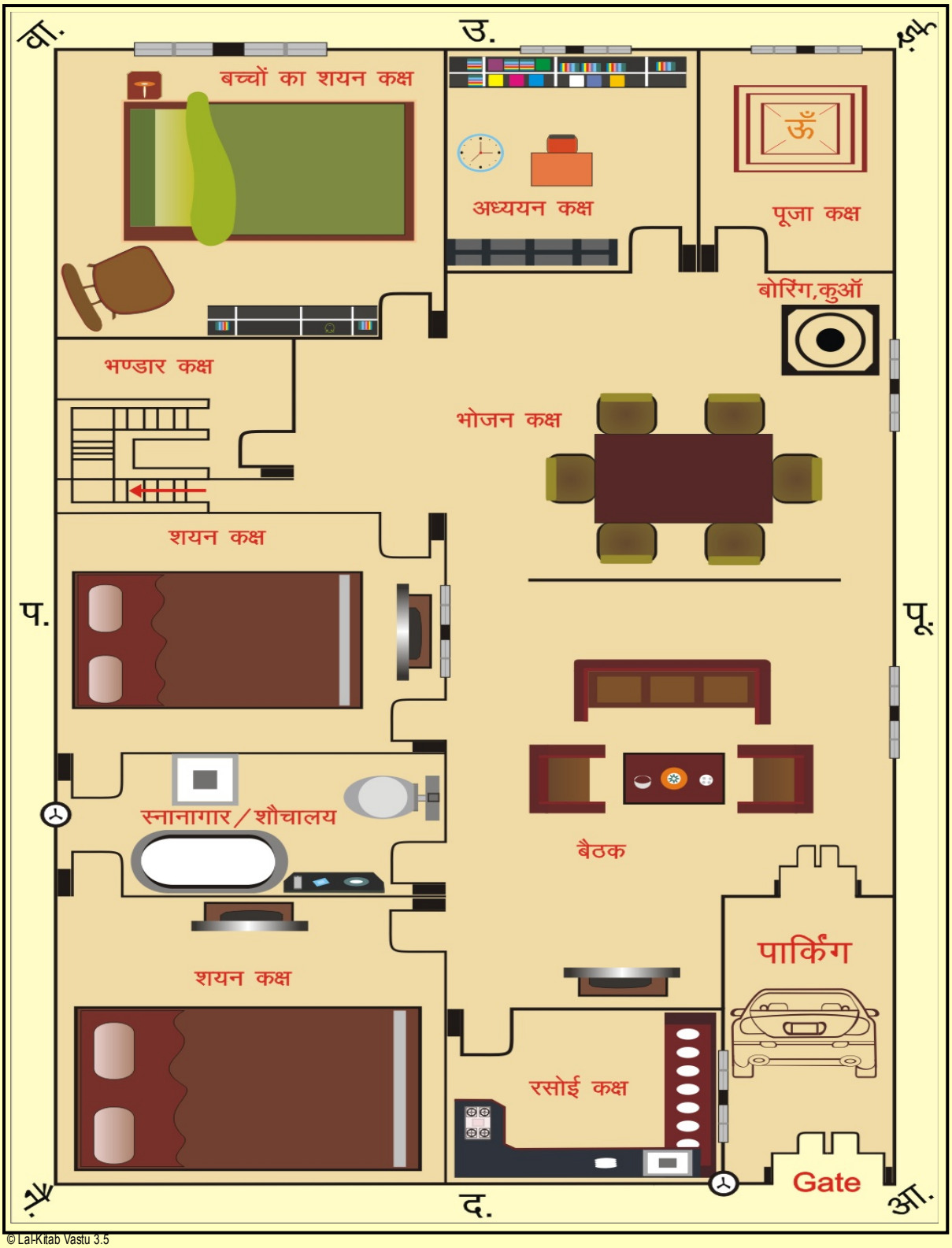

© Lal-Kitab Vastu 3.5

उपर दिया गया मकान का वास्तुनुसार रूपरेखा (नक्शा) केवल सांकेतिक है। इसमें मकान के कक्षों को वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तो के अनुरूप दिशा में रखा गया है। कमरों की लम्बाई–चौड़ाई को भवनस्वामी अपने जरूरत के अनुसार रख सकते हैं।

नाम : **Sample**

मुख्य द्वार की दिशा : पश्चिम बेडरूम : 4 प्लाट साइज : **38' X 61'**

38'

61'

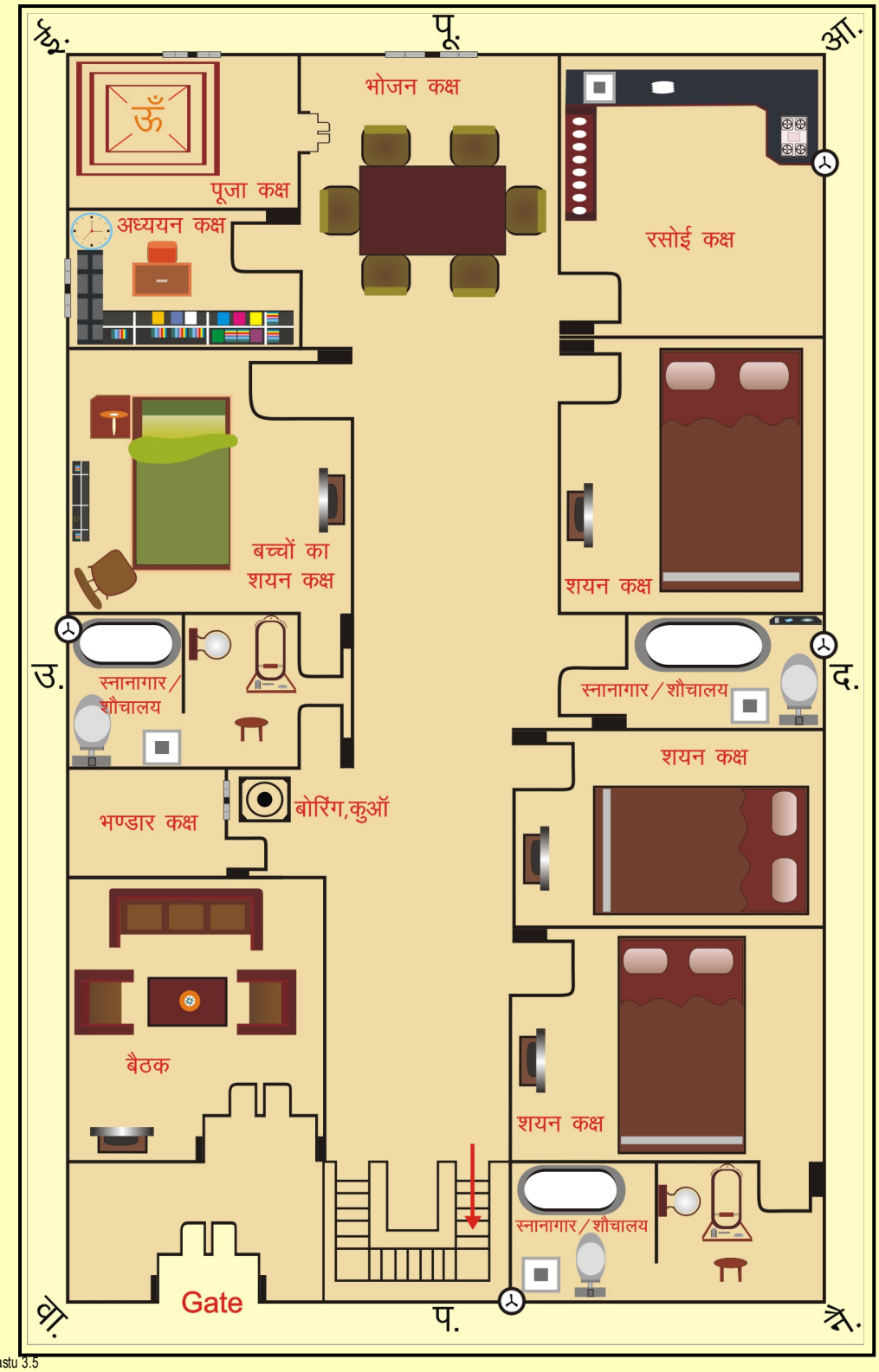

© Lal-Kitab Vastu 3.5

उपर दिया गया मकान का वास्तुनुसार रूपरेखा (नक्शा) केवल सांकेतिक है। इसमें मकान के कक्षों को वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तो के अनुरूप दिशा में रखा गया है। कमरों की लम्बाई–चौड़ाई को भवनस्वामी अपने जरूरत के अनुसार रख सकते हैं।